

जनरल टाकीज लि० चाँदनी चौक दिल्ली की चित्र-सूची

राजकमल कलामविर कृत

१-शकुन्तला-पात्र-जयश्री, चन्द्रमोहन, दि० शान्ताराम ।

२-माली-पात्र-अमीरकर्नाटकी और मास्टर कृष्णराव ।

फिल्मिस्तान लि० कृत

१-चल चलरे नवजवान-पात्र-अशोककुमार, नसीम ।

२-आठदिन-पात्र-अशोककुमार और बीरा ।

३-शहनाई-पात्र-इन्दुमती, रेहाना, नसीरखान ।

४-सिन्दूर-पात्र-किशोरसाहू, शमीम, पारो ।

५-लोकमान्य तिलक ।

६-चित्र न० आठ

७-चित्र न० नौ

शालीमार पिक्चर्स कृत

१-गुलामी-पात्र-रेणुकादेवी, मसूद परवेज, तिवारी ।

२-पृथ्वीराज-समुक्ता-पात्र-पृथ्वीराज, नीना, निबारी ।

३-मीराबाई-पात्र-नीना, मसूदपरवेज ।

४-श्रीकृष्ण भगवान-पात्र-नीना, भारतभूषण ।

मेहबूब प्राडक्शस-कृत

१-ऐसान

२-चित्र न० छ

शबनानी प्राडक्शस कृत

१-रगभूमि-पात्र-निगारसुल्ताना, जगदीश सेठी, नवीनयासिक ।

नेशनल स्टूडियोज कृत

१-सराय के बाहर-पात्र-साविता देवी, महेन्द्रनाथ ।

जनरल टाकीज लि० चाँदनी चौक दिल्ली

[सर्वाधिकार लेखक के आधीन हैं]

धरती के देवता

[मौलिक-उपन्यास]

लेखक

सम्पतलाल पुरोहित

प्रकाशक

साहित्य-मण्डल

दीवान-लाल

देहली

प्रथम बार

जनवरी
१९४७

मूल्य दो रुपये

मिलने का पता
सम्पतलाल पुरोहित

१०६२, सतधरा
धर्मपुरा, देहली

प्रकाशन पथ पर—

१ उनकी तस्वीर

[एक और समस्यापूर्ण मौलिक-उपन्यास]

लेखक—सम्पतलाल पुरोहित

२ रेलगाड़ी में

[कहानी-संग्रह]

लेखक—सम्पतलाल पुरोहित

प्रत्येक का मूल्य दो रुपये प्रति।

डाक-व्यय पृथक्।

—प्रकाशक

मुद्रक
रूपवाणी प्रिंटिंग हाउस,
२३, दरियागज
देहली

यह है--

उत्कृष्ट मनोरजन का सर्वप्रिय चित्र।

(जनता का प्याग ड्रमाक)

स्मरण रहे।

विष्णु बारह वर्ष की पुरानी भारत की बेजोड चित्र-निर्मात्री सस्था है।

देश के नवयुवकों के लिए प्रेरणात्मक चित्रों का निर्माण ही इसका ध्येय है।



विष्णु-चित्रों ने जनता के दिल में जड़ जमा ली है !

विष्णु चित्रों को जनता का सम्पूर्ण सहयोग प्राप्त है।

इसलिए कि वे—

- ★ मनोरंजक ★ भावपूर्ण ★ शिक्षाप्रद ★ विवधता
- ★ स्वदेशाभिमान से परिपूर्ण ★ भव्य
- ★ वीभत्सता रहित ★ और पारिवारिक होते हैं।

१६७७ में विष्णु मिनेटोन

अपने कदरदान दर्शकों व प्रदर्शकों के लिए सगर्व प्रस्तुत करते हैं—

१ भक्त प्रह्लाद राष्ट्रीय रंग से रंग हुआ महान धार्मिक चित्र।

२ शाहे मिश्र एक अनूठा वेशभूषा प्रधान चित्र।

३ सात समुन्दरों की मलिका आश्चर्यजनक जादुई चित्र।

४ जादुई रतन उत्तम रंग सजीन से ओत-प्रोत चित्र।

५ कंगन वाली चूड़ियों का चमक दिखाने वाला रोमांचकारी चित्र।

६ चन्दन-हार एक महान आश्चर्यकारी भेदी चित्र।



—जिनकी प्रेरणा से जीवन में उत्साह मिलता है
 —जिनके सहवास से जीवन में प्रेरणा जागती है .
 —जिनके अलगाव में मोक्ष भी फीका मालूम पड़ता है
 ऐसे मेरे अभिन्न-मित्र श्रीयुत श्री चन्द्रशंकर त्रिवेदी को
 'धरती के देवता' सादर समर्पित करता हूँ—

—सम्मतबाल पुरोहित



लेखक

भारतवर्ष की सबसे बड़ी फिल्म-कम्पनी

प्रिन्सेस पिक्चर्स कारपोरेशन लि०

[एक करोड़ की पूँजी से स्थापित]

चेयरमैन

श्री० चन्द्र शरद टी. त्रिवेदी

मैनेजिंग डायरेक्टर

श्री० मोहनलाल व्यास चार-एट-ला.

— सरक्षक गण —

- १—हिज हाईनेस सर लक्ष्मण सिंह जी बहादुर
के० सी० एस० आर्टि०—डूँगरपुर ।
- २—हिज हाईनेस सर रामसिंह जी बहादुर
के० सी० एस० आर्टि०—प्रतापगढ़ ।
- ३—हिज हाईनेस महाराजा राणा श्री हरिश्चन्द्र जी बहादुर
—भालावाड ।
- ४—हिज हाईनेस महाराजा
राजा साहेब श्री मयूरध्वज सिंह जी—प्रागजा ।
- ५—हिज हाईनेस दि महाराजा साहेब बहादुर, बोंसवाडा
कार्यक्रम दिल्ली में स्टूडियो का निर्माण, चित्र-निर्माण, वितरण
तथा प्रदर्शन-आदि । जेम्बर सरीदने का स्वर्ण अवसर
प्रिन्सेस पिक्चर्स कारपोरेशन लि०,
पो० आ० वाक्स न० २१०, दिल्ली ।

“बेटी । बेटी सरयू घर में हो ।”

‘कौन कृष्णा माँ ? आओ माँ । रसोई बना रही हूँ । पैरों पड़ती हूँ ।’

“जीती रहो । तुम्हारा सोहाग अमर हो । दूधों नहाओ और पूतों फलो बेटी ।”

“गमू तो अच्छा है न । दो दिन से दिखाई नहीं देता । क्या बात है माँ ?”

“बात क्या बताऊँ बेटी । किताब क्या पढ़ने लग गया है । एक अजीब बात हो गई । परसों ही तो नई किताब लाया है । अब तक कितनी ही चार पढ़ डाली । रात को दिया लेकर बैठ जाता है और घण्टों हाँ घोटता रहता है । कहता है, सब जगानी याद कर लिया, अब दूसरी किताब लूँगा और आज ही लूँगा । पैसे दो । सो तुम्हें दु रा देने आई हूँ ।”

“ऐसी बात मुँह से न कहो माँ । लड़का तो हीरा है, हीरा । बड़ा ही सलौना, वैसा ही होशियार । माँ की भी 'नजर' लग जाती है जैसे बच्चे को । भगवान करे, सब लिखे-पढ़े । हमारे इस मनोहर को देखो न । दिन भर गुल्ली-डण्डे खेलता रहेगा । पढ़ने को कहा कि बस खैर नहीं । सब को डण्डों से पीटना शुरू कर देगा । घर भर डरता है माँ ।”

“बच्चे हैं बेटी। इन्हें अभी कोई समझ थोड़े ही है। याद रखो, पढाई की इस जिद में कहीं तुम लोग बच्चे पर हाथ न उठा बैठना। इतने बड़े घर और खेती-चाड़ी का काम आगे चलकर सब इसे ही तो सम्हालना है।”

“इसीलिए तो कोई कुछ नहीं कहता माँ। लाखों मानमित्रों के बाद तो बेटे का मुँह देखना मिला है। लेकिन दो अक्षर पढ़ जायेगा तो किसी का मुँह तो नहीं ताकेगा। आज पढ़े-लिखों की ही तो कदर होती है। देखो न धनराज सेठ के पास चिट्ठी-पत्री पढ़वाने के लिये सारा गाँव-का-गाँव दौड़ता है। फिर गाँव की पटेली भी तो इसे ही करनी है।”

“सो तो है ही बेटी, इस बात में रामू को कुछ भी नहीं कहना पड़ता। सुबह-ही-सुबह पोथियाँ बगल में दबाकर बिना कहे झट मंदरसे के लिये चल पड़ता है। बेचारा रोज एक कोस जमीन जाता और आता है। बड़ा लगाव है इसका पढ़ने से। क्यों बेटी। नन्दू भाई से कह कर गाँव के बच्चों के लिए अब तो कोई मास्टर ही न बुलाओ।”

‘जब भी कभी वे शहर जाते हैं—मास्टर के लिये कोशिश करते हैं। पर कोई तैयार ही नहीं होता माँ? कहता है—गाँव में धरा क्या है? वहाँ अच्छा नहीं लगता। इन पढ़े-लिखों के भेजे ही खराब होते हैं।’

“हाँ जी। यह बात तो है ही। पढ़े-लिखे लोग गाँव में ठहरते ही नहीं। उस जदुनाथ की ही बात देखो। घड़ के नीचे दस लड़के

पढ़ने लग गये थे । एक एक करके दस रुपया महीना मिलता था । और उपर से मिलता था हर रविवार को आटा-दाल । फिर भी दो महीने पढ़ा-पुढ़ कर जो गया सो अब तक नहीं आया । इन लोगों का क्या ठिकाना । इसीलिए तो मैंने रामू को सरकारी मदरसे में भर्ती करा दिया है । अब तो तीन किताब पढ़ गया है ।”

“रामू की क्या बात कहती हो माँ । वह तो बेचारा मनोहर को भी रोज साथ पढ़ने जाने को कहता है, जिद करता है । लेकिन हमारे मनोहरजी ने कभी किसी की सुनी है ? हाँ, बताओ, कितने पैसे दूँ ?”

“चार आने माँगता है । बुद्ध सीने और पीसने-पासने का काम भी दे गो, लेती जाऊँ ।”

“मैंने भी देर करदी, दिन चढ़ रहा है । बेचारे बच्चे को इतनी दूर मदरसा जाना है । कम्मा दूर भी तो कितना है । लो, ये पैसे । खाने को नहीं बनाया होगा । इतनी जल्दी १ दो पूरियाँ भी लेती जाओ । हाँ, घर से सब काम करके आना, यहीं सीना और बैठकर पीस भी लेना । वहाँ अकेली बैठकर—भीकोगी । बच्चा घर रहता था तो मन भी लग जाता था—अब तो अकेली दीवारों से सिर मारती होगी । यहीं आजाना तुम्हारा भी समय फटेगा । मैं भी बैठकर ढाल-ढुल ठीक करलूँगी ।”

“जुग जुग जियो बेटी । तुम्हारा बड़ा अहसान पढ़ १११ रुँ मुझ पर ।”

“ऐसी बात मुँह से कहोगी माँ, [तो हमारा तुम्हारा हाथ ही हो जायगा ।”

“मैं तुमसे क्यों भागूँगी बेटी।”

“तो मैं तुम पर अपना अहसान क्यों चढाऊँगी माँ। तुमसे काम लेती हूँ और दाम देती हूँ, इसमें अहसान की क्या बात। प्रादमी आदमी के काम आये, यही आदमीयत है।”

“तुम आदमीयत को जानती हो, इसीसे मुझे बहुत अच्छी लगती हो। और तुमसे न मालूम क्या-क्या बरबास भी करती होती हूँ। लेकिन मैं इसे अहसान ही मानूँगी। जीसी बहिन और पावा बहिन को काम न देकर मुझे काम देती हो यह अहसान नहीं तो और क्या है ? मेरे बेटे की जिन्दगी सुधर रही है— तुम्हारे कारण से। तुम लोग आग्य फेर लो मुझसे बेटी, तो मेरी बुढ़िया ही छूव जाय।”

“अहसान की बात करती हो माँ। तो तुम्हारे अहसान मुझ पर भी तो कम नहीं है। क्या मुझे याद नहीं है—जब मनोहर पड पर से गिर पडा था तो तीन दिन तक उसका सिर तुमने अपनी गोद से नीचे नहीं रखा। हम लोग खर्राटे भरते थे और तुम रात-रातभर जागती रहीं। मैं तो कहूँगी तुमने मेरी फेर से गोद भरी है। मैं उन बातों को भूली नहीं हूँ माँ। जब मनोहर हुआ था, तो तुमने मुझे-माँ से भी अधिक आराम दिया था। मेरी कितनी सेवा की थी। और सासू माँ के लिए तुम आज भी क्या नहीं करती ? उनके कपडे धोना, उन्हें नहलाना, प्या पर का आदमी उनकी सेवा करेगा। अहसान के मायने मे तो सही अहसान तुम्हारा है। काम देने की जरा सी बात को अहसान

कह कर मुझ पर क्यों बोझ-सा लाद रही हो माँ ?”

“ऐसी बात फिर मुँह से निकाली तो अब मैं तुमसे झगडा कर वैठूँगी।”

“इस वख्त हम तुम दोनों झगडने बैठ जायँगी तो न तो मैं रसोई बना सकूँगी और न तुम रामू को मदरसे ही भेज सकोगी।”

“लो, बातों-ही-बातों में यह तो मैं भूल ही गई। राम, राम, लडके को ढेर हो गई। मैं भी कैसी हूँ ?”

X

X

X

सरयू के यहाँ से कृष्णा ने अपने घर आकर देखा तो एक नई आकृति के दर्शन हुए। लम्बी-लम्बी डाढ़ी, सिर पर कनटोप, शरीर में बण्डी और घुटने घुटने तक धोती। डाढ़ी और मूछों में चेहरा पहचाना नहीं गया। कृष्णा दरवाजे पर जाकर रुक गई। और आगन्तुक से क्या प्रश्न करे, सोचने लगी। आगन्तुक ने उसकी की कठिनाइयों को समझ लिया। बोला—“मे बडा अभागा हूँ बहिन, तुम मुझे पहचान भी न सकीं।”

“मेरा भैया। मनसुग्गा।” कृष्णा की आँखों से हर्ष मिश्रित दुःख के आँसुओं की झड़ी लग गई। फिर रुँवे हुए कण्ठ से बोली—“आठ बरस योडे होते हैं भैया ? इसमें कितनी ही भूलें हो जाया करती है। जब तुम मुझे भूल सकते हो तो—इस दुखियारी को दुःख में क्या याद रह सकता है ? फिर तुम्हारा यह भेष भी तो अजीब है। कहाँ रहे इतने दिन ? तनमुखा का कुछ पता चला ?”

“उस मनमौजी का क्या पता लगता वहिन । कभी एक जगह टिकता नहीं । जमकर कुछ करता नहीं । जब से बहू मरी है । वह तो और भी आजाद हो गया है । दो बरस हो गए, बम्बई में मिला था । कुछ अच्छे आदमियों के साथ से पढ़-लिख भी गया है । कहता था कि एक पुस्तकालय में काम मिला है । शहर की हवा लग गई है । पता नहीं अब कहाँ है और क्या करता है ? मुझसे तो बड़ा रुखा-रुखा रहता है । तीन बरस के बाद मिला था । तीन मिनिट बात भी नहीं की और यह चला वह चला । मैं तो हैरान हूँ । सोचता हूँ, अब मिला तो उसका व्याह कर दें । तुम्हारे पास ही रहे—तुम्हें भी ज़रा आराम मिले ।”

“मुझे तो तुम लोग बड़ा आगम दे रहे हो । आठ आठ बरस में सूरत दिखाते हो । एक दिन रह कर चल पड़ते हो । तुम लोगों का क्या भरोसा । और क्या तुम से कोई आशा करे । फिर किसी न-किसी मतलब से ही आएँहोगे । यह मैं जानती हूँ कि वहिन की तुम्हें चिन्ता नहीं है । लेकिन तुम्हारे विषय में मुझे सन्तोष है, तुमने एक ऐसा रास्ता अरिक्तयार लिया है—जिस पर मैं क्या दुनिया सन्तोष प्रकट कर सकती है । बताओ अबकी किस मतलब से आए हो ?”

‘भूठ क्यों बोली । आया तो हूँ मतलब से ही । लेकिन इस बार बहुत दिनों तक तुम्हारे ही पास रहूँगा । सब ने मुझे यहीं रह कर काम करने का आदेश दिया है । लेकिन यह बात प्रकट नहीं करनी है । लोग यही समझें कि मेहनत-मजदूरी करके इस गाँव में मैं अपना पेट पालने आया हूँ ।’

“इसके लिए तुम निश्चिन्त रहो। कह दूँगी कि मेरा भाई बुढ़ापे में मेरी मदद करने आया है। लेकिन बताओ तो क्या करते रहे, रुहों रहे इतने दिन ?”

“एक जगह रहा होऊ तो बताऊँ ? और एक काम पर टिका रहने दिया गया होता तो बताऊँ ? क्या करूँ, कुछ सत्कार ही ऐसे पड़े हुए हैं कि वे छूटते ही नहीं। दो काम अच्छे हो जाते हैं तो एक जरूर बिगाड़ जाता है। जितनी सेवा नहीं कर पाता उतना बिगाड़ कर देना है। आसाम भेजा गया था—किसानों में रह कर उनकी आन्तरिक स्थिति जानने के लिए और मार बैठा—वहाँ के चाय के धगीचे के एक आम्नीसर को, क्या करूँ ? मुझ से अन्याय देखा नहीं जाता। बस खून रील उठता है। आसाम से बुला लिया गया। अब सब ने यहाँ भेज दिया। मैंने कहा, चलो कुछ दिन रह कर तुम्हारी ही सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त हो जाय।”

“मेरी सेवा तो करली तुमने।” इतना कह कर कृष्णा ने एक गहरी निश्वास रींची।

‘क्या मतलब ?’ मनसुखा ने पूछा।

“मतलब साफ़ है—यहाँ के ठाकुर के अत्याचारों को तुम कितने दिन सह सकोगे ?”

“निश्चित रहो बहिन, साल-छ महीने तो मैं सब चुपचाप देखता ही रहूँगा।

“मेरा सौभाग्य कि साल भर तक तुम मेरे पास रहो। और

राम पर तुम्हारी दया पड़े। अच्छा, मैं तुम्हारे लिए भोजन तैयार करती हूँ। घर में आकर बैठो। वहीं और बातें भी होंगी।”

x

x

राम प्रसाद ने ब्राह्मण कुल में जन्म अवश्य लिया था। किन्तु उसके दादा और पिता की तरह गाँव-गाँव घूम कर भिक्षा वृत्ति करना उसे कतई पसन्द नहीं था। इस बात को लेकर घर में कई बार तरह-तरह के झगड़े होते थे। उसके दादा और पिता इस बात पर बड़ा जोर देते थे कि वह ब्राह्मण का वन्चा है और उसे वही काम करने चाहिए जो ब्राह्मण करते हैं। उसके दादा और पिता तक भिक्षा वृत्ति करके पेट पालते हैं तो उसे इसमें क्यों एतराज होना चाहिए। राम प्रसाद को इनमें से एक भी बात अच्छी नहीं लगती थी। वह कहता कि—यह क्यों जरूरी है कि दादा और पिता अब तक जो गलती करते आए उसे वह भी दुहराए। माँग-भूँग कर गाना और दूसरों की दया पर जीना पाप है। खास कर ऐसे समय में जबकि लोगों में कतई श्रद्धा नहीं रह गई है—और जबकि यह कृत्य हेय समझा जाता है। इस पर जब घर वाले और भी इधर उधर की बात समझा कर उसे भिक्षा वृत्ति की ओर ले जाने का प्रयत्न करते तो वह साफ कह देता—“मैं अपनी बात पर अटल रहूँगा। मैं भीरा नहीं माँगूँगा। काम करके खुद गमाऊँगा और परिवार को भी खिलाऊँगा। बल्कि आप लोगों को भिक्षा माँगने से रोकूँगा। और एक दिन रोक कर ही रहूँगा।”

जब घर वालों ने देखा कि राम प्रसाद किसी भी तरह नहीं मानता तो उन्होंने पूछा कि आखिर वह क्या करना चाहता है। उसने कहा कि गाँव में पैदा हुआ है और गाँव में ही उसे रहना है। पढा लिखा है नहीं इसलिये लाट साहबी कर नहीं सकता। वह तो अपना जीवन रेतती पर बिताना चाहता है। इस पर घर वालों ने उसे रेतती करने के लिए कुछ जमीन ड़धर उधर से ले कर दे दी। राम प्रसाद ने रेतती में बड़ा ही मन लगाया। खूब उपज हुई। उसका परिवार बड़ा ही प्रसन्न हुआ। आखिर उसने अपने दादा और पिता की भिन्ना वृत्ति एक दिन जुड़ा ही ली। उसका न्याह भी हो गया। कृष्णा, टुलहन के रूप में उसके घर में आई। उसके आते ही घर बन-बान्य से परिपूर्ण हो गया। राम प्रसाद पूरा किसान बन गया। उसके यहाँ दो लड़के और दो लड़कियों ने भी जन्म ले लिया। समस्त परिवार में इस छोर से उस छोर तक आनन्द और प्रसन्नता की लहरें उठने लगीं।

और कुछ समय के बाद इस परिवार पर एक बड़ी प्रकोप हुआ। राम प्रसाद के दादा तो अत्यधिक बूढ़े हो ही गए थे। उनके मरने से परिवार को इतना धम्का नहीं पहुँचा जितना कि कुछ ही दिनों बाद उसकी पिता की मृत्यु से। पिता उसके दुनिया देगे हुए थे। इसलिए घर का शासन बड़े ही सुचारु रूप से हो रहा था। राम प्रसाद को कभी घरेलू मामले में बोलने की आवश्यकता पड़ी ही नहीं। यही कारण था कि वह पारिवारिक व्यवहार से अनभिज्ञ रहा। माता उसकी सदा ही बीमार रहती

थी, अतः पति के चल बसने के तुरन्त पश्चात् उसने भी आँखें बन्द कर लीं। उसकी चार बहिनें व्याहने योग्य हो चुकी थीं। सबका व्याह आज कल में ही करना था। दो का व्याह तो उसने अच्छी तरह से कर दिया। तीसरी के व्याह में उसे कठिनाइयाँ हुई और चौथी का व्याह उसे धनराज सेठ से कर्ज लेकर करना पड़ा।

दर साल धनराज का कर्ज चुकाए जाने पर भी वही खाते का हिसाब बढ़ता ही गया—और इस प्रकार बढ़ता गया जिस प्रकार राम प्रसाद की उम्र। अब उसकी हालत इतनी खराब हो चुकी थी कि उसे अपने बच्चों के उपचार के लिए दवाई और दूध भी मुश्किल हो गया। शीतला माता में उसके सब बच्चे चटाचट मर गए। और साथ ही मर गया उसके मन का उत्साह। कृष्णा ने उसे बहुत धीरज बँधाया, परन्तु सब व्यर्थ हुआ। इस दम्पति पर इतने सकट आ पड़े कि उन्हें सम्हालना कठिन हो गया। इसी प्रकार की तंगी में वर्ष पर-वर्ष बीतने लगे। दोनों की अवस्था ढल गई। उन दोनों को जो कोई भी देखता, उसकी आँखों में आँसू आ जाते। कहाँ वे दिन और कहाँ ये दिन। भगवान् ऐसे दिन किसी को भी न दिखाए। किन्तु भगवान् को अभी इससे भी बुरे दिन दिखाने थे। कृष्णा को आधी से अधिक उम्र बीत जाने पर घच्चा होने को हुआ। दम्पति के मुँह पर मुस्कुराहट नाचने लगी। किन्तु यह मुस्कुराहट निपूते धनराज से नहीं देखी गई। उसने सब कुछ कुर्क करवा लिया। उन्हें खेतों में मजदूरी करने

की स्थिति में ला पटका। राम प्रसाद से यह धक्का सहा नहीं गया। और अपनी भावी सन्तान का त्रिना मुख देखे ही वह इस दुनिया से चल बसा। उसकी मृत्यु से कृष्णा के जीवन में एक भारी भूचाल आ गया।

x

x

x

गाँव के पटेल नन्दलाल को बच्चों को पढ़ाने का बड़ा शौक था। बार-बार प्रयत्न करके शहर से मास्टर ला कर रखता। किन्तु जो आता, दो दो चार-चार महीने रह कर चलता बनता। कोई भी अधिक समय तक टिका न रह सका। इस प्रकार इस रामपुर ग्राम के लड़कों की पढ़ाई कभी चालू होती और कभी बन्द। रामू भी इन्हीं लड़कों में पढ़ता था। पढ़ाई के समय वह जो कुछ पढ़ पाता—उसे और लड़कों की तरह भूलता नहीं था। बल्कि उसे और भी अच्छी तरह याद कर लेता था। जेदुनाथ मास्टर जब चला गया और उसके बाद कोई भी मास्टर नहीं आया तो कृष्णा को बड़ी चिन्ता हुई। आखिर एक दिन रामू को लेकर वह कत्वा पहुँची और उसे सरकारी स्कूल में भरती करवा आई। रामपुर से कत्वा दो मील दूर था। रामू अब रोज यहाँ पढ़ने आने-जाने लगा। दस वर्ष की उम्र में रामू ने तीन किताबें पढ़ ली थीं। अपने घेरे की कुशाग्र बुद्धि पर कृष्णा को बड़ा गर्व था। उसे यकीन हो गया था कि रामू पढ़ लिख कर एक दिन बहुत बड़ा आदमी बनेगा। इसी आशा में वह रामू की पढ़ाई के सम्पूर्ण साधन जुटाने में बड़े-से-बड़ा कष्ट भी हँसते-हँसते सहती थी। लोगों

के कपड़े सीने और चमकी पीसने से उसे जो कुछ प्राप्त होता— वह सब रामू की पट्टाई में लगा देती थी।

नन्दू पटेल की पत्नी सरयू को कृष्णा से बड़ा लगाव था। वह अघेड स्त्री थी—और कृष्णा वृद्धा। फिर भी दोनों में स्ख पटती थी। दोनों को अक्षर-ज्ञान था। प्रायः रामायण पर बातें करतीं-करतीं घरेलू झगडों में रुस कर फिर दुनिया के कष्टों का हिसाब लगाने लग जातीं। यहो था उनका दैनिक कार्य-क्रम। कृष्णा को सरयू से सीने और पीसने का काम रोज मिला करता था। इसलिए वह उसके घर से बहुत खुश थी। उसमें अपना ममत्व दिखाती थी। जरा-सा काम पडने पर तुरन्त दौड़ पडती। देर होने पर स्नय सरयू उसके यहाँ पहुँच जाती। नन्दू गाँव का पटेल था—और कृष्णा पर उसकी विशेष कृपा थी। गरज कि कृष्णा को नन्दू का घर भर चाहता था। इसी लिए कृष्णा ने दुःख-सुख के लिए इस घर को अपना समझ लिया था।

२.

रामधन पटवारी को अगले साल पेंशन मिलने वाली थी। कुल साढ़े तेरह रुपया महीना पाते थे। लेकिन यह आमदनी उनके लिए इतनी काफी थी कि एक दुमजिला भकान बना लिया। तीन लडकियों की बड़ी धूम-धाम से शादियाँ कर दीं। दो लडकों को उच्च-शिक्षा प्राप्त करने के लिए शहर भेज दिये। स्नय की स्त्री

ये लिए पांच-छह हजार के गहने भी वन गए और भाई को गहर में एक दवा की दुकान भी खुलवा दी। लेकिन उनकी वेशभूषा में कोई अन्तर नहीं आया। सुतली से कान में अटकाया हुआ चरमा, सिर पर मुड़ी हुई और अत्यन्त मैली टोपी, बन्द गले का अनेक स्थानों पर पैयन्ट लगा हुआ कोट, मटमैली धोती, फटे हुए जूते और कई जगह से इधर-उधर झुकी हुई हाथ में चिकनी लकड़ी,

शरीर एकदम किड़किड़ा, गर्दन लम्बी और पतली, गाल भीतर को बसे हुए, मुँह में नकली नात—पीठ पर एक ऊँची-सी गोम। जेब में बीड़ी का बण्डल और माचिस एक तरफ, तो कुछ मुड़े हुए मैले पत्र तथा एक छोटी-सी गे आँगुल की पेंसिल दूसरी तरफ। धोले तो कभी औरत जैसी और कभी आदमी जैसी आवाज। धोलने के पहले चरमों के बीचों बीच से सामने वाले आदमी को कुछ देर घूरने की खास आदत।

गाँव में घूरा करने जाते तो जमीन से दो हाथ ऊँची घोड़ी पर सवारी गाँठते, जो सुबह से शाम दो कोस चलती। रास्ते-भर हिनहिनाती जाती। कभी-कभी रुक कर घास भी खाने लगती जिस पर पटवारी साहेब को कोई एतराज नहीं होता। जिस शिकार की खोज में यह रामपुर जा रहे थे, वह अपने खेत से घर की ओर उसी रास्ते से जाता मिला।

“जगू। ओ जगू।” जगू ने मुड़कर देखा, पटवारीजी पुकार रहे थे।

“हों, महाराज राम। राम।”

“अरे, राम । राम के बच्चे । इस बूढ़े आदमी को कय तक चक्कर देता रहेगा ?”

“क्या बताऊँ पटवारी महाराज । कल ही धनराज सेठ के यहाँ गया था । कहता है भैंरों वाला खेत गिरवी रख दे तो रुपये देता हूँ । आप ही सोचिये महाराज, खेत को गिरवी रख दूँगा तो बाल-बच्चों के पेट कैसे पालूँगा ?”

“बाल बच्चों के बाप । तेरे दिमाग मे तो फितूर घुसा हुआ है । हजार मर्तवा समझाया कि जमीन बेच दे, जमीन बेच दे । लेकिन सुनता ही नहीं । दो साल का लगान चढ चुका है । जमीन दिन-दिन खराब होती जा रही है । मैंने बार-बार भूठी-सन्ची रिपोर्ट देकर तुम्हे बचाया । इसलिए कि एक न एक दिन बुद्धिमानी का काम करके यह जमीन तू मुझे बेच देगा । लेकिन देखता हूँ कि तेरे कान मे जूँ तक नहीं रेंगती । बोल अब भी बसत है, क्या कहता है ? नक़द तीन सौ रुपये देता हूँ । इसी बसत ।”

“नहीं पटवारी साहेब । आप कैसी बातें करते हैं । मैं जमीन को हर्गिज नहीं बेचूँगा । मैं क्या करूँगा ? मेरे बाल-बच्चे कहाँ जाएँगे ? जरा सोचिए तो ।”

“मैंने तो बहुत कुछ सोच लिया है । यह दुनिया भलाई की नहीं है । जिसका भला करो वही दगा दे । कभी की जमीन नीलाम हो गई होती बच्चू । दो साल का सरकारी लगान नहीं चुकाना कम जुर्म नहीं है ।”

“बुरा न मानें सरकार । मैंने हर फसल पर आप से विनती,

की है कि आप पहले सरकारी लगान चुकता कर लें और फिर धनराज को उसका हिस्सा चुकायें। लेकिन आप पहले धनराजजी का हिस्सा चुकाते हैं और बाद में सरकार का। सरकार के लिए आपने कभी चिन्ता ही नहीं की, इसलिए लगान चकाया रहता गया।’

“अरे दुष्ट ! जरा तो शर्म कर, इस बुढ़ापे में तू मुझे यह दोष देता है - साधु आदमी को।”

“दोष की बात नहीं है मालिक, सच्ची बात कह रहा हूँ। फिर आप मुझे जमीन बेचने को कहते हैं—एक किसान के लिए इससे दूरी बात और क्या हो सकती है ?”

“यह बात है, अच्छा बचू। तो अब बच कर निकल जाना। आते धैसास में जमीन नीलाम न करवा दूँ तो मेरा नाम रामवन नहीं।’

‘आप मालिक हैं, चाहे जो कर सकते हैं। लेकिन आपके जैसे मेरे भी बच्चे हैं। इतना जयाल रगिएगा गरीब को मारने में फायदा नहीं है। वह तो पहले से ही मरा हुआ है।’

गँव आ गया था। जगू ने अपने घर की ओर मुड़ते हुए पटवारी से राम राम की। लेकिन पटवारी ने उसे नहीं स्वीकारा। जगू समझ गया कि पटवारी बहुत ही नाराज हो गए हैं।

रामधन पटवारी ज्यों ही सेठ धनराज के दरवाजे पर पहुँचे—उसने दौड़ कर पटवारी जी का स्वागत किया। सेठ का नौकर पुनू पटवारी की घोड़ी को लेकर उसे चन्दा-पानी कराने चल दिया।

रामधन बोला—“सेठ जी, आपके लिए लोग मुझे बड़ी-बड़ी बदनामी दे रहे हैं। अभी जगूरास्ते में ही मिल गया। कहने लगा कि मैं हमेशा ही तुम्हारी ओट लिया करता हूँ। पता नहीं इस दुष्ट के दिमाग में ऐसी बात कहां से आ गई? मालूम होता है इसे किसी ने भड़का दिया है।”

“क्या बताएँ, पटवारी साहेब। यह मनसुग्गा देश-विदेश क्या घूम आया है। गाँव भर को बिगाड़ रहा है। बड़ा चालाक है। मजदूरी करके पेट पालता है। लेकिन अरुढ़ रखता है दुनिया भर की। न मालूम क्या-क्या समझता रहता है गाँव वालों को।”

“समझ गया, सेठ साहेब समझ गया। मैंने तो पहली बार देखकर ही उसको भोंप लिया था। बात करने का उसका ढंग बड़ा रसतरनाक है। गाँव में कुछ काम वाम भी करता है या यों ही बरबास करता रहता है दुनिया भर की।”

“काम। काम की भली कही आपने पटवारी साहेब। सारे गाँव में इसकी पूछ है। ईस पेली जायगी इसके हाथ से। गन्ने कटेंगे इसके हाथ से। मूँगफली खुदेगी इसके हाथ से। घास कटेगी इसके हाथ से। गेहूँ कटेंगे इसके हाथ से। कहीं भी फसली काम हो रहा है, हर जगह यही अगुआ है। वह दौड़-दौड़ कर काम करता है कि क्या बताऊँ? गाँव भर के किसान सिर पर चढाये घूमते हैं। कड़ियों की खेतियाँ सुधार दी हैं—खेतियों, इसी ने।”

“अच्छा ?” पटवारी का मुँह फटा का फटा रह गया ।

“हा, अब जग्गू के साथ मिल कर खेती कर रहा है । रात दिन खेतों में जुटा रहता है । नए-नए तरीके बताता है । यह कर-ग्रह कर, कभी चैन नहीं लेता । इसी का नतीजा है कि जग्गू की फसल इस साल खेतों में जो भूम रही है—आप देख लें तो चक्कर खा जायें ? वो खेत लहलहा रहे हैं कि बाह । बाह । मुझे तो डर है कि कहीं इस साल इसने सब कर्ज चुका दिया तो फिर हाथ से निकल जाएगा ।” धनराज ने कहा ।

पुन्र पटवारी की घोड़ी बांध कर चौपाल से आ रहा था । धनराज ने उसे पुकार कर कहा—“अरे ओ पुन्र के बच्चे । जरा अन्दर जाकर कह दे । खीर और पूरिया बना लें । पटवारी साहेब बड़े दिन बाद शहर से आए हैं ।” पुन्र सिर हिला कर जाने लगा । धनराज फिर बोला—“अरे ओ । धनचक्कर । धड़ी भर का माथा हिला कर क्या चल दिया, पूरी बात तो सुन ले ।” पुन्र पूरी बात सुनने के लिए रुक गया । धनराज बोला—“पहले दो प्याला चा बनाने के लिए बोल दे । खूब खुशबोदार हो, जरा केशर-केशर डाल कर हों, जट्टी धनवा कर ला । यके-मॉदे आए हैं पटवारी साहेब ।” फिर पटवारी की ओर मुखातिब हो कर—“पानी पिएँगे । पानी मगाऊँ पटवारी साहेब ?” पटवारी न मालूम कहाँ थे—पहले बोले—“नहीं”, फिर ओठों पर जबान फिर कर बोले—“हाँ, हाँ, पानी तो पिऊंगा ।” खीर और पूरी का नाम सुन कर पुन्र के मुँह में पानी भर आया था । जवान से

मुँह साफ करता हुआ पानी लाने और सेठजी का संदेश सिठानीजी को सुनाने के लिए भीतर चला गया।

दोनों कुछ देर चुप रहे। फिर अचानक पटवारी बोल उठे—
“जगू की फसल इस साल अच्छी हो गई, यह बहुत बुरा हुआ ?” और चश्मों के बीचों-बीच से धनराज की ओर गौर से देखने लगे।

धनराज ने गम्भीर हो कर पूछा—“क्यों ?”

“यही कि मैं इस साल इस जमीन की रिपोर्ट सास करके खराब देने जा रहा था। सो अब नहीं हो सकेगा।” पटवारी ने कहा।

‘आप भी बच्चों की सी बातें करते हैं पटवारी साहेब। अरे खराब रिपोर्ट देने से आपको क्यों चूकना चाहिए। कौन आकर यहाँ सिर मारेगा। और किसने अब तक मारा है ? आप जो लिख दें, पत्थर की लकीर। अब तक क्या हुआ है सो आप डरते हैं। राम प्रसाद की ही बात सामने है। कौन पूछने आया था ? और फसल के लिए आप डरते हैं सो दवा भी अपने पास है।’ यह कह कर धनराज ने पटवारी का हाथ दवा दिया। पटवारी समझे नहीं। वे प्रश्नवाचक आँखों से चश्मों के बीचों-बीच से धनराज की ओर देखने लगे। धनराज फिर बोला—“नहीं समझे ?”

पटवारी बोले—“नहीं।”

“एक रात की ही तो बात है।” धनराज ने कहा।

“हों। हों, समझ, यह तो करना ही पड़ेगा। फसल चोरों से

कटवा दी। काम बन गया। ठीक है ठीक है, देखता हूँ—यह तो करना ही पड़ेगा।” पटवारी फिर बोले—“हाँ, आपको इससे कितना रुपया लेना है?”

“यही कोर्ट पन्द्रह सौ।” धनराज बोला।

धनराज का हाथ दाव कर पटवारी बोले—“आपने भी कमाल कर दिया सेठ साहेब। यह तो क्या, इसके वेटे के वेटे भी नहीं चुका सकेंगे। लेकिन इस साल आपने हमारे साथ धाल चली—परा हिस्सा नहीं दिया और जो देने का वायदा किया सो अभी तक जेब में नहीं आया।”

“इसके लिए आपको घराने की जरूरत नहीं है, पटवारी साहेब। आपके लिए रुपया क्या, सूसरी जान हाजिर है।”

“यही तो आप लोगों में सामियत है—जान हाजिर कर देंगे, दाम हाजिर नहीं करेंगे।” इतना कह पटवारी ही-ही करके हँसने लगे।

इतने ही में पुन्त चा लेकर आ गया। सेठ ने गरज कर कहा—“ओ बाठ के उल्लू। तुम्हें पानी लाने के लिए कहा था न। पहले चा और पीछे पानी, उल्टे पकी के, काम चोर।”

“सेठ जी, मैं क्या करूँ? सिठानी जी ने मना कर दिया था। बोलीं—पानी क्यों पियेंगे, चा पियेंगे पटवारी साहेब। घरदार, जो पानी दिया। सो मैं चुप रह गया।”

“अच्छा, अच्छा, मारो गोली पानी को, चलो अब चाही पी लें। जारे जा, काम कर अपना। हों, जरा पूरियों नरम नरम सिन्धाना;

मुँह साफ करता हुआ पानी लाने और सेठजी का संदेश सिठानीजी को सुनाने के लिए भीतर चला गया।

दोनों कुछ देर चुप रहे। फिर अचानक पटवारी बोल उठे—
“जम्गू की फसल इस साल अच्छी हो गई, यह बहुत बुरा हुआ ?” और चश्मों के बीचों-बीच से धनराज की ओर गौर से देखने लगे।

धनराज ने गम्भीर हो कर पूछा—“क्यों ?”

“यही कि मैं इस साल इस जमीन की रिपोर्ट खास करके खराब देने जा रहा था। सो अब नहीं हो सकेगा।” पटवारी ने कहा।

‘आप भी वच्चों की-सी बातें करते हैं पटवारी साहेब। अरे खराब रिपोर्ट देने से आपको क्यों चूकना चाहिए। कौन आकर यहाँ सिर मारेगा। और किसने अब तक मारा है ? आप जो लिख दें, पत्थर की लकीर। अब तक क्या हुआ है सो आप डरते हैं। राम प्रसाद की ही बात सामने है। कौन पूछने आया था ? और फसल के लिए आप डरते हैं सो दवा भी अपने पास है।’ यह कह कर धनराज ने पटवारी का हाथ दवा दिया। पटवारी समझे नहीं। वे प्रश्नवाचक आँखों से चश्मों के बीचों-बीच से धनराज की ओर देखने लगे। धनराज फिर बोला—“नहीं समझे ?”

पटवारी बोले—“नहीं।”

“एक रात की ही तो बात है।” धनराज ने कहा।

“हाँ। हाँ, समझ, यह तो करना ही पड़ेगा। फसल चोरों से

कटपा नी । काम बन गया । ठीक है ठीक है, देखता हूँ—यह तो करना ही पड़ेगा ।” पटवारी फिर बोले—“हाँ, आपको इससे कितना रुपया लेना है ?”

“यही कोर्ट पन्दरह सौ ।” धनराज बोला ।

धनराज का हाथ दाव कर पटवारी बोले—“आपने भी कमाल कर दिया सेठ साहेब । यह तो क्या, इसके बेटे के बेटे भी नहीं चुका सकेंगे । लेकिन इस साल आपने हमारे साथ घाल चली—परा हिस्सा नहीं दिया और जो देने का वायदा किया सो अभी तक जेब में नहीं आया ।”

“इसके लिए आपको प्रगाने की जरूरत नहीं है, पटवारी साहेब । आपके लिए रुपया क्या, ससरी जान हाजिर है ।”

“यही तो आप लोगों में ग्रासियत है—जान हाजिर कर देंगे, दाम हाजिर नहीं करेंगे ।” इतना कह पटवारी ही-ही करके हसने लगे ।

इतने ही में पुन्नु चा लेकर आ गया । सेठ ने गरज कर कहा—“ओ राठ के उल्लू । तुम्हें पानी लाने के लिए कहा था न । पहले चा और पीछे पानी, उल्टे कहीं के, काम चोर ।”

“सेठ जी, मैं क्या करूँ ? सिठानी जी ने मना कर दिया था । बोलीं—पानी क्यों पियेंगे, चा पियेंगे पटवारी साहेब । खरदार, जो पानी दिया । सो मैं चुप रह गया ।”

“अच्छा, अच्छा, मारो गोली पानी को, चलो अब चा ही पी लें । जा रे जा, काम कर अपना । हों, जरा पूरियो नरम-नरम सिरुयाना;

दोंत नहीं हैं मुँह में ।” इतना कह कर पुन्नू के सामने पटवारी ने मुँह खोलकर अपने नकली दोंत दिखाए । फिर चा का प्याला उठा कर मुँह के पास लाते रहा—“अहा च च क्या खुशबो है चा में ?”

“और फिर एक काम और करें ।” तभी वनराज बोला ।

“वह क्या ?” पटवारी ने पूछा ।

“रही सही फसल पर कुर्की । कहिए कैसी रही ?”

“भई चाह, कमाल कर दिया इस चा में ।”

“अजी हम तो सदा आपके मतलब की ही बात कहेंगे पटवारी साहेब, आप चाहे माने या न माने ।”

“अरे भई दुनियाँ न माने, कल ही कागजात लेकर आप मेरे साथ शहर चले चले—एक दावा ठोक दीजिए वस । हाकिम को पचास रुपए वस होंगे । मैं फिर काफी ठीक कर लूँगा ।”

“तो यह तै रहा ।”

“बिल्कुल तै, लेकिन कम्बख्त यह मनमुरा कहाँ से आ मरा इस गाँव में और भव गाँव जल गए थे क्या ?”

“अजी छोड़िए, आप भी क्या मरवा करेंगे उस पिही की । अच्छों-अच्छों को पानी पिला दिया है आपने पटवारी साहेब । क्या मैं आपको जानता नहीं हूँ ?”

इतने ही में पुन्नू दो थालों में सजा कर, खीर, पूरी, आलू, पापड़, साग, चटनी, अचार-मुरब्बा आदि ले आया । भोजन

देख कर पटवारीजी को ज्ञान ने रस छोड़ दिया। हाथ मुँह धो कर वे तुरन्त थाल पर झुक पड़े।

x

x

x

फसल को देख कर जग्गू का मन बाँसों उछलने लगा—
अहा। अब जन्म जन्म के उसके कर्ज इस साल चुक जायेंगे।
घर में साल भर तक खाने के लिये काफी अनाज भी बचा लेगा।
स्त्री और बच्चों के लिये बाजार से कपड़े लायेगा। अभी तक
उघाड़े शरीर घूमता था अब वह अपने लिये भी एक बण्डी
बना लेगा। मैलों के गलों में टुनटुनियाँ डालेगा। फिर गाँव में
पञ्चों के सामने सिर ऊँचा करके बैठेगा—क्यों नहीं बैठेगा—अब
उसे कोई कर्ज थोड़े ही चुकाना है। अगले साल की खेती और
भी भारी उत्साह के साथ करेगा। मनसुग्ना द्वारा बताए गए खेती
के सभ तरीके काम लायेगा। जमीन में खाद देगा, अच्छी
खुदाई करेगा और चाँगुना अनाज पैदा करेगा।

लेकिन यह सपना हो जाता तो पटवारी का नाम रामधन कौन
कहता एकरात जब चोरों ने उसकी आधी फसल काटकर गायन
कर दी तो दूसरे दिन सरेरे फसल पर दो कुर्कियाँ एक साथ आ
गईं। पहले धनराज का पाई-पाई का भुगतान हुआ—फिर सर-
फारी लगान का। लेकिन सरकार की दो साल की बर्खाया और
इस साल की पूरी लगान मिला कर सबका आधा भी वसूल
नहीं हो सका। तब रामधन पटवारी ने धीनू को समझा कर जग्गू
के पास भेजा।

“विल्कुल, विल्कुल । मुझे तो इस गाँव में रहना है पटवारी साहेब । मनसुखा ने केसा रग चढ़ाया—कुछ भी हो । इसका फैसला आज ही हो जाय आपके ग़ह्वर जाने के पहले ।”

— — —

३

जगू की फसल काटने वाले चोरों में फूट पड़ गई थी । उनमें से एक आदमी ने आकर मनसुखा को सब बातें खोलकर साफ़ साफ़ बता दीं । उसे जब यह मालूम हुआ कि इस चोरी में पटवारी और धनराज का सरासर हाथ था तो क्रोध के मारे उसने अपने दाँत किटकिटा दिये । वह दौड़कर नन्दू पटेल के पास पहुँचा और सब बातें बताकर मामला कचहरी में पहुँचाने की प्रार्थना करने लगा ।

नन्दू गाँव का पटेल तो था—लेकिन अनपढ़ होने के कारण पटवारी और धनराज के हाथ की कठपुतली बना हुआ था । पटवारी और धनराज का उस पर बड़ा प्रभाव था । एक से लिया-पढ़ी का काम निकलवाता था—और दूसरे से बर्ज लेता था । बात-चात में दबने के लिए यह काफी था । उसने मनसुखा को यह कह कर ढाला—“देखो मनसुखा, बात-चात में गाँव में झगड़ा करना अच्छा नहीं । जहाँ चार चरतन होंगे, वजेंगे ही—ऐसा तो होता ही रहता है । उस दिन तुम धीसू का मामला लेकर आए—आज जगू की तरफ से बकालत करने दौड़ पड़े । यह

मामला जैसा कि तुमने बताया है, बड़ा सगीन है। इसमें सबूत की भी जरूरत पड़ेगी—सो तुम दे नहीं सकोगे, यह मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। आज जो तुम्हारे सामने लम्बी लम्बी बात मार गया है—कल वही कचहरी में यह सब कहने के लिए तैयार नहीं होगा। तुम झूठे पड़ोगे, नाहक में पटवारी और धनराज से दुश्मनी हो जायगी। उनके यहाँ की मजदूरी के जो चार पैसे तुम्हें वरत वे-प्रगत मिल जाते हैं—वे भी बढ़ हो जाएंगे। काम नहीं मिलेगा, भूखें मरोगे। तुम्हारा मामला बोजा है—मैं इसमें हाथ नहीं डालूँगा। वैसे भी तुम जानते ही हो—पटवारी और धनराज से मेरा कितना बरोना है। मैं भला इन लोगों से कैसे बिगाड़ सकता हूँ, तुम ही बताओ ?' पटेल की इन बातों से, मनसुखा को बहुत बड़ी झुंझलाहट हुई। वह बिना कुछ कहे—सुने जग्गू के घर पहुँचा। लेकिन जग्गू ने दीन् का हवाला देकर जब बताया कि किस प्रकार पटवारी और धनराज उसको जमीन के पीछे हाथ बोक़र पड़े हैं, तो वह अपने आपे में न रह सका। उसकी आँखों से आग की चिनगारिया निकलने लगीं। जग्गू ने आज प्रथम बार उसका यह उग्र रूप देखा था। वह बहुत ही डर गया। उसने मन में कहा—मनसुखा ने यह खबर इस रूप में नहीं देनी चाहिए थी—बड़ी गलती हो गई।

कोने में नीवार से लगी हुई एक मोटी और भारी लाठी पड़ी हुई थी। नीचे से डेढ़ बालिशत ऊपर तक उसमें लोहे की नुकीली कीलें लगी थीं। मनसुखा उसे उठाकर वमारे-से जमीन

पर गिराता हुआ बोला—“बहुत हो चुका। इससे अधिक अन्याय सहने की ताकत मुझ में अब नहीं रही। जग्गू, आज मैं इन दुष्टों का सर तोड़ कर ही रहूँगा। या तो इस गाँव में यह अत्याचारी ही रह लें या मैं। गाँव-का-गाव उजाड़ दिया है तब भी चैन नहीं। इन पडयन्त्रकारियों को छोड़ देना महापाप होगा।” इतना कह कर वह झपाटे-से घर से बाहर होने लगा। जग्गू बड़ी मुश्किल में फँस गया। क्या करे और क्या न करे। वह अपनी पूरी ताकत लगाकर मनसुखा की कमर से चिपट गया, बोला—“बचपना मत करो भाई, यह बुरा होगा—सरकारी आदमी को हाथ लगाना जुर्म है।” अपनी कमर को छुड़ाने का प्रयत्न करता हुआ मनसुखा बोला—“सरकारी आदमी अन्याय करता रहे—और हम उसे सहते रहें—यह खूब उल्टी बात पढ़ाते हो जग्गू। भोले-भाले किसान की हरी-भरी दुनिया उजाड़ने के लिए अब मैं इन्हें नहा छोड़ूँगा। तुम छोड़ दो मुझे।” मनसुखा ने जिस ताकत से जग्गू का हाथ पकड़ा—उह उसे सहन नहीं कर सका। एक झटका लगा और वह दीवार से लग कर खड़ा हो गया। मनसुखा तब तक निकल गया था। अनर्थ की आशका से जग्गू ने अपना माथा पकड़ लिया। फिर उसे एकाएक कुछ सूझ पड़ा। वह भाग कर कृष्णा के पास पहुँचा—बोला—“माँ, माँ, ग़ज़ब हो गया।”

कृष्णा एक कुर्ता सी रही थी। जग्गू को इस प्रकार घबरा कर आते और बोलते देख शक्ति हो उठी, बोली—“क्या बात है बेटा ? इतने घबराये हुए क्यों हो ? बोलो।”

जगू बोला—“गजब हो गया माँ ! बतानो अब क्या करूँ । मेने गलती करके मनसुखा को अपनी जमीन के बारे में बता दिया कि पटवारी और धनराज उसे नीलाम करने पर तुले हुए हैं—तो वह लाठी लेकर मुझे धक्का दे एक ओर ढकेल—उन्हे जान से मारने गया है।”

“अरेरे, मुझे तो सचमुच सर्वनाश होता दीख रहा है । यह तो बुरा हुआ । तुमने मुझे पहले ही क्यों न बताया ? चलो तो जरा, मामला हाथ में हो तो—देखें । ’ इतना कह कर कृष्णा जगू को साथ लिए—धनराज के घर की ओर चल पड़ी ।

गुस्से में भरा मनसुखा जब धनराज के यहाँ पहुँचा तो देखा कि पुन्नू पटवारी की घोड़ी को लेकर तालाब में पानी पिलाने ले जा रहा था । उसने पूछा—‘पटवारी आर तेरे सेठ कहा है पुन्नू?’

पुन्नू उछल कर पटवारी की घोड़ी पर बैठ गया । फिर ण्ड लगा कर उसे चलने का संकेत करके बोला—“तालाब में नहाने गए हैं, उधर से शिवजी के दर्शन करके आवेंगे । दोपहर के बाद आना । आज जगू की जमीन नीलाम होगी । रुपये हों तो तुम ही ले लेना—घर की जमीन हो जाएगी । मेरे पास तो रुपये नहीं हैं—नहीं तो मैं तो जरूर ही खरीद लेता ।” इतना कह कर उसने जहाँ मनसुखा खड़ा था वहाँ नज़ि डाली—तो देखा कि मनसुखा कभी का वहाँ से गायब था । वह घोड़ी को चाबुक मार कर चलाने लगा ।

लेकिन पुन्नु ने मनसुरा को यह खबर गलत दी थी। वास्तव में पटवारी और धनराज ईस तोड़ने गए थे। ईस के खेतों की ओर से आपस में हँसते-बोलते और मसखरी करते तथा गन्ना चूसते हुए—पुन्नु की बताई हुई दिशा से एक दम उल्टे होकर आ रहे थे। सहसा दोनों कृष्णा और जग्गू को देखकर रुक गए। पटवारी ने जग्गू को चश्मों के बीच से सिर से पैर तक घूर कर देखा। फिर बोले—“मालूम होता है रास्ते पर आ गए हो जग्गू। अरे मैं तो पहले ही कह रहा था—तुम आखिर में जाकर राजी होओगे। क्यों कृष्णा माँ, मैंने कभी भूठ कहा है आज तक ?”

कृष्णा चुप रही।

जग्गू बोला—“यह तो समझ की बात है पटवारी साहेब। जहाँ आप जैसे साधू आदमी होंगे, वहाँ बेरास्ता कोई कैसे जा सकता है ?”

पटवारी जरा चौंके। फिर बोले “हा भई, बूढ़ा आदमी हूँ। तुम बच्चे लोग मेरी इज्जत नहीं करोगे तो और कौन करेगा ? तो फिर बात तै रहो। जय तुम ही आगे रह कर आये हो तो पचास रुपये और ज्यादा ले लो—क्यों सेठ जी। क्या कहते हैं आप ?”

सेठ धनराज मूँछों परताव देकर बोले—“जब आप लोगों की भलाई पर ही तुले हुए हैं—तो मैं तो ऐसे धर्म के काम में बीच में नहीं बोलूँगा। सिर्फ जग्गू से इतना कहूँगा कि इस मौके को चढ़ हाथ से नहीं जाने दे, वरना जिन्दगी भर पछताएगा।”

जगू खून का घूँट पीकर रह गया। फिर उसे जयाल आया कि फालतू बातें बढ रही हैं—और नहीं ऐसे मौके पर मनसुखा आ गया और इन बेचारों को भागने का समय भी नहीं मिल सकेगा तो वह जी कड़ा करके बोला—“सेठ जी। किधर से आ रहे हैं आप ?”

धनराज की भौहें तन गई। अधचूसी ईस मुँह में ही रह गई। बड़ा विचित्र प्रश्न था—कभी उनके घरवालों को भी ऐसा पूछने का साहस नहीं हुआ। इतनी हिमाकत। धनराज ततैया बन गया मारे क्रोध के। सरासर बेयदबी। फसल अच्छी होने का यह मतलब नहीं कि लोगों को खरीदकर मार डाले। वह कृष्णा की ओर देख कर बोला—“सुन रही हो कृष्णा माँ, घोर कलजुग छाया हुआ है घोर। गाँव के बड़े बूढ़े तक मेरे सामने ज्ञान नहीं खोलते—इतना आदर करते हैं। आज तक मेरे घरवालों तक ने ऐसी बात पूछने की हिम्मत नहीं की। इसका दिमाग अब इतना चढ गया है कि यह मुझसे पूछता है—मैं किधर से आ रहा हूँ ? अरे ओ जगू के बच्चे, मैं जहन्नुम से आ रहा हूँ। इससे तुम्हें मतलब। तेरे बाप का कुछ देना तो है नहीं मुझे। उल्टा तू ही मेरा देनदार है। खबरदार जो ऐसा कभी फिर पूछा मुझसे। रामू की माँ ! इसको समझा देना। यह मेरे मुँह न लगा फरे। हँ, कल का छोकरा। चला है मुझसे लेना लेने। छोटे मुँह बड़ी बात।”

कृष्णा ने देखा कि बात उल्टी पड़ रही है। जगू मन-

सुखा को समझाने आया था और धनराज उसे गुस्सा दिला रहा है—लड़का कहीं कुछ कह न पड़े। उसने तुरन्त बीच में ही बात काट कर कहा—“भाई जी आप बुरा न मानें। आपको जान कर होगा तो अचरज ही परन्तु, मैं भी आपसे यही पूछने आई हूँ। बात यह है कि बाहर गोव का एक साँड पागल हो गया है। अन्यो की तरह दौड़ता है। आदमी देगता है न जानवर। सभी के पेट में सींग घुसा देता है। इसीलिए आपको होशियार करने आया है। जगू भी इसी लिये आया है—इसका पूछना आपका मान घटाना नहीं था। लड़का है, बोलते नहीं आया।”

पागल साँड का कभी भी जब धनराज ने नाम सुना—सात सात दिन तक घर से बाहर नहीं निकला। बहुत ही डरता था। कृष्ण के मुँह से जब उसने यही बात फिर सुनी तो उसके होश उड़ गए। दोनों हाथों से अपने पेट को दबा कर दरवाजे के भीतर घुस गया। फिर धवराई आवाज में बोला—‘अरे बाप रे। अरे बाप रे। पागल साँड गाँव में घुस आया। अरे ओ पुनू। छुन्तू को बुला। राधू को बुला। अरे बाप रे साँड पागल हो गया।’

पटवारी के सामने यह सब एक तमाशा था। अपने हाथ पीठ पीछे बाँध कर इधर-उधर डोलने लगे। फिर आँगन में बिछी साँट पर बैठ गए। लकड़ी सामने रख ली। धनराज को काँपते देख कर बोले—“धवराने की क्या बात है धनराजजी। लकड़ी लेकर चलना-फिरना शुरू कर दीजिए। मार के आगे भूत भागता है। फिर साँड तो जानवर है। अच्छा तो आप अन्दर ही बैठें

मैं थोड़ी लिखा-पढ़ी कर लूँ। अरे हाँ, जग्गू जरा नन्दराम पटल को तो बुला ला।”

जग्गू बोला—“पटवारी जी, आप बूढ़े आदमी हैं, दौड़ा आपसे भी नहीं जायगा, अपने कागज-पत्र मन फैलाइये।”

‘भई, लिखा पढ़ी तो इसी वयत करनी पड़ेगी, तुम्हारे लिए फिर रुपयों का भी तो इन्तजाम करना पड़ेगा न। एक साथ साढ़े तीन सौ रुपये, ग्यारह सौ। क्यों। कभी देखे हैं इतने रुपये? पटवारी बोले।

जग्गू ने ठीक अर्थ लगाया। पटवारी उसकी जमीन—विकार्ड के बारे में लिखा-पढ़ी की कह रहे थे। वह बोला—“पटवारी साहेब, न्या दीनू ने आपसे नहीं कहा कि मैं जमीन बेचना नहीं चाहता।

“तब तो फिर आज ही नीलाम करनी पड़ेगी जमीन। दो में से एक काम होगा।” चरमों के बीचों-बीच से जग्गू को धूर कर पटवारी बोले।

जमीन की नीलामी का नाम सुन कर जग्गू की आँखों में खून उतर आया। वह अपने क्रोध को जन्त नहीं कर सका। लेकिन कृष्णा के सामने वह कुछ बोलना भी नहीं चाहता था। उसने कहा—“माँ। सर ठीक हो गया। अब जाओ, मैं बैठ कर जरा पटवारीजी से बातें करूँगा। अब टर नहीं है। सॉड आणगा तो मैं रोक लूँगा।”

कृष्णा बोली—“अच्छा, तो फिर मैं जाऊँ। जरा ध्यान रखना

होशियारी से रहना ।” इतना कह कर वह चलने लगी । रुक कर बोली—“मेरे साथ ही चलता तो अच्छा था बेटा । इसका मतलब था कि कहीं तू भी भगडा करने के लिये तो न रुक गया । जग्गू ने कहा—“आप जल्दी-जल्दी घर चली जा तो अच्छा है । सॉड तो इधर गया है । डरने की कोई बात नहीं । मतलब था कि मैं भगडा नहीं करूँगा । जग्गू ने कृष्णा से भूँस बोला । उसके चले जाने के पश्चात् पटवारी के पास सरक कर जग्गू बोला—“पटवारीजी, अब इस बुढ़ापे में और कितना पण कमाओगे ? क्या अब भी पेट नहीं भरा ? क्यों गरीब किसानों के पीछे हाथ धोकर पड़े हो । क्यों अपने स्वार्थ के लिए दूसरों की दुनिया को उजाड़ते हो ? ’

पटवारी को भी क्रोध आ गया । लेकिन उसे जव्त करके बोले—“देख जग्गू, मैं तुझे अब तक बचाता आया हूँ । अब भी’ कहता हूँ मान जा । जमीन बेच दे । मैं तुझे पाँच सौ रुपए दूँगा । अब तो ठीक ।”

जग्गू रोप में भर कर बोला—“एक हजार रुपए दे दो पटवारी तो भी मैं अपनी माँ को नहीं बेचूँगा । बार बार ऐसी बात कह कर आप मेरी आत्मा को दुःख न दें ।’

“आत्मा दुखे तो मैं क्या करूँ ? सरकारी हुकुम तो मुझे बजाना ही पड़ेगा । यह देख, यह हुकुम हुआ है कि बकाया लगान जग्गू की जमीन नीलाम करके वसूल किया जाए ।” इतना कहकर भूँस-भूँस का एक कागज पटवारी ने वस्ते से निकाल कर दिखा

दिया। जगू पड़ा लिखा तो था नहीं। विश्वास कर लिया। लेकिन, इस विश्वास ने उसे क्रोध की बड़ी सोमा से भी पार कर दिया। उसे कुछ भी न सूझ पड़ रहा था कि वह क्या करे ?

उसे गुमसुम दख कर पटवारी ने मौन टूट लिया। बोले—
“लेकिन—मेरी बात मान ले तो दोनों हाथों में लड़ है। रुपए मिलते हैं एक मुश्त। बकाया लगान चुकाना नहीं पड़ता—वह मैं दे दूंगा। साथ ही-साथ नौकरी भी। ले, मैं पर्चा लिख देता हूँ कि इस जमीन को काश्त करने के लिए मैं हर हालत में तुम्हें ही नौकर रखूंगा। बोल, बंदी नौकरी मिल गई। बाल-बच्चों के भरण पोषण का समाल भी नहीं रहा।’

जगू के साथ ज्यादाती हो रही थी। गुस्से को वह धार धार ढवा रहा था। और पटवारी चोट पर चोट किये जा रहे थे। आया था वह उन्हें बचाने के लिये, लेकिन अब वह स्वयं अपने वश में भी न रह सका—वह पटवारी की खाट के पास लपक कर पहुँचा, फिर बोला—‘वस, एक बात पूछता हूँ पटवारीजी, अब यह नीच-कर्म छोड़ते हो या नहीं ?’

पटवारी यों ही डर जाने वाले जीवों में से नहीं थे। जीवन के इन पचास वर्षों में उन्होंने कई उतार चढ़ाव देखे थे। कई चार पिटें। हारे। हराए। और फिर भी जी रहे थे। मन में उस गाँवों में खेती जमाने की साध थी। वे जरा भी विचलित नहीं हुये। बोले—“जगू दूर रह कर बात करो। तुम गुस्सा कर रहे हो। देखते नहीं हो कि मैं सरकारी आदमी हूँ। तुम्हें मेरा अदब करना चाहिए।”

जग्गू ने उसी प्रकार कहा—“अदब आदमी की की जाती है, तुम अब भी अपने को आदमी समझते हो ?”

अब पटवारी को भी रोप आया। बोले—“हैवान तो तू हुआ जा रहा है, जो मेरी देह पर हमला कर रहा है।

“अभी हमला किया नहीं है, तुम मजबूर कर रहे हो तो अब करूंगा।” इतना कह कर जग्गू ने पटवारी की गर्दन पकड़ी।

पटवारी को हमले की आशंका नहीं थी। वह बुरी तरह से चिल्ला उठे—“अरे नन्दराम, बचाओ। धनराज जी कहाँ हो ? हाय। मुझे मार डाला।” पागल सॉड के डर से धनराज अध-खुले दरवाजे के भीतर खड़ा-खड़ा कॉप रहा था। नौकर सब इधर उधर गये हुए थे, इसलिये डर के मारे उसका और भी बुरा हाल हो रहा था। जब उसने देखा कि जग्गू पटवारी की गर्दन दबा रहा है तो वह कँप-कँपा कर हु हु हु हु के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं बोल सका। जग्गू ने जोर से चिल्ला कर कहा—“दरवाजा बन्द कर लो सेठ, पागल सॉड आ गया। अपनी जान बचाओ।” धनराज ने भड्का से किवाड बन्द कर लिए। इधर सचमुच ही सॉड आ गया था। मनसुखा आते ही बोला—“यह नहीं होने का जग्गू। तुम हट जाओ, यह पवित्र काम मुझे करने दो।”

जग्गू ने मनसुखा की उठी हुई लाठी पकड़ ली। बोला—“भैया, गाँव वालों को इस बला से बचाने का काम मुझे ही करने दो। इस नीच से अपने पाप-कर्मों का लेखा आज अच्छी-

तरह से ले लेने दो भया। तुम दूर हट जाओ। यह नारकीय आदमी मेरी तकदीर फोड़ने पर तुला हुआ है। मुझे इसका सिर फोड़ लेने दो। जरा इसे जान लेने दो भैया कि बेकसों का ग़्न चूसने का क्या नतीजा मिलता है।”

जगू और मनसुरा की इस लड़ाई में पटवारी को मौका मिल गया। उन्होंने अपने वस्ते से छुरी निकाल कर जगू पर चार किया। मनसुरा की लाठी छोड़ कर जगू ने चार बचाया। पटवारी बोला—“खतरदार। जो कोई आगे बढ़ा, एक साथ दोनों को भोंक दूंगा। मैं तुम दोनों की बदमाशी को बहुत पहले ताड़ चुका हूँ। लेकिन अचरज हुआ यह जान कर कि बुद्धिया भी इस पड़यन्त्र में शामिल है। अब वह भी जेल की हवा खाएगी। मैं एक एक को ५ ” पटवारी का यह वाक्य पूरा भी न होने पाया कि मनसुरा की लाठी पटवारी के छुरी वाले हाथ पर पड़ी। वह छुरी तरह से जमीन पर गिर पड़े और कराहने लगे। जगू ने मनसुरा से कहा—“मनु भाई, मैंने कभी तुमसे कोई बात नहीं कही। आज मैं तुमसे एक भीरु माँगता हूँ।”

मनसुरा बोला—“मैंने तुम्हारी बात कभी टाली है जगन्नाथ।”

“तो तुम इसी वगन इस देश को छोड़ दो।” जगू बोला।

मनसुरा ने जगू का मतलब समझ लिया। और उसकी आँखों से आसु गिरने लगे।

×

×

×

‘जन सेवा मंत्र’, राष्ट्रीय विचारों के प्रगतिशील व्यक्तियों की

एक सस्था थी। मंगलदास इसके अगुआ थे। ये संस्कृत, हिन्दी, उर्दू, फारसी, अंग्रेजी, फ्रेंच जर्मन-आदि भाषाओं के प्रकाण्ड पंडित होकर राजनीति और अर्थ-शास्त्र के विशेषज्ञ थे। अपनी जिन्दगी का बहुत कुछ भाग परिव्राजक के रूप में बिता चुके थे। उस रूप में कई वर्षों तक ये विदेशों में घूमते रहे। ससार के प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति और अवनति के मूल कारणों का उन्होंने गहरा अध्ययन किया था। उनका मन था कि ससार का कोई भी राष्ट्र अपने यहाँ के किसानों और श्रमिकों को पीछे छोड़कर आगे नहीं बढ़ सकता। किसानों और श्रमिकों की जागृति ही राष्ट्र को उन्नत बना सकती है। भारत जैसे पराधीन देश के किसानों और श्रमिकों में जागृति उत्पन्न करना अत्यावश्यक है—और उस हालत में तो यह और भी परमावश्यक हो जाता है जब कि देश गुलामी की जजीरों को तोड़ डालने के लिए छटपटा रहा हो। इनमें जागृति उत्पन्न करने के लिए शिक्षा प्रथम सीढ़ी है। ये लोग शिक्षित होने पर ही अपने भले बुरे को समझ सकते हैं। इसी उद्देश्य को लेकर 'जन-सेवा-सघ' की स्थापना हुई थी। इस सस्था में दो विभाग थे। एक 'किसान सघ,' दूसरा 'श्रमिक-सघ' इसके कार्यक्रम में—शिक्षा-प्रसार, एकता स्थापन, नारी-जागृति, ग्राम-सुधार, स्वदेशी वस्तुओं का प्रसार, ग्रामों में पुस्तकालयों की स्थापना, रात्रि-पाठशालाएँ श्रमिकों और किसानों का स्वास्थ्य-सुधार, दुगिनियों और पीड़ितों की सेवा, न्याय की पुकार और अन्याय से अन्न तक लड़ते रहने—जैसे अनेकों काम थे।

संघ का केन्द्रीय कार्यालय बम्बई में था। लेकिन इसके कार्य-कर्ता न केवल भारत के गांवों और शहरों में ही रहकर कार्य कर रहे थे बरन् बर्मा, श्याम, चीन, मलाया, हिन्द-चीन और लमा आदि देशों में भी फैले हुए थे। इस संस्था का एक विशेष नियम था—जिसके अनुसार इसके 'कार्य-कर्ताओं' के लिये अपरिचितों से सहायता लेना वर्जित था। इसमें वैज्ञानिक, डाक्टर, वैद्य, प्रोफेसर, मास्टर, अफ्तान, सम्पादक, पत्रकार, कान्स्टेबल, किसान, मजदूर और श्रमिक से लेकर सन्यासी तक काम करते थे। काम करने का सबका ढंग अपना अपना था। अपने-अपने तरीके से 'जन-सेवा-संघ' का काम करने की प्रत्येक को पूरी पूरी उद्दी थी। हर एक सदस्य अपने-अपने काम में सभ से आगे बढ़ जाने में तल्लीन होता था। मनसुखा इसी संस्था का एक किसान-सदस्य था। और मंगलदाम बम्बई में रहकर देश सेवा में लगे हुए थे तथा जीविका के लिए एक वाचनालय खोल गया था।

X

X

X

पचपन और साठ वर्ष के बीच की उम्र के काशी काका जितने सीधे और सरल थे—हृदय से जीव मात्र के प्रति उतने ही सरल थे। शरीर से जितने काले—हृदय से उतने स्पष्ट। दिखने में जितने बूढ़े—बाणी में उतने ही बच्चे। कद उनका जितना नाटा-मन उनका उतना मोटा। डाढ़ी और मूछों के चाल उनके जिस कदर सुफेद—विकारों से वे उतने स-रोद। डॉत

उनके जितने दृढ़ और चमकदार—हँसी उनकी उतनी ही मोहक भोली और मजेदार। काम करने में जितनी दृढ़ता—दुस सहेली की उतनी ही क्षमता। अपने प्रति जितने बेखबर—दूसरों के प्रति उतने ही चारखर। बातों में जितने सीधे—कार्य्य रौली में उतने ही पेचीदे। इसके बाद बहुत मैले, अत्यन्त दीन और कभी-कभी रोटी से भी मोहताज। और तब पेट के लिए बड़े अधीर। पिछली जिन्दगी एक दम अज्ञात।

किसानों के दुःखों से दुःखी, और उन्हें दूर करने में दिन रात लगनशील। वे भी मंगलदास के बड़े अच्छे सहयोगी थे।

रतनपुर गाँव में आग उसी के हो गयी। बच्चे-बच्चे की जवान पर काशी काका! मर्दे और औरत की जवान पर काशी काका। सकट के समय सबसे आगे और खुशी के समय गायब—काशी काका।

४९ जेठ की दोपहरी आग बरसा रही थी। काका पेट की ज्वाला बुझाने के लिए एक खेत में मिट्टी के ढेले तोड़ने की मजदूरी करने आए थे। ढेले तोड़ने से खेत का कुछ भाग समतल हो गया था। बाकी असमान और बुरा लग रहा था। एक मोटे ढेले पर बैठे-बैठे वे तम्बाकू पी रहे थे। सहसा धुँएँ को ऊपर की ओर उड़ा एक गहरी निश्वास छोड़ गए। आज उन्हें जिन्दगी कुछ अजीब सी लग रही थी उदासीन। नीरस। बंटगी। शययुक्त। फिर असमान ढेले वाले खेत की ओर देखा उनमें दार्शनिकता जाग गई—जिन्दगी। जिन्दगी जो नीत गई है सो खेत

के इस समतल भाग की तरह स्पष्ट प्रतीत हो रही है। और जो बची है, सो इस असमान गेबत की तरह पर्याप्त उबड़-गाबड़, घेड़गी, दुम्ह और न जाने कैसी है। इस शरीर की शक्ति क्षीण हो चली है। गुलाम देश के व्यक्तियों में शक्ति कहाँ और क्या उनका जीवन ? असमान भूमि की तरह कितनी ही असमानतायें आ सकती हैं इस बर्चा हुई जिन्दगी में। और मैं— शायद, उन्हें पार पा सकूँ। शायद नहीं। लेकिन यह तो सन अन्त्य के बस में है। इसकी चिन्ता करना ही बेकार है। फिर आकाश में उड़ते हुए बुँदों की ओर देग्न कर सोचने लगे— जय एक दिन इसी प्रकार विलीन हो जाना है तो यह भारी हल-चल'भ्यों ? क्यों आशा और भ्यों निराशा। क्यों अच्छा और बुरा। क्यों सुग्न और दुग्न। भ्यों आजादी और गुलामी के भगटे। भ्यों तग और मेरा। और जय यह सन कुछ नहीं, तो भ्यों व्यर्थ काया को कम्पाया जाय ? और तन। तन पेट का भ्या होगा ? ढेंले नहीं टूटेंगे। रेतवाला मजदूरी नहीं देगा। और जिन्दगी की यह गाडी गढें में धँस जायगी। बेमतलब। बिना किसी के काम आए। फिर, जरा सोचने की बात है। धुँआँ आकाश में विलीन अवश्य होता है, लेकिन इसके पहले इसे आग से जलना पडता है। लो, उत्तर मिल गया। जिन्दगी एक चिलम में भरी हुई तम्बाकू है, जिसे विलीन होने के लिए आग में जलना पडता है। विलीन होने के लिए जलना। जलना— कर्तव्य। कर्तव्य का अर्थ हुआ विलीन होने की क्रिया। मरने के

लिए जन्म लेने के समान । वास्तव में प्रकट होना ही विलीन होना है । धुँआँ अपने को नीले रंग में प्रकट करता है; आकाश के नीले-नीले रंग में विलीन होने के लिए । लेकिन इसके लिए उसे आग से खेलना ही पड़ता है । यह तो खेत में मोटे-मोटे ढेले दिस रहे हैं न । इन्हे भूमि में विलीन होना है—और इसके लिए इन्हें कूट राना पड़ेगी । और मैं ढेले नहीं तोड़ूँगा तो शाम को मुझे मजदूरी नहीं मिलेगी । और पेट खाली ही रह जायगा । पेट के लिए काम तो करना ही पड़ेगा । अरे ! जीवन की सच्ची दारानिकता तो इसी में छिरी हुई है ।

काका के एकदम पास जमीन में धडाम से लाठी-प्रहार हुआ । पे चौक उठे । मुडकर देखा तो हसी और प्रसन्नता की सीमा नहीं रही । गद्गद्-पाणी में बोले—“ओ हो ! मनसुख चेटा ! बड़े दिनों में आए । तुम्हारी लाठी की आवाज बता रही है कि कोई नई बात हुई है । क्या मैं ठीक हूँ ?”

सूरज को डूबे काफी देर हो गई थी । चारों ओर अँधेरा घिर आया था । आस-पास की भाडियों में शृगाल भोंक रहे थे । किसान खेतों में काम करके अपने-अपने घर पहुँच चुके थे । नन्दू की वह सरयू को को आज खेत में काम करते-करते देर हो गई । नौकर पहले ही चली गया था । इसलिए वह अकेला ही रह गई थी । जल्द जल्दी से भगटा भरती हुई लम्बी-लम्बी घाम के बीच से चीर कर जानेवाली पगडण्डी से घर की ओर भागी जा रही थी ।

अचानक उसे रास्ते में किसी के कराहने की आवाज सुनाई दी। वह डरकर भागने लगी। किन्तु थोड़ी ही दूर दौड़ने पर उसके पैरों में कोई कपड़ा सा उलझ पड़ा और वह गिर पड़ी। गिरते ही उसके मुँह से एक जोर की चीख निकल पड़ी। उसे तुरन्त ही कुछ दूर से सुनाई दिया—“मैं आ पहुँचा हूँ। घबराने की कोई जरूरत नहीं। टरने की कोई बात नहीं।” सरयू ने आवाज पहचान ली। जगू था। उसने कहा—“जगू भाई, जल्दी आओ, मुझे बड़ा डर लग रहा है। कोई बेहोश पड़ा है। मेरे पैरों में आ गया, मैं गिर पड़ी हूँ।”

पटवारी के मामले में जगू को छः महीने की बँद हो गई थी। उसे भुगत कर वह आ रहा था। दौड़कर सरयू के पास पहुँचा। बोला—“सरयू मो। क्या बात है—कौन है?”

“कोई पड़ा-पड़ा कराह रहा है अन्धेरे में, पहचाना नहीं जाता, पता नहीं, कौन है? हे भगवान। मैं तो डर के मारे मर गई। तुम्हारे पास आग-झाड़ी हो भैया तो जला कर देखो कौन पैरों में आ गया है?”

जगू ने काड़ी जलाकर देखा तो वह एकदम सन्न रह गया। बोला—“अरे। यह तो कृष्णा मौँ हैं। च च इनके मुँह से तो गूत बह रहा है। हाय, हाय। क्या हाल हो गया है इनका।”

सरयू भी दग रह गई। बोली “हाय मो। तुमने यह क्या किया? जगू भाई इन्हें उठा लो। घर ले चलें। हाय, बेचारा रामू अनाथ हो जायगा।”

जग्गू ने कृष्णा को पीठ पर लाद लिया। सरयू और वह दोनों मिलकर उसे घर ले आए। रामू स्कूल से आकर भूख बैठा अपनी माँ की राह देख रहा था। किन्तु अपनी माँ को घर में इस विचित्र तरीके से लाये जाते देखकर वह चीख पड़ा। दौड़कर अपनी मा के गालों को अपने दोनों हाथों से सहलाकर बोला—“माँ, माँ। तुम्हें क्या हो गया माँ। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि अब मेरा पढ़ना छुड़वा दो। मैं नहीं पढ़ूँगा। तुम्हारी ऐसी दशा मुझसे नहीं देखी जाती माँ। कल से मैं तुम्हें कहीं भी काम पर नहीं जाने दूँगा। तुम्हारी यह दशा कैसे हो गई है?” और वह फूट-फूटकर रोने लगा।

सरयू ने उसे अपनी गोद में भर कर कहा—“रोओ नहीं बेटा। अभी ठीक हुई जाती हूँ। तुम इतनी चिन्ता मत करो। जग्गू भाई। लो, यह पानी लो। कृष्णा माँ के मुँह में डालो।” जग्गू ने पानी से पहले कृष्णा के मुँह पर लगा गूँथ धो डाला। सरयू ने तब तक कृष्णा के मुँह पर छाए बालों को ठोक किया। उसके कपड़ों को ठीक किया। फिर जग्गू के पानी पिलाने को देखने लगी। जग्गू ने धीरे-धीरे कर के थोड़ा सा पानी पिलाया। पानी के पेट में पहुँचते ही कृष्णा के शरीर में हलचल हुई। खुला हुआ मुँह उसने बन्द किया। थोड़ी देर वैसे ही पड़ी रही। फिर उसके मुँह से अत्यन्त धीमे स्वर से निजला “पानी।” जग्गू ने फिर पानी पिलाया। पानी पीकर थोड़ी देर फिर पड़ी रही। इसके बाद उसने आँखें खोलने का प्रयत्न किया। जब आँखों पर से भार

हम तो अवगुली आदि कर के उसने कहा—“रमेश बेटा । तुमने खाना खा लिया ।’ रामू ज्योंही कुछ बोलने को हुआ, सरयू ने उसके मुँह पर हाथ दे दिया । फिर कृष्णा से बोली—
“हाँ, रमेश ने खाना खा लिया है । तुम अपने मन को धीरज दो । इसको आज फिर इनाम मिला है । लाना तो बेटा अपनी नई किताब, दिखाओ तो अपनी मा को ।”

रामू समझ गया । उसने भी झूठ-मूठ कह दिया—“हाँ माँ आज इन्स्पेक्टर साहेब आए थे । उन्होंने मुझे यह किताब इनाम दी है । देखो तो कितनी अच्छी है ।”

कृष्णा ने वैसे ही पड़े-पड़े कहा—“अच्छी है, बहुत अच्छी है । सुनूँ, क्या कहत थे इन्स्पेक्टर साहेब ? रमेश बहुत अच्छा लड़का है । खूब पढ़ता है, यही न ।”

“मिलकुल यही । तुमने यह सब कैसे सुना ?”

“ऐसा ही कहा होगा । सब ऐसा ही कहते हैं । मेरा रमेश पढ़ने में बहुत तेज है । तुमने सु-ह किताब के पैसों के लिए कहा था—आज मैं जग्गू की बहू के साथ खेत में काम करने गई थी । मेरी धोती के पल्ले में चार आने बँबे हैं—अभी से लेकर अपने पास रख ले । सुबह जल्दी में भूल जायगा । अरे सरयू बेटा, तुम इस वयसत यहाँ कैसे ?” क्या कहूँ बेटा, यह शरीर तो अब बहुत ही थक गया है । रास्ता चलते-चलते बेहोश होकर गिर पड़ी । शायद तुम लोग उठा कर लाए हो ? बड़ी तकलीफ हुई होगी तुम्हें ।”

“तुम आराम से लेटी रहो कृष्णा माँ, तुम्हारी तबीयत नहीं है। मैं जरा घर हो आऊँ ?” सरयू रामू को अपने साथ घर की ओर चली गई। जगू से कह गई कि जब तक वह लौटे तब तक वह वहीं बैठे। छ महीने की कैद से छूटा जगू अपने बच्चों और स्त्री को सब से पहले ढाँड कर दे की अपेक्षा कृष्णा माँ की सेवा में ही बैठा रहा।

रामू को खिला पिलाकर और थाल में दूध और चपा लिए सरयू आ पहुँची। उसने आते ही जगू से कहा—“ज भैया, अब तुम घर जाओ। वह और बच्चे तुम्हें देख कर घी के दिए जलाएँगे। जाओ, जल्दी जाओ। उन्हें अब तुम्हें आजाने का आनन्द उठाने दो। यहा का तुम्हारा काम हो गया अब मैं काफी हूँ। हाँ, तुम्हारी वह और बच्चों को लेकर मेरे घर आ जाना तुम्हारा खाना वहीं होगा। मैं अपनी वह समझा आई हूँ।” जगू कृत कृत्य होता चला गया।

x

x

x

कृष्णा को स्वस्थ छोड़कर सरयू एक भाह के लिए अपने मैके चली गई थी। वहाँ उसे आवश्यकता से अधिक समय लग गया। लौट कर उसने कृष्णा को देखा तो वह अवाक रह गई।

कृष्णा के सारे शरीर पर सूजन हो आई थी। आँखों से कतरई नहीं दीखता था। चिन्ता में जैसे घुली जा रही थी। उसके न रहने के बाद रामू का क्या होगा—इस दुःख के म

आँखों से आँसू थमते ही न थे। उससे आरवासन की दो बात जो कह देता उसी से रामू की रक्षा की भीग मागती। सामने खड़े हुए आदमी को वह बड़ी देर में पहचान पाती थी।

रामू अपनी बारह वर्ष की उम्र में मानों बूढ़ा हो गया। सब छोड़-छाड़ कर वह अपनी माँ की सेवा में लग गया। दिन में गेटों में मजदूरी करने जाता और सुबह-शाम करता माँ की सेवा—उचे समय में पढ़ता। इस छोटी सी उम्र में न जाने क्या-क्या सचता। माँ को धीरज देता। कमा कर जो पैसे लाता उससे अपना और माँ का पेट पालता। मुँह की हँसी से हवा हो गई थी। छोटी-छोटी बातों से उत्तर भी बहुत सोच समझकर गम्भीर भाषा में देता। पड़ोसी उसकी इस गम्भीरता को न समझ सकने के कारण उससे भुँझलाते और कभी कभी नाराज भी हो उठते थे।

जिस समय सरयू कृष्णा से मिलने गई, रामू अपनी माँ को तालाब से स्नान करा कर उसका हाथ पकड़े हुए घर ला रहा था। कृष्णा के कन्धे पर धुले हुए कपड़े रखे हुए थे—जिनसे पानी चूरहा था। जो इस बात का श्रोतक था कि वे ठीक प्रकार से निचोड़े नहीं गए थे। रामू ने कृष्णा को चबूतरे पर बिठा दिया और आप कपड़ों को सुखाने के लिए धूप में फैलाने लग गया।

सरयू ने भट्ट कृष्णा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। फिर बोली—“माँ, तुम्हें क्या हो गया माँ ? हाय, फिर तुम्हारी यह क्या दशा हो गई। बहुत ही भली-चंगी छोड़कर गई थी। मैं तो कहूँगी

“तुम आराम से लेटी रहो कृष्णा माँ, तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है। मैं जरा घर हो आऊँ ?” सरयू रामू को अपने साथ लेकर घर की ओर चली गई। जगू से कह गई कि जब तक वह न लौटे तब तक वह वहीं बैठे। छ महीने की कैद से छूटा हुआ जगू अपने बच्चों और स्त्री को सब से पहले दौड़ कर देखने की अपेक्षा कृष्णा माँ की सेवा में ही बैठा रहा।

रामू को खिला पिलाकर और थाल में दूध और चपाती लिए सरयू आ पहुँची। उसने आते ही जगू से कहा—“जगू भैया, अब तुम घर जाओ। बहू और बच्चे तुम्हें देख कर घी के दिए जलाएँगे। जाओ, जल्दी जाओ। उन्हें अब तुम्हारे आजाने का आनन्द उठाने दो। यहा का तुम्हारा काम हो गया। अब मैं काफी हूँ। हाँ, तुम्हारी बहू और बच्चों को लेकर मेरे ही घर आ जाना तुम्हारा खाना वहीं होगा। मैं अपनी बहू को समझा आदि हूँ।” जगू कृत कृत्य होता चला गया।

x

x

x

कृष्णा को स्वस्थ छोड़कर सरयू एक माह के लिए अपने मैके चली गई थी। वहाँ उसे आवश्यकता से अधिक समय लग गया। लौट कर उसने कृष्णा को देखा तो वह अवाक् रह गई।

कृष्णा के सारे शरीर पर सूजन हो आई थी। आँखों से कतरई नहीं दीखता था। चिन्ता में जैसे धुली जा रही थी। उसके न रहने के बाद रामू का क्या होगा—इस दुःख के मारे उसकी

आर्यों से आत्सु थमते ही न थे। उससे आश्वासन की दो बात जो कह देता उसी से रामू की रक्षा की भीम मागती। सामने खड़े हुए आदमी को वह बड़ी देर में पहचान पाती थी।

रामू अपनी बारह वर्ष की उम्र में मानों वृद्ध हो गया। सब छोड़-छाड़ कर वह अपनी माँ की सेवा में लग गया। दिन में खेतों में मजदूरी करने जाता और सुबह-शाम करता माँ की सेवा—बचे समय में पढ़ता। इस छोटी सी उम्र में न जाने क्या-क्या सचता। माँ को धीरज देता। कमा कर जो पैसे लाता उससे अपना और माँ का पेट पालता। मुँह की हँसी से हवा हो गई थी। छोटी-छोटी बातों का उत्तर भी बहुत सोच समझकर गम्भीर भाषा में देता। पड़ोसी उसकी इस गम्भीरता को न समझ सकने के कारण उससे झुँझलाते और कभी कभी नाराज भी हो उठते थे।

जिस समय सरयू कृष्णा से मिलने गई, रामू अपनी माँ को तालाब से स्नान करना कर उसका हाथ पकड़े हुए घरे ला रहा था। कृष्णा के कन्धे पर धुले हुए कपड़े रखे हुए थे—जिनसे पानी चूर रहा था। जो इस बात का द्योतक था कि वे ठीक प्रकार से निचोड़े नहीं गए थे। रामू ने कृष्णा को चबूतरे पर बिठा दिया और आप कपड़ों को सूखने के लिए धूप में फैलाने लग गया।

सरयू ने झट कृष्णा का हाथ अपने हाथ में ले लिया। फिर बोली—“माँ, तुम्हें क्या हो गया माँ ? हाय, फिर तुम्हारी यह क्या नशा हो गई। बहुत ही भली-चंगी छोड़कर गई थी। मैं तो

कि मेरे ही कारण तुम्हारी यह तकलीफ बढ गई है। मैं न जाती तो कितना अच्छा था। तुम्हारी सेवा करने वाला कोई न था, तुम्हारी देख भाल करने वाला कोई न था—इस लिए यह सब फिर हो गया। माँ, मुझसे अपराध हो गया। क्या तुम क्षमा कर दोगी ? मुझे क्षमा कर दोगी मा ?

कृष्णा ने कहा—“बेटी। यदि भावनावश तुम यह बात कह रही हो तो मुझे कुछ भी नहीं कहना है और इसका मैं आदर करती हूँ। लेकिन, यदि तुम सचमुच यही बात महसूस करके दुःख मना रही हो तो घर जाओ। क्योंकि तुम्हारी ऐसी बातें सुन कर मुझे दुःख होता है। सरयू, कृष्णा माँ के बोझ को उठाने का यह मतलब नहीं कि तुम अपने घर चार को भूल जाओ। अपने पारिवारिक सम्बन्धों को तोड़ दो। अपने पति और बच्चों की ओर से उदासीन हो जाओ। सेती-चाडी के काम को छोड़ा दो और, कृष्णा माँ के दुःख के पीछे अपने ऊपर एक अनचाह भगडा मोल ले लो। दया और सहानुभूति अच्छी चीज है। मनुष्य में इनका होना आवश्यक है। ये सज्जन के गुण हैं। और तुममें इन गुणों का होना इस गाँव की शोभा है। लेकिन बेटी, इनकी अति बुरी होती है। सच तो यह है कि अधिक दया और अधिक सहानुभूति उस आदमी को बुरी लगती है जिसके ऊपर वह की जाती है—बशर्ते कि वह समझदार हो—दया और सहानुभूति का वास्तविक पात्र हो और उसके मूल्य को भली भाँति समझता हो। दुर्भाग्यवश या मौभाग्यवश कहो बेटी,

तुम्हारी यह माँ इस बात को अच्छी तरह से जानती है—यह चाहती है कि तुम इस पर पूर्ण रूप से दया करो और सच्ची सहानुभूति प्रकट करो। इसीलिए तुम्हें, यह भावुक दया और भावुक सहानुभूति से रोकती है। तुममें भावनाएँ अत्यधिक हैं। और इनका इतना अधिक होना मुझे अच्छा नहीं लगता। कहीं बुरा तो नहीं मान रही हो बेटी। पता नहीं तुम मन में न जाने क्या सोच रही होगी। मैं भी क्या करूँ जवान लड़खड़ाती है और न जाने क्या क्या बक देती है।

सरयू ने कहा “माँ, मैं तुम्हारी बातों को अच्छी तरह से समझ रही हूँ। मैं देख रही हूँ कि मेरी माँ भी कभी-कभी मुझे इसी प्रकार समझाती है। तुममें और उसमें इतना ही अन्तर है कि तुम विद्वान हो और वह बेचारी अत्यधिक भोली। मैं तुमसे क्षमा चाहती हूँ, मेरी बातों से यदि तुम्हारी आत्मा को ठेस पहुँची हो तो।”

“फिर तमने वही बात कह डाली। क्षमा करना और क्षमा माँगना अच्छा नहीं है। दूसरे मायने में इसे पाप कहना चाहिये। क्षमा माँगने वाला पापी होता है। क्षमा शब्द ही बुरा है। इस क्षमा की खाड़ में नित्य न मालूम कैसे-कैसे पाप होते रहते हैं। यदि कहूँ कि क्षमा करने वाला भी पापी है तो अतिशयोक्ति न होगी। क्योंकि वह पाप को छूट देता है। उसे दूसरी बार खुल कर खेलने का निमन्त्रण देता है। तुम्हारे और मेरे बीच बेटी और माँ का व्यवहार है। हमारे बीच अभी तक ऐसी कोई बात

नहीं हुई कि जिसमें क्षमा जैसे नीचे शब्द का प्रयोग हो। और इस शब्द को अपने आस पास सुनने के पहले बेटी, यह जिन्दगी हीनतम हो जाय तो अच्छा। एक बात और बताऊँ—क्षमा शब्द सम्मान के उन लोभियों का आविष्कार है जिनकी इस समाज में आज कमी नहीं है। पाप खुद करते हैं और उस पर क्षमा की चादर का परदा डाल कर अपराधी दूसरे को बनाते हैं। उससे क्षमा माँगवाते हैं, और आप क्षमा करते हैं। पागल लोग इस हथियार को खूब अपनाए रहते हैं। शिकार की तलाश ही उनकी जिन्दगी का ध्येय होता है। फिर समय आने पर पूरा लेखा लेकर बैठते हैं। और अपने आपको क्षमागार घोषित करते हैं। लेकिन वास्तव में यह उनके काले कारनामों का लेखा होता है बेटी, जिसकी आड़ में उन्होंने अनेकों पापों को खुद कमाया है और दूसरों को भी प्रोत्साहित किया है। इसलिए तुमसे मैं यह कहना चाहती हूँ बेटी, कि यदि कोई अपनी ओर से क्षमा पर भाषण करे और बात-बात में क्षमा करे और माँगे तो उसे मनुष्य जाति का सब से बड़ा दुश्मन मानना चाहिए। क्षमा एक ऐसी बुरी चीज है जो आत्मा को काला करती है। उसे कुठित करती है। क्योंकि क्षमा करने वाले को झूठा अभिमान हो जाता है। और क्षमा माँगने वाले को अपनी आत्मा को नीच मानना पड़ता है। देखा न, इस क्षमा में कितनी बड़ी भारी बुराई घुसी हुई है। क्षमा करने वाले का रुख होता है आसमान की ओर और क्षमा माँगने वाले का रुख होता है पाताल की ओर।

एक प्राकाश—और दूसरा पाताल । देखा, अपने आप कितना भारी अन्तर हो गया । अब तुम ही बताओ, क्षमा की सृष्टि में समता कहां ? अधिक-से अधिक पास आने के लिए क्षमा की जरूरत नहीं करना चाहिए । बल्कि इस घुरी चीज को निरन्तर दूर करने की चेष्टा ही करना चाहिए । क्षमा सब के लिए सब अवस्था में घातक है ।”

‘यह बात मेरी समझ में आ गई । बहुत ऊँची बात है । और एक प्रकार से कहो कि सत्कारी रूढ़ियों के विरुद्ध यह एक क्रान्ति है । इसे सब लोग अभी समझ नहीं पाएंगे । मनोहर के पिता बड़े-बड़े हाकिमों में दिन-रात उठते बैठते हैं । वे कहते हैं कि हाकिम लोग बात-बात में क्षमा का आदान प्रदान करते हैं । अर्थ यह हुआ कि ‘क्षमा’ शब्द का प्रयोग बड़े लोगों में चरम सीमा तक पहुँच गया है । और मनोहर के पिता कहते हैं कि क्षमा के इस शब्द से अच्छे-अच्छे लोग पानी-पानी हो जाते हैं । जब लोक-व्यवहार में यह शब्द इतना अधिक प्रचलित है तो इसे निकाल फेंकने में बड़ी दिक्कत होगी । क्यों माँ ?’

“निकाल फेंकने में बड़ी दिक्कत होगी—सही बात है । लेकिन तुम यह भी तो देखो कि इसे न निकाल फेंकने में क्या हानि है ? वह प्रचलित वस्तु एक सीमा पर जाकर अर्थहीन हो जाती है । बात-बात में किसी एक विशेष शब्द का प्रयोग अर्थहीन हो जाता है । निकाल फेंकने की जरूरत ही क्यों होना चाहिए । वह तो अपने आप निकल जायगी । और, उसी वक्त निकल भी गई जब

उसका अर्थ मिट गया। बार-बार माफ कीजियेगा कहने वाले माफ करवाने के अर्थ को भूल जाते हैं। अतः उस माफ करने अथवा न करने का कोई अर्थ ही नहीं। मैं तो बेटी, वास्तविकता को लेकर चली थी। पहिले जो मैंने कहा है—वह क्षमा के वास्तविक अर्थ के लिए है। क्षमा करने वाला क्षमा का वास्तविक अर्थ जानता है तो वह खतरनाक है। और क्षमा माँगने वाला वास्तव में क्षमा का अर्थ जानता है तो वह भी खतरनाक है। क्षमा शब्द के प्रयोग की बाहुल्यता ही अपनी वास्तविकता को नष्ट कर देती है। ऐसी सूरत में—जब कि उसका प्रयोग बराबर हो रहा है, वह अपने आप ही नष्ट हो गया है। उसे निकाल फेंकने की दिक्कत ही नहीं रही। इसका वास्तविक प्रयोग विदेशियों ने जाना। और आज तुम देख ही रही हो कि हमारा देश गुलाम है। मनमुरा कहता था कि उनके 'सघ' में एक डाक्टर है जो कई बरसों तक जिलायत में रहे हैं—यह देश सात समुन्द्र पार है। उन्होंने उसके सघ के लोगों को बताया है कि गोरी जाति क्षमा करने और क्षमा करवाने के अर्थ को भली-भाँति जानती है। और इसी का फल है कि आज वहाँ पापाचार इतना बढ़ गया है कि जिसका कोई हिसाब ही नहीं। सारा-का-सारा ससार पापमय हो गया है। बेटी, ये लोग मनुष्य जाति के सब से बड़े कट्टर शत्रु हैं। चल री, छोड़ इन बातों को, रामू को मैंने सब बता दिया है। वह इन सब बातों को खूब समझ गया है और अतः तो नए-नए ढंग से ऐसी बातें करता है कि मुझे भी अचरज होता है। मनमुरा के साथ रहा है ना, तुम आई

थीं दुःख मुख पूझने और मैं ले बेठी व्यर्थ की बातें । चले थे हरि भजन की और थोड़न लगे रुपास । मैंके मे सब लोग मजे मे तो है । रानी कैसी है ? साथ लाई हो क्या ? कुमार कैसा है ? पढता है या नहीं ?

“वहाँ सब ठीक है माँ, रानी को लडकों के स्कूल मे भरती करा दिया है । कुमार अग्वारों मे लेख लिखता है । बडा ही अजीब मिजाज का आदमी है वह तो, घर-भर के लोग मना-मना कर हार गए, व्याह ही नहीं करता । कहता है—“गुलाम देश के लोगों को व्याह शादी का कोई अधिकार नहीं । गुलाम बच्चे पैदा करके भारत माता के बोक को बडाना नहीं चाहता—और भी ऐसी ही न समझ मे आने वाली बातें करता है । कभी कहता है, मैं तो बी० ए० तक पढी लिखी बहू लाऊँगा । सब लोग परेशान है—घर टिकता ही नहीं । ढिल्ली मे एक अखबार चलाता है ।”

‘अखबार चलाता है । बडी अच्छी बात है वेदो । अखबार चलाना विद्वान आदमियों का काम है । उसका अर्थ यह है कि कुमार अब काफी समझदार लडका हो गया है । मनसुखा के आदमियों मे भी कई अखबारों के आदमी शामिल है । वह बता रहा था कि सात समुन्दर पार के अखबार वालों के आदमी भी उसमे ‘सच’ मे है । ये अखबार वाले चाहें तो देश को काफी सेवा कर सकते है बेटी । लेकिन मनसुखा कहता है कि सभी अखबार वाले एक जैसे नहीं होते, एक-दो को छोड कर सज पैसों के पीछे मरते हैं । इसीलिये तो देश मे दिन दिन अनाचार और अत्याचार

होते रहते हैं। उनका पर्दाफाश करने वाला कोई नहीं होता। लो वेटी, मैं तो फिर बातों में भटक गई, रमेश। बेटा पानी तो पिला दो, ओठ सूख रहे हैं।”

रामू बैठा तो किताब लेकर था। लेकिन अपनी माँ की बातों में इतना गहरा उतर गया था कि उसकी विचार धारा कहीं-की-कहीं पहुँच गई थी। इसीलिए उसने पहली आवाज में नहीं सुना। लेकिन दूसरी आवाज में जब उसने सुना कि माँ पानी माँग रही है, तो वह तुरन्त किताब रखकर पानी ले आया।

पानी पीकर कृष्णा बोली—“जरा गुदडी दे दे बेटा, ठण्ड लग रही है।” फिर सरयू से बोली—“बेटा सरयू। लगता है जैसे दीपक बुझने वाला है। मुझे और किसी बात की चिन्ता नहीं है। मेरा जी अटक रहा है रामू में। यह बच्चा अनाथ हो जायगा। इसके आगे पीछे कोई नहीं है। कोई पूछनेवाला तक नहीं है। और चूँकि इसकी आदत अपने लिये कुछ भी माँगने की कतई नहीं है इस लिए और भी अधिक चिन्तित होती हूँ। इसका क्या होगा ? तुम पर मेरा पूरा भरोसा है। तुम इसे दुःखित होते नहीं देख सकोगी, सही है। लेकिन तुम्हारी मानवीय, जातीय, पारिवारिक और गार्हस्थिक सीमितताएँ भी तो हैं। इसके लिए मैं तुम्हें कभी मजबूर नहीं करना चाहती। मैं तो यह चाहती हूँ वेटी, कि उन सीमितताओं में रहकर इसके लिए कुछ कर सको तो करना—और यदि इसके लिए तुम्हें उन सीमितताओं से बाहर आना पड़े तो मत करना। उस समय भी यदि तुम भावना में भर गई, तो मेरी

आत्मा को शान्ति नहीं मिलेगी। बेटी, तुमसे कुछ ऐसी आत्मीयता हो गई है कि न कहते भी बहुतसी बातें कहनी पड़ जाती हैं।”

सरयू ने कहा—“माँ। जैसा मनोहर वैसा ही रामू। तुम किसी भी बात की चिन्ता न करो। रही तुम्हारी बात, सो यह भरोसा रखो कि ऐसा कोई काम नहीं होगा जो तुम्हारी पवित्र स्मृति के विरुद्ध हो। मैं भी देख रही हूँ कि अब तुम्हें शान्ति से विश्राम करना चाहिए। शरीर इस लायक अब नहीं रहा कि तुम तालाब नहाने जाओ। रामू से एक बाल्टी पानी मगवालो और घर ही नहाओ। एक बात और कहे देती हूँ—दिमाग पर जोर देना छोड़ दो। तुमने रामू को तैसे ही बहुत होशियार कर दिया है। दूसरे उसकी बुद्धि तेज है। वह अवश्य होनहार बच्चा है। उसका भविष्य उज्ज्वल है। कष्ट हर इन्सान को भुगतने पड़ते हैं। कष्ट इसमें भी होंगे, लेकिन ये कष्ट आगे चलकर इसके मार्ग के प्रकाश-स्तम्भ होंगे। सूर्य के प्रकाश की तरह इसकी उन्नति को फोड़ नहीं रोक सकेगा। दुस्मों की घनघोर घटाएँ उसकी आइ मे आ सकती हैं। लेकिन अपने ध्येय पर वह टढ़ रहना सीख जाएगा तो एक दिन वह सदा के लिए चमक जाएगा। तुम उसकी ओर से अपशकुन के विचार छोड़ दो, आराम से लेटो। यह निश्चय रखो, जो मैं कर सकूँगी, अवश्य करूँगी। तुम अच्छी तरह से ओढ़ कर सो जाओ। थोड़ी देर में गरमा जाओगी तो उलट दूर हो जायेगी। रामू पढ़ रहा है। देखो, मनोहर आ रहा है। शायद उसके पिताजी आ गए हैं, बुला रहे होंगे। अच्छा तो इस

समय में चलती हूँ । काम से निपट कर फिर आऊँगी ।” इतना कह कर सरयू चली गई । उसका जाना था कि हाथ में हँसिया लिये जग्गू आ पहुँचा बोला — “कृष्णा माँ कैसी हो ?”

“तवीअत गिर गई है वेटा, आओ, बैठो ।”

जग्गू बैठ गया । फिर चारों ओर यह देख कर कि कोई सुन तो नहीं रहा है, वह बोला — “मनसुखा आया है माँ ?”

कृष्णा गुठड़ी फेंक कर उठ बैठी बोली — “कहाँ है ?”

जग्गू बोला — “ईश के खेत में बैठा है । साभ को आगगा ’ ’

५

बरसत का सुहावना मौसम, चारों ओर छार्ट हुई मोहक हरियाली, आकाश में छाए हुये काले और मुकुन्द बादलों की उन्मादक उमड़ घुमड़, धीमी धीमी चूँदा-चोंदी की सरसता और हवा के ठंडे-ठंडे मस्त भोंकों के अलहड छेड़-छाड़ से—खेतों में काम करने वाला किसान न मालूम किस मस्ती भरे काव्य की रचना कर रहा था ।

दूर टेकरी पर बैठा हुआ तनसुखा हरी हरी घास को चरती हुई भैंस की रगपाली कर रहा था । ठंडे मौसम से उत्तेजित भैंस कभी इधर से उधर और कभी उधर से इधर पागलों की तरह लम्बी-लम्बी घास को अपने शरीर से रगड़ती हुई पूँछ और थान उँचे किये मस्ता ग्ही थी । तनसुखा अपने आप में मस्त

रहा था। उसने जोर से एक राग छेड़ा और दुनिया को भूल
। वह शायद अपनी पिछली प्रेम कहानी को काव्य-बद्ध करके
गीत में भिगो रहा था।

बड़ी बड़ी हरिणी की-सी आँखों में गहरा काजल भरे नैना
सबरे वालों से लड़ती, सिर पर घास की गठरी धरे उधर
निकली। बीस-बाइस वर्ष की उम्र, गुलाब के फूल का सा
रफता चेहरा, छरछरे बदन पर कसी हुई चोली से उमड़ते
पन को दबाते यों जा रही थी जैसे आग और पानी की शक्ति
पहाड़ और उबड़ खागड़ जमीन को चीर कर धड़ाधड़ ढौड़ी
ने वाली रेलगाड़ी। कि उसने सना—‘न जाओ सजनी, प्रिय-
, से मुग्न मोड़।’ प्रियतम से मुग्न मोड़ना, ऐसे समय में जब
समय स्वयं प्रियतम से मिलने का तकाजा कर रहा था।
के पैर जैसे बँधने लगे। फिर सुना—‘काजर कारे तोरे नैना
रमुच आँगों में काजल लगा था और वेहद। बड़ा यो है तन-
गा, इतनी दूर से बैठा आँगों में काजल देखा रहा है।’
केन हाय। बेचारा अकेला है, ओह त्रिखुल अकेला,
राम। इन अकेले आदमियों की जिन्दगी भी क्या है।
गन्त में गा गा कर अपने मन के खुमार निकालते रहते हैं। राम
न, बेचारे। और सुनाई दिया—‘मन की रात बताने दूँ
तनी।’ सच है इन अकेले रहने वालों के मन में भानमती के
टारे की तरह न जाने बताने के लिये क्या-क्या होता है।
गता है, जैसे दिल में आग की भट्टियों की भट्टियाँ सुन्नग रही

हैं। जरा सुनना चाहिए तनसुखा, के मन में क्या है ? —‘पायल की भकार मृदुल मन—भायी, मै हारा जीवन, ओ सजनी।’ पायल की भकार, रसीला भी तो कहता था—‘नैना, जब तू ठुमुक-ठुमुक कर चलती है, तो लगता है जैसे सारा ससार भरस्वती की धीणा से गुञ्जायमान हो रहा है। मन मयूर पर फैलाकर आत्मानन्द में लीन, जैसे नृत्य कर रहे हों। सभी आदमियों को पायल की भकार अच्छी लगती है। तो क्या, सजनी के साजन जीवन भी हार जाते हैं इन पायलों के पीछे ? आखिर कैसे होते होंगे वे साजन ? तनसुखा गाता ही गया—‘तुम विन सूनी-सूनी रजनी।’ बड़े वो होते हैं ये लोग, हाय राम। ये साजन क्या अपनी सजनी को रात-रात भर अपने सामने बिठाए रखते हैं ? बेचारी को नींद नहीं आती होगी क्या ? बड़े मतलबी होते हैं ये साजन।

इसी बीच तनसुखा की भैंस ने नैना के सिर पर रखी घास को मुँह में दाब कर जोर से भटका दिया। वह घबरा गई। “हाय राम, यह कौन ?” मुड़कर देखा तो भैंस। डरकर भागी। उसके भागने से भैंस ने कौतुहल में आकर उसका पीछा कर डाला। नैना के पैर में हडबडाहट के कारण उसकी चोती का पल्ला आ गया। वह गिर पड़ी। भैंस को अपनी ओर जोर से दौड़कर आती देख वह जोर से चिल्ला पड़ी—“हाय राम बेचाओ, मैं तो मरी।”

तनसुखा ने तानकर एक लट्टू भैंस की खोपड़ी में ऐसी मारी

कि वह दौड़कर एक ओर दूर जाकर खड़ी हो गई। फिर वह नैना के पास पहुँचा, पूछा—“कहीं चोट तो नहीं लगी नैना?” अस्त-व्यस्त गीली धोती को ठीक करके—अपने शरीर को चारों ओर से यह देख करके कि वह ठीक तरह से ढँका है या नहीं, नैना बोली—“जाओ जी। भैंस को छोड़ दो कि लोगों को मारे और तुम बैठकर टेकरी पर राग अलापो। कोई मरे, कोई जिए, तुम्हारा क्या बनता गिगड़ता है। पृथ्वी हो, कहीं चोट तो नहीं लगी।”

“मैं मैं बेखबर था नना, वरना यह नहीं हो पाता।”

“जब यहाँ आकर इतने बेखबर हो जाते हो तो क्यों उस बेचारी कृष्णा के तीन पचीसी रुपये खर्च करवाए। रामू पर दया करना था। वह सब कुछ तो उस लड़के के लिए ही करती है। ऐसे बेखबर आदमी को इतनी ज़ाबदारी का काम नहीं लेना चाहिए। कहीं इस बेखबरी में कोई भैंस चुरा ले गया तो।”

तनसुखा जोर से हँस दिया—“भैंस चुरा कर चल देगा? हा-हा-हा-भैंस की चोरी ही-ही-ही-अरे, इतनी बड़ी भैंस को कोई क्या चुराएगा नैना। हाँ, तुम्हारे बारे में कोई कहे कि नैना को अकेली न छोड़ो जंगल में, कोई उसे उठा कर ले जायगा, तो बात मानने में भी आ सकती है।”

“हटो जी, कैसी बातें करते हो? मुझे भला कोई क्या चुराएगा। मैं कोई जानवर हूँ।”

“जानवर को चुराना जरा कठिन काम है। आदमी का क्या? वह तो किसी समय भी चुराया जा सकता है।”

“हटो जी, ऐसी बातें हमें अच्छी नहीं लगतीं। मुनाओ उसे, जिसका अभी गीत गा रहे थे। और तुम्हारी ये चोरी की बातें भी तो समझ में नहीं आती।”

‘न तुम्हारी समझ में आएगी कभी ये बातें नैना। घास उठायो और अपने घर जाओ। हाँ, यह बताओ कि यह तुम्हें पचहत्तर रुपये में कैसे खरीदने की बात किसने बताई?’

“तुम्हारा मतलब?”

“न न न मतलब कुछ नहीं, यों ही पूछ रहा था।”

“मुझे दीनू की दादी ने बताया था।”

“अच्छा। दीनू की दादी ने? बड़ी चालाक है बुढ़िया। चलो छोड़ो। इस समय इस बात में क्या धरा है। कोई और बात करें। हाँ, आज तुम्हारी आँखों का काजल तो इस घटा को भी लजा रहा है नैना।”

“हटो जी। तुम्हें बात करनी भी नहीं आती। आदमी का अपमान करते जाते हो और बड़ाई भी। अभी कहते थे घास उठा कर घर जाओ, तुम कुछ भी न समझोगी और अब कहते हो काजल—तुम मर्दों की बातों का कुछ ठिकाना भी है?”

“कोई ठिकाना नहीं। दिल चीर कर देखो नैना, तो पता लगेगा कि सचमुच मर्दों की बातों का कोई ठिकाना नहीं?”

“तुम तो न समझने वाली बात करते हो।”

“अब भी कहोगी कि मैंने अपमान की बात कही। अब नहीं कहोगी कि मैं समझ की बात करता हूँ। छोड़ो इस बहस को, आज का मौसम कैसा है?”

“देखते नहीं, मेरे कपड़े भीगे हुये हैं चारिस मे ।’

“अब यह तो भैंस नहीं, जिसे मैं मार कर भगा दूँ ।’

इस पर दोनों हँस पड़े ।

पीछे से सुनाई दिया—“तो अकेले-अकेले मैं यों छिप छिप कर बातें होती हैं । ऐसों के कह रहे लगते हैं ।’ फिर जहाँ नैना गिरी वी वहाँ की मुडी हुई घास और गीली जमीन में पड़े हुए गधों को देख कर दीनू की दादी बोली—“राम राम, गोर कलजुग छाया हुआ है । अरी चुडेल, राँड को कहीं कुछ हो गया तो जगत में मुँह काला हो जायगा ।” तनसुखा बीचमें कड़क कर बोला—“दादी । मुँह सम्हाल कर बोलो—अभी तक हम भाई-बहन हैं ।”

“छी छी” पाप छा गया है इस दुनिया में । चोर पाप छा गया है । मैंने सब अपनी आँखों से देखा है, मैं अन्धी नहीं हूँ जो मुँह से झूठी बात निकालूँ । एक तो पाप किया और ऊपर से कहता है मुँह न खोलूँ । मुझ बूढ़ी औरत को डाटता है । हाय राम । तू कहा है ? आज इन पापी आँखों को यह भी दिखा दिया । उस चुड़िया कृष्णा से सौ रुपये लेकर पचहत्तर में भैंस मोल ली—पन्चीस रुपये इस निगोडी को चटा दिये । चोर कहीं का, ऊपर से कहता है कि मैं मुँह सम्हाल कर बोलूँ । देख तो सही, आज कैसी बेइज्जती करती हूँ मैं तेरी गाँव में । और इस चुडेल को आज गाँव से निकलना कर न छोड़ूँ—तो मेरा नाम दीनू की दादी नहीं । ऊपर से कहता है भाई बहन । अरे दुष्ट, भाई बहन के नाम को लजाते हुये तू मर नहीं गया ।”

तनसुखा ने कृष्णा से सौ रुपये लेकर पचहत्तर में भँस ली और पच्चीस रुपये खा जल्द गया था। यह उसका कसूर था। कृष्णा के सामने वह इस बात को जाने देना भी नहीं चाहता था। यहीं तक होता तो वह दीनू की दादी के पैरों पड़कर और उसे दो रुपये और देकर मना भी लेता—जैसा कि उसने पहले भी किया था। इस बार रुपये देने में उसे देर हो गई थी। दो तीन तगादे के बाद भी वह दे नहीं सका था। दीनू की दादी इस पर अत्यन्त चिढ़ गई थी। और इसीलिए उसने नैना से उस दिन वता भी दिया था कि तनसुखा ने ऐसी बेईमानी की है। दीनू की दादी ने नैना और तनसुखा को बातें करते देखा तो उसने तनसुखा से और भी कुछ पटाने की सोच ली थी। किन्तु तनसुखा के कड़े शब्दों को सुनकर वह एकदम तिलमिला उठी और दोनों को बदनाम करने की बमकी दे बरफ़फ़ करती हुई जल्दी-जल्दी गाँव की ओर बढ़ गई। तनसुखा ने सोचा कि चलो मना लें। दीनू की दादी ने सोचा—जरा रुक कर देखें, तनसुखा आता है कि नहीं। लेकिन झूठे पाप को लाटने वाली चुड़िया से बात तक करने में तनसुखा को नफरत हुई। और वह पत्थर की तरह वहीं खड़ा रहा। जब चुड़िया ने देखा कि वह नहीं आ रहा था तो वह और भी जोर-शोर से न-मालूम क्या-क्या बरफ़ती हुई शीघ्रता पूर्वक गाँव की ओर चली गई।

नैना ने चिन्ता प्रकट की—“अब क्या होगा तनसुखा?”
तनसुखा न-मालूम क्या सोच रहा था, बोला—“नैना, माफ़ी तो

मैं नहीं मागूँगा, लेकिन मेरे मन में पाप तो जरूर था। लेकिन जब मैंने तुम्हें अभी वहन कह दिया है, तो आज से इसी नाते को निभाने की कोशिश करूँगा।”

नैना बोली—“लेकिन मैं पूछती हूँ, अब क्या होगा? यह बुढ़िया तो मेरा सब कुछ चौपट करके ही मानेगी। जानते नहीं हो, गाँव का बच्चा-बच्चा डरता है इससे। पक्की नारद है यह नारद।”

तनसुखा ने समझाने की गरज से कहा—“अरे नारद छोड़ कर नारद का बाप भी हो तो यह बुढ़िया तुम्हारा कुछ भी नहीं पिगाड़ सकेगी समझीं। इसकी तुम चिन्ता न करो। साँच को कभी आँच नहीं आती।”

नैना ने कहा—“यह तो मैं भी जानती हूँ तनसुखा, लेकिन गाँव में वेइज्जती होगी, लोग हमारी बात करेंगे। माँ मुझे घर से निकाल देगी। मैं तो कहीं की भी नहीं रहूँगी।” वह रोने लगी।

तनसुखा बोला—“पगली कहीं की। इस बुढ़िया के कहने से माँ तुम्हें घर से निकाल देगी? तो, तुम मेरे पास रह जाना, बस। तुम्हें कोई तकलीफ न होने दूँगा। कर सकोगी तुम मुझ पर भरोसा?” इस पर नैना ज्योंही कुछ कहने को हुई कि

सहसा तनसुखा को याद आया, बोला—“अरे। भैंस कहाँ गई।” वह उसे खोजने दौड़ा। लेकिन कुछ ही दूर जाने पर उसने जो कुछ देखा, उसे देख कर अपना सिर पीट कर वह वहीं बैठ गया। नैना ने देखा तो वह भी आश्चर्य से दग हो गई।

भैस मर चुकी थी। जोर की जो लाठी भैस को लगी थी, उससे उसका सिर फट गया था और आँख फूट गई थीं। नैना ने तनसुखा की लाठी उठा कर देखा तो उसमें लोहे की तीखी तीखी कई कीलें लगी हुई थीं।

तनसुखा एक लम्बी साँस लेकर बोला “सर्वनाश हो गया नैना। मैं अपनी बहिन को मुँह दिगाने लायक भी न रहा। अब मैं उसका बहुत बड़ा कर्जदार हो गया। मुझसे बड़ा नुकसान हो गया।”

नैना बोली—“इसका कारण मैं ही हूँ तनसुख। न मैं तुम्हारा गीत सुनने रुकती और न यह बबएडर गड़ा होता।”

तनसुखा बोला—“नहीं नैना, ऐसा न कहो। मैं सचमुच बड़ा अभागा हूँ।”

×

×

दीनू की दादी के गाँव में पहुँचते-पहुँचते आधे गाँव को खबर मिल गई कि देरूरी के उस पार तनसुखा और नैना बुरे कर्म करते देखे गए। कि इसके बाद भी तनसुखा नैना को बहिन कहता है। कि तनसुखा ने कृष्णा माँ को भैस के सौ रुपए बताए और पचहत्तर में गरीबी और पन्चीस रुपए नैना को चटाए। सूरज के डूबते-डूबते गाँव के बच्चे-बच्चे के मुँह पर यह बात हो गई। बड़ी भारी खलबली मच गई। नैना की माँ सिर पीटती-पीटती नन्दू पटेल के यहाँ पहुँची। कृष्णा सरयू के यहाँ बैठी हुई थी। उसने जब ऐसा सुना तो वह अपने आप को न रोक सकी।

वह बिना कुछ कहे-सुने वहाँ से उठ घर जाकर छाती फाड़-फाड़
 रोने लगी। अभी तक गांव-का-गोव चरित्र के मामले में उसके
 घर को एक आदर्श घर मानना था। हाय, सत्यानाश हो गया।
 उसे चारों ओर अन्धकार दिग्माई देने लगा। क्योंकि उसे मालूम
 था कि इतनी बड़ी वस्त्रागामी के बाद तनसुखा कभी गांव में नहीं
 उदरेगा। और पिछले तीन-चार महीने से उसकी ओर से भस
 इत्यादि के जरिए जो मदद मिल रही थी—वह अब नहीं मिल
 सकेगी। धी और दूध की विली से कृष्णा को बड़ी आशा बंध
 गई थी। उसे विश्वास हो गया था कि उसके मरने के बाद भी
 रामू का पढ़ना जारी रह सकेगा। लेकिन अब उसकी यह आशा
 भी टूट गई। रामू को गोदी में भर कर कृष्णा फफर-फफर कर
 रोने लगी। हाय तनसुखा। तूने परिवार से यह किस जन्म का
 बदला निकाला। गांव के लोग कहने लगे—“ओ हो हो
 दुनिया से धर्म धुल गया। पाप को लोग पुण्य कहने लगे। उस
 बेचारी कृष्णा के तकली पर तो पत्थर पड़े हुए हैं। मनसुखा
 कैसा भाई मिला था। घर-तो-घर गांव-भर में आनन्द की लहर
 छा गई थी। गांव में वह एक नई जिन्दगी फूँक गया। लेकिन
 बुरा हो उस पटवारी रामधन का जिसने अपने जाल-चक्र से
 उसको इतना क्रोधित कर दिया और नतीजा यह हुआ कि उसे
 गाँव छोड़ना पड़ा। और कृष्णा की सारी उम्मीदों पर पानी फिर
 गया। और यह तनसुखा—ऐसा आया कि इसने घर-तो घर गाँव
 को भी बदनाम कर दिया। ऐसे आदमी को गाँव में नहीं रहने

देना चाहिए। और इस भ्रष्टा नैना को भी उसके साथ ही निकाल देना चाहिए।

रात को गाँव के लोगों की पचायत बैठी। पचायत ने वही फैसला दिया—जिसकी सभी आशा करते थे। तनसुखा और नैना पचों के सामने विवाह करें और गाँव छोड़ कर चले जाँय। भैस वाले पच्चीस रुपयों पर भी वहस हुट्ट। पचों ने फैसला दिया कि जाने के पले तनसुखा कृष्णा को पच्चीस रुपए देकर जाए। अपने गाँव की किसी भी बहू बेटी को वे इस प्रकार ठगा जाना गाँव पर कलक समझते हैं।

तनसुखा ने पचों की दो बातें मान लीं। एक गाँव छोड़ कर चला जाना, दूसरे कृष्णा के रुपए लौटा देना। लेकिन नैना से विवाह करने पर उसने साफ इन्कार कर दिया। जिसे उसने वहिन कह दिया, उससे विवाह। वह ऐसा कभी नहीं कर सकता। इस पर पचों में बड़ी खलबली मच गई। कुछ ने कहा—पकड़ कर जबरदस्ती विवाह करवा दिया जाए। लडकी की जिदगी ग़राब करदी विवाह क्यों नहीं करेगा। पच की सभा में उपस्थित नव-युवकों ने कहा—“तनसुखा को मार-मार कर हम उसका भुर्ता बना देंगे। गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत मिट्टी में मिलाना हम कभी बर्दाश्त नहीं करेंगे।” इस पर कुछ पचों ने कहा—“नैना से तो पूछ देंगे, वह क्या कहती है।” अपराधिनी की भाति नैना पचों के सामने लाकर खड़ी की गई। पचों ने पूछा—“पचों का निर्णय तो तुम्हें मालूम हो ही गया नैना। तनसुखा के धारे में त क्या कहना चाहती है ?”

नैना ने कहा—‘निर्णय देने के बाद मुझसे कुछ पत्रा जाए, यह कहाँ तक ठीक है, मैं नहीं जानती। हम दोनों निर्दोष हैं, हम पर दोष लगाना सभा का अन्याय है।’ इस पर सभा में एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक फिर रलबली मच गई। पचों ने रोप में भर कर कहा—“तू कल की छोकरी सच बोलती है और अस्सी वर्ष की बुढ़िया, जिसे कल मरना है, झूठ बोलती है ? ऐसी बात फिर बोलेगी तो तुझ पर पचों के अपमान का दोष लगाया जायगा। हम तुझसे यह जानना चाहते हैं कि तू गाँव में रहना चाहती है या तनसुरा के साथ जाना चाहती है। और यह हम तुझसे इसलिए पूछ रहे हैं कि तू स्त्री की जात है। तेरे साथ कोई ज्यादाती न हो।”

इस पर नैना की माँ बोली—“माँ-बाप पच मुझे क्षमा करें। मुझे इस गाँव में रहना है। मेरे और भी बच्चे और सम्बन्धी हैं। इस कलमुही को अपने यहाँ रख कर मैं सिर नीचा करके गाँव में नहीं घूमूँगी। मैं इसे अपने पास नहीं रखूँगी। चाहे यह इस चाडाल तनसुरा के साथ चली जाय या गाँव में रहे।”

“बोल नैना तू क्या कहती है ?” पचों ने पूछा।

“मैं न्याय चाहती हूँ। और न्याय इस सभा में है नहीं। इसलिए मैं भाई तनसुरा के साथ परदेश चली जाऊँगी।” नैना ने कहा।

इस पर पच पुनः क्रोध होगए। उन्होंने और भी चर निर्णय

देना चाहिए। और इस भ्रष्टा नैना को भी उसके साथ ही निकाल देना चाहिए।

रात को गाँव के लोगों की पचायत बैठी। पचायत ने वही फैसला दिया—जिसकी सभी आशा करते थे। तनसुखा और नैना पचों के सामने विवाह करें और गाँव छोड़ कर चले जायें। भँस वाले पच्चीस रुपयों पर भी वहस हुई। पचों ने फैसला दिया कि जाने के पले तनसुखा कृष्णा को पच्चीस रुपए देकर जाए। अपने गाँव की किसी भी बहू-बेटी को वे इस प्रकार ठगा जाना गाँव पर कलक समझते हैं।

तनसुखा ने पचों की दो बातें मान लीं। एक गाँव छोड़ कर चला जाना, दूसरे कृष्णा के रुपए लौटा देना। लेकिन नैना से विवाह करने पर उसने साफ इन्कार कर दिया। जिसे उसने बहिन कह दिया, उससे विवाह। वह ऐसा कभी नहीं कर सकता। इस पर पचों में बड़ी खलबली मच गई। कुछ ने कहा—पकड़ कर जबरदस्ती विवाह करवा दिया जाए। लडकी की जिन्दगी सारा खरबो विवाह क्यों नहीं करेगा। पच की सभा में उपस्थित नव युवकों ने कहा—“तनसुखा को मार-मार कर हम उसका भुर्ता बना देंगे। गाँव की बहू-बेटियों की इज्जत मिट्टी में मिलाना हम कभी वर्दाशत नहीं करेंगे।” इस पर कुछ पचों ने कहा—“नैना से तो पूछ देओ, वह क्या कहती है।” अपराधिनी की भोंति नैना पचों के सामने लाकर रखी की गई। पचों ने पूछा—“पचों का निर्णय तो तुम्हें मालूम हो ही गया नैना। तनसुखा के बारे में तुम्हें क्या कहना चाहती है?”

है। कसूर किसी का नहीं। कसूर इस जवानी का है। वो जवान स्त्री-पुरुष एकान्त में एक साथ हँसते हुए देखे जाय— समाज को क्योंकर वर्दाशत हो ?”-

“लेकिन तनसुरा, दुनिया इसी तरह क्यों सोचती है ? क्या जवान स्त्री पुरुष एकान्त में दूसरे कारण से हँसते हुए नहीं देखे जा सकते ?”

“देखे जा सकते हैं। लेकिन देखने वाला भी तो हो। आज के समाज की आँखें रूढ़ि-ग्रस्त हैं। वह हर चीज में वही देखती है, जो अब तक देखती आई हैं। श्रे, दूसरी निगाह से एक जवान स्त्री और पुरुष को हँसता हुआ देख लिया जाय तो वह तो एक अजीब बात होगी। और वह अजीबपन ही क्रान्ति होगी। समाज की अन्य रूढ़ियों की जड़ों को ग्योदकर फेंक देनेवाली होगी। भला बताओ तो, जन्म-जन्म का वह चौगा क्या यों ही उतार कर फेंक देने का है। फिर इन रामफटाका तिलकधारी पाखण्डियों को कौन पूछेगा ? इनके पेट कैसे भरेंगे ? आज मुझ और तुम पर यह धीती है। इसलिए हम सोच रहे हैं इस पर, पर बताओ तो, आज से पहले हमने कभी सोचा है इस ढंग से ? नहीं। जब हम ही इतने सोये हुए हैं। और आग लगने पर कुँआ ग्योदने लगते हैं तो इसका अन्त क्या होगा ? सोचने की बात है। मैं कहता हूँ एक दिन एक भयंकर आग लगेगी नैना, यह समाज खुद-ब-खुद उसमें जल कर राख हो जाएगा। इसके लिए न तुम्हें प्रयत्न करना पड़ेगा न मुझे। हाँ, तुम और मुझ जैसे कितनों ही

दे दिया—“तो दोनों आदमी इसी समय गाँव से निकल जाँय ।”

नैना और तनसुखा गाँव छोड़ने के लिए तैयार हो गये। तनसुखा ने नैना से कहा—“नैना, ईश्वर की ऐसी ही जब इच्छा है तो उसे कौन टाल सकता है। पता नहीं भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है। लेकिन तुम्हें मुझ पर विश्वास है न। क्योंकि अविश्वास की गाड़ी अधिक नहीं चल सकेगी। अभी मौका है, यहीं रहने की इच्छा हो तो गेव वाले तुम्हारा प्रबन्ध यहाँ कर सकते हैं। उन्हें मुझसे दुश्मनी है। तुमसे नहीं।”

नैना ने कहा—“कैसी बातें करते हो तनु, खी जिस पर एक बार मन से विश्वास कर लेती है, वह पत्थर की लकीर समझे। मुझे तुमसे क्या शिकायत है। गाँव वालों ने तुम्हारे और मेरे चरित्र पर सन्देह किया है। यह उनकी गलती है। न्याय करने वाले और साक्षी चूँकि बूढ़े हैं, इसलिए उनकी बातें बेबुनियाद नहीं समझी जाती। फिर ये सामर्थ्यवान हैं। तुलसीदासजी ने भी कहा है कि—समर्थ को नहीं दोष गोसाईं। अब तो हमें आगे की सोचना है। इतना अपमानित होकर मैं इस गाँव में एक क्षण भी नहीं रह सकती। चलो, जहाँ तुम ले चलोगे—चलूँगी। जैसे रहोगे—रहूँगी। पेड़ के नीचे जीवन बिताना पड़े—बिता दूँगी। लेकिन इस गाँव का मुँह लौट कर नहीं देखूँगी, जिसमें अन्याय और अन्धविश्वास का बोलबाला है।”

तनसुखा बोला—“तुम भी ठीक कहती हो नैना। और ये गाँव वाले भी ठीक हैं। पंच भी ठीक हैं। दीनू की दादी भी ठीक

है। कसूर किसी का नहीं। कसूर इस जवानी का है। दो जवान स्त्री-पुरुष एकान्त में एक साथ हँसते हुए देखे जाय— समाज को क्योंकि बर्दाश्त हो ?”-

“लेकिन तनसुख, दुनिया इसी तरह क्यों सोचती है ? क्या जवान स्त्री पुरुष एकान्त में दूसरे कारण से हँसते हुए नहीं देखे जा सकते ?”

“देखे जा सकते हैं। लेकिन देखने वाला भी तो हो। आज के समाज की आँखें रूढ़ि-प्रस्त हैं। वह हर चीज में वही देखती है, जो अब तक देखती आई हैं। अरे, दूसरी निगाह से एक जवान स्त्री और पुरुष को हँसता हुआ देख लिया जाय तो वह तो एक अजीब बात होगी। और यह अजीबपन ही क्रान्ति होगी। समाज की अन्य रूढ़ियों की जड़ों को खोदकर फेंक देनेवाली होगी। भला बताओ तो, जन्म-जम ना वह चौगा क्या यों ही उतार कर फेंक देने का है। फिर इन रामफटाका तिलकवारी पारखण्डियों को फौन पूछेगा ? इनके पेट कैसे भरेंगे ? आज मुझ और तुम पर यह बीती है। इसलिए हम सोच रहे हैं इस पर, पर बताओ तो, आज से पहले हमने कभी सोचा है इस ढंग से ? नहीं। जब हम ही इतने सोये हुए हैं। और आग लगने पर कुँआ खोदने लगते हैं तो इसका अन्त क्या होगा ? सोचने की बात है। मैं कहता हूँ एक दिन एक भयंकर आग लगेगी नैना, यह समाज खुद-बखुद उसमें जल कर राख हो जाएगा। इसके लिए न तुम्हें प्रयत्न करना पड़ेगा न मुझे। हाँ, तुम और मुझ जैसे मितनों ही

को चुपचाप अपनी बलि देनी होगी। देखा नहीं था, नन्दू का लडका और दीनू की दादी की लडकी जब पकड़े गए थे बुरे कर्म करते हुए—तो बात कैसी दवा दी गई थी। इसलिए कि वे बड़े थे। नियम बनाने वालों की सन्तान थे। मेरे और तुम्हारे स्थान पर वे पैसे वाले थे। इसलिए ऐसे ही उस प्रसंग का रूप और ही हुआ। न मेरे आगे-पीछे कोई है, न कोई तुम्हारी चिन्ता करने वाला है। तुम्हारी माँ जैसी अनेकों अभागी माताएँ हैं इस समाज में—जो लडकी को एक भार मानती हैं। तूमसे उसे छुट्टी मिली। व्याह-शादी की झूझझक से बची। लेकिन जिनकी चिन्ता करने वाला कोई है और उनके साथ ऐसी बीतती है, तो पच के विधान का रूप और ही हो जाता है नैना। जब तक उनके साथ भी हम तुम जैसा व्यवहार न हागा—यह ढर्ग यों ही चलता रहेगा। इसे न तुम रोक सकोगी, न मे। कोई भी नहीं रोक सकेगा। इसे तो समय ही रोक सकेगा। इसीलिए तो कहता हूँ, बलिदान की आवश्यकता है। लेकिन हमारे तुम्हारे बलिदान से कुछ नहीं होगा। बलिदान जो नहीं कर सकते उनके करने से होगा। क्योंकि उनके बलिदान की कीमत होगी। हम अपना बलिदान कर सकते हैं। इसलिए हमारे बलिदान की कोई कीमत नहीं। लो, अब चलने की तैयारी करो। लेकिन मेरे सामने एक कठिन समस्या आकर खड़ी हुई है। उसे पार पाना जरूरी है।”

“वह क्या ?” नैना ने पूछा।

“पंचों ने पच्चीस रुपये बहिन को दितवाने का फैसला

दिया है। लेकिन जानती हो उसे मुझे कितने देने है ? सो रुपये ?”

“क्यों ?”

“उसका मुँहसे पचहत्तर का और नुकसान हुआ है न नैना। भैंस भेरे हाथ से ही जो मरी है। मुझे रुपयों का प्रबन्ध करना है। इसके पहले मैं यहाँ से जा नहीं सकूँगा।”

उतने ही में रामू ने आकर कहा—“मामाजी। माँ पूछती है—भैंस अभी तक घर नहीं आई, क्या आज रात को जंगल ही में रहेगी ? दुध लाए हो क्या उसे ? तो दूध कहाँ है ? मैं खाना खाने जो बैठता हूँ।”

तनसुखा ने रामू को गोल् में उठा लिया—फिर आँगों में आँसू भर कर बोला—“रामू। तुझे और माँ को सुन कर बड़ा दुःख होगा भैया कि भैंस टेकरी पर ही मर गई है आज।”

“भैंस मर गई ?” रामू का मुँह फटा-का फटा रह गया। वह फिर बोला—“कैसे मर गई मामाजी ?”

“उसे साँप ने काट खाया था रामू।” नैना ने बीच में बात काट कर कहा। तनसुखा ने उसकी ओर इस दृष्टि से देखा मानो कह रहा हो कि अब क्यों झूठ बोलने पर मजबूर कर रही हो मुझे। रामू तनसुखा की गोद से उतर पड़ा और उदास होकर घर की ओर चल दिया।

कृष्ण ने जब सुना कि जब भैंस मर गई तो वह अवाक रह गई। कितने कठिन परिश्रम से कमाया हुआ पैसा था वह

मनसुखा का । तनसुखा के चरित्र भ्रष्ट होने का दुःख तो उसे था ही ऊपर से भैस की मृत्यु का शोक । अब उसके पास कुछ भी सहारा न बचा था । मनसुखा पहले ही चला गया था । कुछ रुपये थे वे यों बरबाद हो गए । थोड़ी बहुत मदद करने वाले तनसुखा की यह दशा हुई, औरों उसकी जवाब दे रहीं थीं । शरीर थक गया था । रामू को पढा-लिखा देखने की मन में तीव्र लालसा थी । गाँव में इज्जत थी । वह तनसुखा ने यों धूल में मिला दी । अब क्या मुँह लेकर जाएगी वह सरयू के पास । धनराज सेठ के ताने कितने तीखे होंगे । सर्वनाश तनसुखा ने यह क्या किया ? कृष्णा अचेत होकर पृथ्वी पर धड़ाम-से जा गिरी । रामू किर्तव्य विमूढ़ हो गया । माँ की इस मूर्च्छा को वह कैसे दूर करे ? उसे कुछ भी न मूक पड़ा वह जोर से चीख कर रो दिया ।

लास प्रयत्न करने पर भी तनसुखा रुपयों का प्रवन्ध नहीं कर सका । आज यदि उसे कोई गुलाम की तरह रारी देने को तैयार होता तो भी वह अपने आपको बेच देता, लेकिन गाँव के एक भी आदमी ने उससे बात तक नहीं की । निराश होकर उसने नैना से आकर कहा — “नैना, विपत्ति चारों ओर से आ पड़ी है । असह्य है । लेकिन सोचता हूँ वह इन्सान क्या—जो मुसीबतों को सह नहीं सकता । अब तो डट कर मोर्चा लेना है । तो तैयार हो ? चलो ?”

“मुझे कौन-सी गाड़ी जोतना है तनसुख ? चलो । लेकिन फिर कृष्णा मा के रुपयों का क्या होगा ?”

“शहर में जाकर अपने आपको बेच दूँगा नैना। वहाँ से रुपये भेज दूँगा।”

६

दिन छिपने के बाद जब गाँव में मालूम हुआ कि कृष्ण के यहाँ—एक नए चारण जयदेव नाम के आए हुए हैं—तो एक-एक करके गाँव-भर के जवान, बूढ़े और बच्चे एकत्रित होने लगे—थोड़ी ही देर में कृष्ण की बैठक में एक भारी भीड़ जमा हो गई।

चारण जयदेव ने पहले एक मगलाचरण न मालूम किस भाषा में गाया जो गाँव वालों की समझ में कनई नहीं आया। जब तक मगलाचरण होता रहा—लोग एक दूसरे के मुँह की ओर ताकते रहे। कुछ तम्बाकू पीते रहे—और कुछ घर की तरफ देख आने या बैलों को घास ढाल आने के बहाने समय काटने के लिए उठकर चल दिए। लेकिन ज्योंही मगलाचरण समाप्त हुआ, सब लोग चारण जयदेव के मुँह की ओर ताकने लगे। उठ कर जाने वाले बैठ गए। तम्बाकू पीने वाले चिलम रोक बैठे। चारण जयदेव बोले—“भाइयो, माताओ और बहिनो, आज मैं आपके सामने एक नए चारण के रूप में उपस्थित हूँ। मैं और चारणों की तरह आप लोगों के सामने पृथ्वीराज चौहान, राणा प्रताप, विक्रमादित्य, भरथरी या राजा गोपीचन्द की कहानी नहीं कहूँगा। जमाना बदल रहा है। देश, काल और अरस्सा को देखकर

चलना ही लाभदायक है। आज का जमाना गई-गुजरी बातों को लेकर रोने को ठीक नहीं समझता। और ठीक भी है। पिछली बातों को कभी-कभी याद कर लेना बुरा नहीं है—और न पिछली बातों की जानकारी रखना ही बुरा है। लेकिन—बुरा है और बहुत बुरा है यह कि हम अपनी पिछली कीर्ति को लेकर उसकी प्रशंसा में सब कुछ भुला दें। और आज की अपनी दयनीय स्थिति पर विचार न करें। हम यह थे—हम वह थे—हमारी पता काँएँ समस्त ससार पर फहराती थीं—बुद्ध ने चीन और जापान में अपना धर्म फैलाया—रामचन्द्रजी ने अपनी भरियादा रखने के वास्ते अग्नि-परीक्षा होने के बाद भी लोक-मत को सम्मान देने की गरज से सीता जी को धनवास दिया—महाराणा प्रताप ने धास की रोटी खाई—शिवाजी ने आजम्म मुगलों से लोहा लिया—अकबर ने दीन-इन्नाही धर्म चलाया। इन सब बातों की जानकारी रखना आवश्यक है। किन्तु इनकी जानकारी रखना मात्र ही हमारे लिए आज सब कुछ नहीं है। जो बीता सो बीता। वह तो घे थे ही। अब देखना है कि हम क्या हैं और कहाँ हैं। हम उनके से हैं या नहीं हैं तो क्या उनसे हम आगे बढ़ नहीं सकते ? और उनके से नहीं हैं, तो क्यों ? उनके समान बनने में हमारे सामने क्या-क्या कठिनाइयाँ हैं। उन्हें हम कैसे दूर कर सकते हैं। इन सब बातों की गहराई में बैठना हमारे लिए आज अत्यावश्यक हो जाता है। इसी दृष्टिकोण को सामने रखकर मैं इस वक्त आप सब लोगों से निवेदन करूँगा कि आप मुझसे उन

तों के बारे में पृष्ठ—जो आज आपकी समझ में नहीं आ रही
—और जिनकी वजह से आप लोग दिन रात नुसकान पर-नुकान
मान उठा रहे हैं।

इस पर उपस्थित लोग एक दूसरे के मुँह की ओर देखने
लगे। प्राचीन काल के राजाओं की कहानियाँ सुनने के लिए जो
लोग आए थे—वे निराश हो गए। वृद्धों ने अपनी चिलम
सम्हाली। बच्चे उठकर घर जाने लगे। नौजवान एक दूसरे की
ओर देखकर आश्चर्य करने लगे। आपस में एक दूसरे को
कुरेदने लगे। प्रश्नों की भूमिकाएँ बँधने लगे। पहले तो एक दो
अहलकों में कुछ उत्साह दिखाई दिया। फिर तुरन्त ही सन्नाटा
छा गया। सभी चक्कर में पड़े कि क्या पूछा जाय और क्या
नहीं। और पूछा जाय तो कैसे? यह चारण तो बड़ा ही अजीब
ढंग का आदमी है। कहानी किससे छोड़कर उटपटाग बातें पकड़
ली है इसने। कोई कहने लगा—“अरे, इसको कुछ आता ही
नहीं—यों ही समय काटने के लिए आ गया है।” इसी बीच
कुछ लोग उठकर चल भी लगे। जयदेव को बड़ी निराशा हुई।
मन में कहने लगा—ओह, देश में श्रितनी बेसमरी छा गई है।
लोग अपने हित की बात भी नहीं सोच सकते। लगता है जैसे
मनुष्य एक मशीन का पुर्जा बन गया है। जहाँ फिट कर लिया
गया है, वहीं लगा हुआ है। मशीन घूमी तो नियमानुसार वह
भी घूम गया। वस। इसी प्रकार ये गाव के किसान हैं। सुबह
घर से पैन लेकर जंगल में चले जाते हैं। जिन भर खेतों में राम

करते हैं। और शाम को घर आ जाते हैं। फसल कटती है तो कोई हिसाब नहीं। आधा अनाज बनिया ले गया। आधे में सरकारी लगान चुक गई। और शाम को घर में खाने के लिए सेर भर अनाज भी नहीं रहा—लेकिन इस पर कभी किसी ने सोचा तक नहीं कि इसका क्या कारण है। इस पहेली में न उलझने के बहाने वह किसान बनिए की दुकान पर पहुँच जाता है और उसमें फिर सदा के लिए फँस जाता है। क्या अजीब बात है? अपनी बरबादी के कारण को जानने से कैसी अनाकानी? कैसा दुराव? इस प्रकार तो इस देश का भला हो चुका। एक भारी क्रान्ति की जरूरत है। सब को जगाना होगा। उठाना होगा। और उनकी बरबादी के मूल कारण को बरबस उनके कानों में फूँकना होगा। री, विदेशी सत्ता, तू ने देश के मानसिक स्तर को कैसा निरुम्मा बना दिया है।

जिन लोगों में मैं इतना रहा हूँ। जिनको मैंने इतना सिखाया। जिन पर मेरा इतना प्रभाव पड़ा कि पटवारी के मामले में किसी ने चूँ तक नहीं की। जिस गाँव में इतनी जागृति हो गई थी। कुछ ही समय में वहाँ इतना परिवर्तन। सब ज्ञान-शून्य। सब विचार शून्य। सब सत्यानाश।

इतने ही में कुछ लोग, जो कुछ सोचने विचारने के लिए दल बाँधकर उठकर अलग अलग चले गए थे, वापस आते दिखाई दिए। उनका अगुआ जयदेव के पास आकर बोला—
“चारण जी। हमारे यहाँ मनसुखा जी थे जो बड़े-बड़े लोगों के

कान काटते थे। लेकिन दुर्भाग्यवश वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। यदि वे होते तो इसी वक्त आपसे ऐसा ऐसी बातें पृछते कि आप भी खुश हो जाते। हम में से तो कोई बोलना भी नहीं जानता। जो दो तीन आदमी हैं, वे आज कुछ भी पृछना नहीं चाहते। उनका विचार है कि कल दिन में कुछ सोच-समझ कर आपसे पूछेंगे। 'यदि आप तब तक इस गांव में रुके रहे तो आपका बड़ा उपकार होगा।'

इस पर जयदेव ने कहा - "मेरे प्यारे दोस्तों। दुःख की बात है कि एक मनसुखा के न होने से आज इस गाँव पर एकदम मूर्खता की छाप लग गई है। आपको चाहिए था कि एक मनसुखा के जाते ही आप लोगों में से दस मनसुखा और तैयार करते। मुझे एक बहुत ही जरूरी काम है। इसलिए मैं रुक नहीं सकूँगा। सुबह ही चला जाऊँगा। जब तक मैं उधर से लौट कर आऊँ—आप लोग प्रश्नों की एक लम्बी-चौड़ी सूची तैयार कर लें। अच्छा, तो—अब मैं आप लोगों से छुट्टी चाहता हूँ। साथ ही प्रार्थना करता हूँ कि अपने-अपने घर जाकर आप लोग आज के वाक्य पर सोचें। आराम न करें। यह बड़े शर्म की बात है।"

जैसे-जैसे राम करने के बाद बैठे हुए लोगों ने कृष्ण की बैठक खाली कर दी। एक-एक करके सभी चले गए। सब के चले जाने के बाद दो आदमी, जिनमें एक नवयुवक और एक प्रधेड था—जयदेव के पास आकर बोले—"चारणजी, बात वास्तव में जो है—उसे आप विना जाने ही चले जाँय, यह हमें पसन्द नहीं।

मनसुखा जैसे आदमी जिस गाँव में रह जाँय—वह गाँव—इतना गिरा हुआ नहीं हो सकता। यह आप विश्वास रखें। बात और है। और वह यह कि पटवारी की वारदात के बाद धनराज सेंठ के यहाँ जो दो नौकर आए हुए हैं देखने में तो सीधे-सादे और भले मानुस लगते हैं, लेकिन वे हैं गुप्तचर। गाँव की एक-एक बात प्रति दिन ठाकुर साहेब के पास पहुँचाते रहते हैं। हर महाने गाँव वालों को तग किया जाता है। उनके आदमी आकर हर पन्द्रहवें दिन कोड़े बताते हैं। भूठ-मूठ तोहमद लगाते हैं। तग करते हैं। मारते हैं और ऊपर से पैसा खाते हैं। कहते हैं। मनसुखा राजनीतिक दल का आदमी है। तुम उससे मिले हुए हो। तुम्हारे पास उसकी चिट्ठी आती है। तुम लोगों को उसका पता मालूम है। बता दो। नहीं बताओगे तो किसी दिन तुम्हारा गाँव जला दिया जायगा। लूट लिया जायगा। सो साहेब गाँव वाले बहुत ही डरे हुए हैं। और वे इस प्रकार की बातों में पड़ने से बड़े डरते हैं। सोचते हैं—कौन रास्ते चलते भ्रमट मोल ले। रिपोर्ट हो गई तो बाल-बच्चों से भी गए। खेती-बारी बरबाद हुई और कैदखाने में सड़ना पड़े सो अलग। यही कारण है कि स्पष्ट रूप से कोई कुछ भी नहीं कहना चाहता। नहीं तो क्या आप समझते हैं कि यह गाँव बेदर्दी है? इसकी बरबादी पर इसे दर्द नहीं है? चारणजी, इस गाँव के लोगों के दिल पर वो-वो फफोले पड़े हुए हैं कि जिनका कुछ कहना ही नहीं। पीव भरा हुआ है। जरा-सा दवाने से जान निकलती है। लेकिन क्या करें।

मजदूरी में यह सब कुछ सहना पड़ रहा है। क्या हम पूछ नहीं सकते कि ठाकुर-पनियों द्वारा किसानों को चूस लेने में क्यों मदद करते हैं? किसानों की फसले खेतों-ही-खेतों में क्यों नीलाम करवा दी जाती है। बिना कारण उन्हें घर-बार, जमीन और बेलों से क्यों बेदमल किया जाता है? पटनारी, दरोगा और कचहरी के कारकून क्यों घूस लेते हैं? प्रजा को क्यों काट देते हैं? क्यों ऊँचे अफसर गाँवों में आकर किसानों की बहू-बेटियों की इज्जत खराब करते हैं? और उनकी इज्जत बचाने वालों को नगा करके कोड़ों से पीटते हैं? लेकिन क्या किया जाय, सबकी ज़वान बन्द है। आप तो चले जायेंगे। सकट गाँव वालों को उठाना पड़ेगा। मनसुखा की हलचलों का नतीजा गाँव घाले आज तक भुगत रहे हैं। और न-मालूम कब तक भुगतते रहेंगे।”

चारण जयदेव की आँखों में अब आँसू आ गए। मन में कहने लगे—हाय-हाय, निर्बलता कितनी नीच है। मजदूरी कैसी घृणित है। यह मनुष्य को क्या-क्या करने के लिए मजदूर नहीं करती। कल गाँव पर सकट आ जायगा—इसलिए बेचारे किसान आपस में मिल कर अपने उजड़े हुए घर पर रो भी नहीं सकते। दुःख-दर्द भी प्रकट नहीं कर सकते। इसे कहते हैं—मारे और न रोने दे। जब तक अन्याय की जड़ नहीं काटी जायगी—जत तक अराजकता का अन्त नहीं होगा। इन किसानों में एकता और जागृति की सख्त जरूरत है।

जयदेव को बड़ी देर तक ध्यान-मग्न रहते देख—वे दोनों आदमी चुपचाप चले गए। जग्गू ने उठ कर कहा—“चलो मनसुखा दादा, भीतर चलो। कृष्णा माँ से बात करलो। समय बहुत थोड़ा है। तुम्हे जल्दी जाना भी तो है। कहीं किसी को मालूम हो गया तो नाहक मे भ्रष्ट उठ खड़ा होगा। धनराज के वे दोनों नौकर बड़ी पैनी दृष्टि से तुम्हारी ओर देख रहे थे। सुन लिया न, सब गाँव का हाल। तुम या मैं पटवारी के लिए ऐसी जल्दवाजी नहीं करते तो शायद हम लोग अब तक कोई काम कर लिए होते। अब तो मामला वेढव हो गया है। सच तो यह है कि हम दोनों ने मिल कर गाँव पर यह सकट बुलाया है। हम वह गलती नहीं करते तो अच्छा था।”

“गई-गुजरी बातों के लिए पछतावा नहीं करते जग्गू। फिर वही बात मुझे तुम्हारे सामने क्यों दुहरानी पड़ रही है। अब तो देखना है कि आगे क्या हो ? चलो, वहिन शायद प्रतीक्षा कर रही होगी।”

“दोनों चलने लगे। रास्ते में जग्गू ने कहा—“कृष्णा माँ की हालत बहुत गिर गई है। मुझे तो, बड़ा डर लग रहा है। रामू को सम्भालने वाला कोई नहीं दीखता।”

“सब अपने आप ठीक हो जाया करता है जग्गू। तकलीफ तो इसे सहनी पड़ेगी, लेकिन बहादुरों की तरह सहेगा तो कल एक बड़ा आदमी बन जाएगा। मुझे उधर कितना समय लग जायेगा—पता नहीं—नहीं तो मैं इसे अपने ही पास रखता।

तुम्हारे भरोसे मैं इसे छोड़ना नहीं चाहता, क्योंकि तुम ठहरे
बहुत भले आत्मी, पैसा है नहीं—जमीन गिरती रख दोगे।
बिल्कुल सच कह रहा हूँ। इसके लिए कोई दूसरा प्रबन्ध करना
पड़ेगा। हाँ, याद आया, हमारे एक और भाई साहब है—नाम है
भूपनजी। निरुद्ध है। रहे। स्वर्ण का मैं प्रबन्ध कर ही दूँगा।
बस। उन्हें तो केवल देय भाल के लिए ही कहना है।'

दोनों आकर कृष्ण के पास खड़े हो गये। जयदेव के इशारे
से जगू ने दरवाजा बन्द कर लिया।

कृष्ण बोली—“आज की बातों से तुम दुःख मना रहे हो
भैया। देखो तो, गाँव वालों को तुमने कितनी कठिनाइयों में डाल
दिया। लेकिन हममें तुम्हारा दोष भी क्या है? इन सबकी तो
हिम्मत ही मर गई है। और हिम्मत भी अकेली क्या करे भैया।
गाँव में एकता नहीं है, न कोई किसी की सुनता है, न मानता है।
आपस के घर के बखेडों से इन्हे फुर्तत ही कहों। कचरू की
जमीन पर जीन जबर्दस्ती अपना हक्क जमाना चाहता है। यही
नहीं, उसके खेलों में बागड खड़ी करना चाहता है। गाँव वालों के
बैलों को पानी नहीं पीने देता उस तालाब में। उस दिन की
बात है भैया, शहर से गुण्डों को ले आया और गाँव वालों को
बुरी तरह पिटाया। स्त्रियों की इज्जत उतरवाई। कहता है।
सरहद घाँस कर ही रहूँगा। ठाकुर भी उसकी मदद करता है।
न जाने क्या चक्कर है भैया। अरे तुम बैठो न, मैं तो कहना ही
भूल गई।”

मनसुखा और जगू कृष्णा के पास जमीन पर बैठ गए।
कृष्णा बोली - “आँखों से अब दीप्ति नहीं। जगू कहता है कि
तुमने भेष ऐसा बनाया है कि सबको चक्कर में डाल दिया, भेष
के साथ ही आवाज बदलना भी तुमने गव सीख लिया। तो
अब कहाँ हो, क्या कर रहे हो भैया ?”

कहाँ हूँ और क्या कर रहा हूँ यह बता कर तुम्हें अब
अधिक थकाना नहीं चाहता। तुम्हें आगम चाहिए। और थोड़े
ही में अपनी बात सतम करके इसी वक्त चल भी देना चाहता
हूँ। क्योंकि आसार कुछ अच्छे नहीं दिखाई दे रहे हैं। अभी
जो एक आदमी निकल गया है। मुझे उस पर शक हो रहा है।
इसलिए अधिक ठहरना सतरनाक होगा। हाँ, मैं तुम्हारे चरणों
की धूल लेने आया हूँ। और आखरी विदा भी। क्योंकि सतरे
की जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। हमारे सत्र के कुछ लोग
सिगापुर जा रहे हैं। दो-तीन साल वहाँ रह कर कुछ जरूरी क्षेत्र
और चीजें तैयार करनी हैं। डाक्टर भी जा रहे हैं। जनता पत्र
के सम्पादक और टाइम्स के विदेशी रिपोर्टर भी हमारे साथ
जाएँगे। वहाँ के लोगों से बड़ी-बड़ी आशा जनक बातें हुई हैं।
बस इतना ही। चरण-धूलि दो और माथे पर हाथ फेरो। दर्शन
हो ही गए हैं। अब चला। हाँ, तुम्हें किसी प्रकार की चिन्ता
नहीं करना है। रमेश तुम्हारी ही इच्छा के मुताबिक पड़ेगा। मैं
सातवें समुद्र के तले में भी होऊँगा तो भी उसके लिए खर्च
भेजने का प्रबन्ध करूँगा। निश्चय।”

मनसुखा और जगू कृष्णा के पास जमोन पर बैठ गए।
 कृष्णा बोली - "आर्यों से अब दीखता नहीं। जगू कहता है कि
 तुमने भेष ऐसा बनाया है कि सबको चकरा मे डाल दिया, भेष
 के साथ ही आवाज बदलना भी तुमने खूब सीख लिया। तो
 अब कहों हो, क्या कर रहे हो भैया ?"

कहों हूँ और म्या कर रहा हूँ यह बता कर तुम्हें अब
 अधिक थकाना नहीं चाहता। तुम्हें आराम चाहिए। और थोड़े
 ही मे अपनी बात खतम करके इसी वक्त चल भी देना चाहता
 हूँ। क्योंकि आसार कुछ अच्छे नहीं दिखाई दे रहे हैं। अभी
 जो एक आदमी निकल गया है। मुझे उस पर शक हो रहा है।
 इसलिए अधिक ठहरना खतरनाक होगा। हा, मैं तुम्हारे चरणों
 की धूल लेने आया हूँ। और आखरी विदा भी। क्योंकि खतर
 की जिन्दगी का कोई भरोसा नहीं। हमारे सब के कुछ लोग
 सिगापुर जा रहे हैं। दो-तीन साल वहाँ रह कर कुछ जरूरी क्षेत्र
 और चीजें तैयार करनी हैं। डाक्टर भी जा रहे हैं। जनता पत्र
 के सम्पादक और टाइम्स के विदेशी रिपोर्टर भी हमारे साथ
 जाएंगे। वहाँ के लोगों से बड़ी-बड़ी आशा जनक बातें हुई हैं।
 वस इतना ही। चरण-धूलि दो और माथे पर हाथ फेरो। दर्शन
 हो ही गए हैं। अब चला। हाँ, तुम्हें किसी प्रकार की चिन्ता
 नहीं करना है। रमेश तुम्हारी ही इच्छा के मुताबिक पड़ेगा। मैं
 सातवें समुद्र के तले में भी होऊँगा तो भी उसके लिए खर्च
 भेजने का प्रयत्न करूँगा। निश्चय।"

गई। रामू अब तक सो रहा था। इस चीख ने उसे जगा कर चौंका दिया। नींद खुलने पर उसने जो कुछ देखा-उसे देख कर घंठ थर-थर कांपने लगा, जंगू को ठाकुर के आदमियों ने बांध लिया था। वे उसे नींच कर बाहर लिए जा रहे थे। फिर रामू ने अपनी माँ की ओर देखा तो वह एक जोर की चीख मार कर बोला—“हाय मेरी माँ, यह क्या हो गया, क्या इन राक्षसों ने तुम्हें भी मारा ?” कृष्णा के सिर को दोनों हाथों में लेकर उसने फिर पूछा—“माँ, माँ, बोलती क्यों नहीं माँ, तुम्हें क्या हो गया है माँ, मेरी अच्छी माँ, मुझसे बोलो।” आधी रात के गहरे अन्धकार में रामू की आवाज दूर तक पहुँच गई थी—माँ, माँ, किन्तु ‘माँ’ के कान चिरकाल के लिए बन्द हो गए थे और आँख सत्य के लिए पथरा गई थीं।

७

नैना और तनसुखा के गाँव से निकल कर दो-तीन मील चलने के बाद ही घोर वर्षा आरम्भ होगई। वर्षा से बचने के लिए वे एक पेड़ के नीचे खड़े होगये। तन सुखा के पास एक टुपट्टा और कुछ रुपयों को छोड़ कर कुछ भी नहीं था। नैना के पास एक पुटलिया थी—जिसमें क्या बधा था—इसका उसे छोड़ और किसी को पता नहीं था। वह एक साफ धोती पहने हुए थी। उसके नंगे थे पैर, मुँह पर उदासी और हृदय में विद्रोह था।

लाट साहेब बोल रहा हो। ले चल, तू भी क्या याद करेगा कि किसी के सामने लाट साहबी बरती थी। बड़ा घमण्ड हो आया है बेटे को, जनता नहीं गडासिंह को ” इतना कह कर गडासिंह नामक आदमी ने सटा-सटा चार-पाँच डण्डे जगू की पीठ और पुटूँ तथा हाथों में जमा दिए। जगू ने उन्हें चुपचाप सह लिया। वह सिर्फ इतना बोला—“मारने की कोई बात नहीं है। जमादार साहेब, आपको इससे कोई फायदा नहीं होगा।” इस पर जमादार और भी क्रोध में भर आया। उसने लात, धूसों, तमाचों और डण्डों से एक साथ काम लेना शुरू किया। दसरे दो आदमी जगू को इधर से उधर और उधर से इधर धक्के देने लगे। जगू के मुँह से इस भारी मार के कारण एक जोर की चीख निकल पड़ी। उसका चीखना था कि तीनों आदमी फिर उस पर दूट पड़े और धडाधड पीटने लगे। कृष्णा से यह सब देखा नहीं गया। उसने कहा—“अरे, ठाकुर के आदमी हो तो क्या आदमी नहीं हो? कैसा धडाधड बेरहमी से इसे मार रहे हो। क्या यही जनता की सेवा हो रही है? पहले यह तो बताओ कि आखिर इस गरीब आदमी का कसूर क्या है? सच है, इस दुनिया में अब इन्सान, इन्सान नहीं रहे। छोड़ दो इसे मत मारो।” अशक्त होते हुए भी कृष्णा उठ कर खड़ी हो गई। और ठाकुर के आदमियों के हाथ रोकने का विफल प्रयास करने लगी। जमादार कुछ बोला नहीं—उसने कृष्णा को केवल जोर से एक मटका दिया। वह रम्भे से टकरा कर एक चीख के साथ गिर कर बेहोश हो

गई। रामू अब तक सो रहा था। इस चीख ने उसे जगा कर चौंका दिया। नींद खुलने पर उसने जो कुछ देखा—उसे देख कर वह थर-थर कांपने लगा, जगमू को ठाकुर के आदमियों ने बांध लिया था। वे उसे खींच कर बाहर लिए जा रहे थे। फिर रामू ने अपनी माँ की ओर देखा तो वह एक जोर की चीख मार कर बोला—“हाथ मेरी माँ, यह क्या हो गया, क्या इन राक्षसों ने तुम्हें भी मारा?” कृष्णा के सिर को दोनों हाथों में लेकर उसने फिर पूछा—“माँ, माँ, बोलती क्यों नहीं माँ, तुम्हें क्या हो गया है माँ, मेरी अच्छी माँ, मुझसे बोलो।” आधी रात के गहरे अन्धकार में रामू की आवाज दूर तक पहुँच गई थी—माँ, माँ, किन्तु ‘माँ’ के कान चिरकाल के लिए बन्द हो गए थे और आँखें सदा के लिए पथरा गई थीं।

७

नैना और तनसुखा के गाँव से निकल कर दो तीन मील चलने के बाद ही घोर वर्षा आरम्भ होगई। वर्षा से बचने के लिए वे एक पेड़ के नीचे रुके होगये। तनसुखा के पास एक दुपट्टा और कुछ रुपयों को छोड़ कर कुछ भी नहीं था। नैना के पास एक पुटलिया थी—जिसमें क्या बंधा था—इसका उसे छोड़ और किसी को पता नहीं था। वह एक साफ धोती पहने हुए थी। उसके नंगे पैर, मुँह पर उदासी और हृदय में निद्रोह था।

विजली कोंब रही थी—बादल गर्जना कर रहे थे—और पानी मूसलाधार होकर धरस रहा था। जिस पेड़ के नीचे वे दोनों खड़े थे—वह उन्हें बचाने में अब असमर्थ हो गया। दोनों के शरीर पर पत्तों द्वारा पानी बाराबाहिर गिरने लगा। दोनों बुरी तरह भीग गए। गीली धाती नैना के शरीर से चिपट गई थी। उसका छरहरा गोरा शरीर धोती में से बाहर स्पष्ट रूप से भाँकने लगा। तब नैना खड़ी-खड़ी न मालूम क्या सोच रही थी—जैसे इस वर्षा और दुनिया से बेखबर। उसके लम्बे-लम्बे बालों में से पानी चू-चू कर उसके कपोलों पर वह रहा था। दो चार बार अनजाने ही जब उसने अपने कपोलों से पानी पोंछ लिया—तो उसके दोनों गालों पर लाली ढीँड आई।

तनसुया ने जब देखा कि नैना भीग कर ठण्ड में काँप रही है—तो उसने सहानुभूति भरे शब्दों में कहा—‘तुम्हारा शरीर ठण्ड से काँप रहा है नना, कैसे असमय में हम निकले, ओढ़ के लिए भी तो कुछ नहीं है।’

अपने आपको इस अवस्था में पाकर नैना लजा गई। फिर तुरन्त बोली—‘पानी रुकने पर सब ठीक हो जायगा। तुम क्यों इतना दुःख मना रहे हो तनसुया।’

तनसुया चिन्तायुक्त शब्दों में बोली—‘दुःख की बात है नैना, मैं कितना अभागा हूँ कि आज तुम्हें लेकर उस स्थान में खड़ा हूँ—जहाँ—न आत्मी है। न सुख है। न बैठने की जगह है। न पानी से बचने का साधन है। न ठौर है। न ठिकाना है। न घर है।

न द्वार है। न कपडा है। न ओढ़ना है। न धिलौना है। न गाना है। न गोंय है। न पहचान है।’

नैना मुसुरा दी-गोली - “कविता कर रहे हो तनसुख।” फिर गम्भीर होकर कहने लगी—“अपने मन को दुग्गी मत करो तनसुख, मैं तूसे आत्मी में रहना नहीं चाहती जो आदमी न हो। आज के आदमी आदमी कहाँ है? आत्मी के दिल होता है। उसमें आदमीयत होती है। विश्वास होता है। नीर-हीर के पहचानने की उसमें शक्ति होती है। वह अन्यायी नहीं होता। यहाँ के आदमी तुमने देखा है न — कैसी कैसी—सूनी बातों पर थाँप मीच कर विश्वास कर लेते हैं। आज के आदमी का हंस उड़ गया तनसुख। मैं उससे कहीं यहाँ अच्छी हूँ। तुम्हारे पारे में मैं अधिक कुछ नहीं जानती। लेकिन तुम्हारी बातें आदमी की-सी मालूम पड़ती हैं। मैं उस आत्मी के संग, बैठने की जगह, उसके अचाव के साधन, उसका ठार ठिफाना और घर-पार, कपडा-लत्ता, ओढ़ना धिलौना गाना और उसने गद्य तथा उसकी पहचान से सग्न नफरत करती हूँ जिसके दिल में इन्सान का दिल नहीं। उससे कहीं लाज्य दर्जे अच्छा मैं यहीं पानी में डूबकर मर जाना ही पसन्द करूँगी। तुम्हें दुःख मनाने का कोई कारण नहीं निकालना चाहिए।”

“नैना, सुख दुःख का अनुभव करना आत्मी का धर्म है। आज मेरा मन दुःख मान रहा है, तो मैं कैसे दुःख नहीं मानऊँ? और चाहे कुछ मानो, लेकिन मैं यह मानने के लिए कतई तैयार

नहीं हूँ कि तुम जैसी सुभाषिनी और ईश्वर की सृष्टि की सनसे सुन्दर वस्तु-ऐसे कण्टों में छोड़ दी जाओ। भला यह ता बताओ कि आदमी को आदमी बनने के लिए कण्ट उठाने की क्यों जरूरत? भगवान का कैसा न्याय है? जो आदमी के मायने में सन्ना है वह कण्ट उठाता रहे आजन्म। और आदमी के मायने में जो भूठा है—दुनिया का सुर और ऐश्वर्य्य वही लूटे। कैसी असमानता है। मैं कहता हूँ आदमी को फिर अच्छा बनने की जरूरत क्यों? तुम्हें ठंड लग रही है। मैं व्यर्थ की बकभक कर रहा हूँ। बताओ मे क्या करूँ? इस समय तुम्हारे पास कैसा अभाग आदमी है। जो तुम्हें ठंड से नहीं बचा सकता। एक फटा पुराना कम्बल तक हाथ नहीं। अकर्मण्य मनुष्य दुनिया में सबसे बड़ा अभाग है। आज मेरी अकर्मण्यता ने मुझसे यह बदला लिया। मैं लज्जित हूँ एक नारी के समक्ष। नारी पुकार-पुकार कर रक्षा के लिए कह रही है। और एक मैं हूँ कि गड़ा गड़ा हाथ मल रहा हूँ। अकर्मण्यता का ही दूसरा नाम लाचारी और मजबूरी है। आज यदि मेरा जीवन पुरुषार्थी होता तो मैं ईश्वर की भेंट का आदर कर पाता। लेकिन सुबह का भूला हुआ सध्या घर पहुँचे तो वह भूला हुआ नहीं कहाँता। अब कर्म ने मुझे ललकारा है। स्वयं भगवान ने मुझे कर्म का सन्देश दिया है। पुरुषार्थ करने का संकेत किया है। आज का डूबने वाला सूरज मेरे पिछले दिनों की अकर्मण्यता को लेकर डूबेगा—और कल का उगने वाला सूरज मेरी एक नई जिन्गी लेकर उगित होगा। नैना, तुम विश्वास रखो,

नहीं हूँ कि तुम जैसी सुभाषिनी और ईश्वर की सृष्टि की सभसे सुन्दर वस्तु-ऐसे कण्टों में छोड़ दी जाओ। भला यह तो बताओ कि आदमी को आदमी बनने के लिए कण्ट उठाने की क्यों जरूरत? भगवान का कैसा न्याय है? जो आदमी के मायने में सन्चा है वह कण्ट उठाता रहे आजन्म। और आदमी के मायने में जो भूठा है—दुनिया का सुख और ऐश्वर्य्य वही लूटे। नैसी असमानता है। मैं कहता हूँ आदमी को फिर अच्छा बनने की जरूरत क्यों? तुम्हें ठंड लग रही है। मैं व्यर्थ की बकबात कर रहा हूँ। बताओ मे क्या करूँ? इस समय तुम्हारे पास कैसा अभाग आदमी है। जो तुम्हें ठंड से नहीं बचा सकता। एक फटा पुराना कम्बल तक हाथ नहीं। अकर्मण्य मनुष्य दुनिया में सबसे बड़ा अभाग है। आज मेरी अकर्मण्यता ने मुझसे यह बदला लिया। मैं लज्जित हूँ एक नारी के समक्ष। नारी पुकार-पुकार कर रक्षा के लिए कह रही है। और एक मैं हूँ कि गड़बा सड़ा हाथ मल रहा हूँ। अकर्मण्यता का ही दूसरा नाम लाचारी और मजबूरी है। आज यदि मेरा जीवन पुरुषार्थी होता तो मैं ईश्वर की भेंट का आदर कर पाता। लेकिन सुबह का भूला हुआ सध्या घर पहुँचे तो वह भूला हुआ नहीं कहाता। अब कर्म ने मुझे ललकारा है। स्वयं भगवान ने मुझे कर्म का सन्देश दिया है। पुरुषार्थ करने का संकेत किया है। आज का डूबने वाला सूरज मेरे पिछले दिनों की अकर्मण्यता को लेकर डूबेगा—और कल का उगने वाला सूरज मेरी एक नई जिन्दगी लेकर उगित होगा। नाना, तुम विश्वास रखो,

यही तो कारण है कि दीनू की दादी मुझ से इतना जलती है। उसकी बातों का मैं फटाफट उत्तर दे देकर उन्हें काट जो देती हूँ। इन अनसुन बुढ़ियों को एक आदत होती है। वह यह कि सब हो या भूठ वे अपनी बातों को मना कर ही टलने की ठानती हैं। इस बुढ़िया मे भी यही बात है। मेरी मा भी मुझसे इसलिये चिढ़ने लगी कि मैंने उसे साफ कह दिया कि मैं किसी पढ़े लिखे आदमी के साथ ब्याह करूँगी। रसीला पढ़ा लिखा मिला था लेकिन बदचलन था। फिर माँ ने रमेश के साथ ब्याह करने की बात कही। लेकिन तुम ही कहो, वह कितना छोटा है।” कहने के लिए तो वह कह गई किन्तु ज्योंहि उसे मालूम हुआ कि वह अपने ब्याह के बारे में बात कह रही हैं तो वह एकदम चुप हो गई। शरमा कर उसने अपना मिर नीचा कर लिया और चोरी की आँखों से यह देखन लगी कि तनसुखा उसकी तरफ दग्न तो नहीं रहा है। जब तनसुखा ने उसकी ओर देखा तो वह लाज के भारे गड़ी जाने लगी। उसने कहा “जाओ जी। मैं तुमसे नहीं बोलती, कपारी लड़कियों के मुँह से ब्याह की बातें सुनते हो।” तनसुखा ने नैना की ओर देखा। वह अपने दोनों हाथों से धोती खींच कर अपने आपको सम्पूर्ण ढकने का प्रयास कर रही थी।

लेकिन एकदम झंझ कर जब नैना तनसुखा से लिपट गई तो वह आश्चर्य चकित हो गया। तेमा क्यों हुआ? यह मोचने के पहले ही उसने देखा कि कुछ ग़री

मन नहीं लगा। कुछ दिनों तक मैंने एक पुस्तकालय में नौकरी की थी। वहाँ मेरा मन ग़ुब लग गया था। इसका कारण यह था कि वहाँ के अध्यक्ष ने मुझे पढ़ना-लिखना सिखा दिया था। पढ़ने के बाद मैंने कई पोथियाँ बाँच डाली। अब मुझे ज्ञान हो गया है। मैं तो सच कहता हूँ। अनपढ़ और बैल बराबर होते हैं। गाँव वाले अनपढ़ ग्रसटों से मने इसीलिए तो अधिक कहा सुनी नहीं की। क्योंकि मैं यह जानता था कि उन मूर्खों के दिमाग में कुछ भी नहीं पुसेगा, चाहे कोई कितना ही सिर फोड़ कर मर जाय। लेकिन तुम्हारी बातें सुनकर तो मैं हैरान हूँ। पढ़े लिखों से भी ये अधिक तथ्यवान हैं। क्या पढ़ना-लिखना है तुमने ?

“हा मैंने पढ़ना सीखा है, लेकिन गाव के बहुत को यह मालूम है। दीन की दादी को मालूम है। वृद्धे सन्यासी बाबा आया करते थे। वे महीनों फेरा डालकर रहते थे। गाली समय में जन थे

यही तो कारण है कि टीन् की दादी मुझ से इतना जलती है। उसकी बातों का मैं फटाफट उत्तर दे देकर उन्हें काट जो देती हूँ। इन अनगढ़ चुड़ियों को एक आदत होती है। वह यह कि सब हो या भूठ वे अपनी बातों को मना कर ही टलने की ठानती हैं। इस चुड़िया मे भी यही बात है। मेरी मा भी मुझसे इसलिए चिढ़ने लगी कि मैंने उसे साफ कह दिया कि मैं किसी पढ़े लिखे आदमी के साथ ब्याह नहीं करूँगी। रसूला पढा लिखा मिला था लेकिन बदचलन था। फिर माँ ने रमेश के साथ ब्याह करने की बात कही। लेकिन तुम ही कहो वह कितना छोटा है।” कहने के लिए तो वह कह गई किन्तु ज्योंही उसे मालूम हुआ कि वह अपने ब्याह के बारे में बात कह रही है तो वह एकदम चुप हो गई। शरमा कर उसने अपना गिर नीचा कर लिया और चोरी की आँखों से यह देखा कि तनसुखा उसकी तरफ दृष्टि नहीं रहा है। जब तनसुखा ने उसकी ओर देखा तो वह लाज के मारे गड़ी जाने लगी। उसने कहा “आओ जी। मैं तुमसे नहीं बोलती, प्यारी लड़कियों के मुँह से ब्याह की बातें मुनते हो।” तनसुखा ने नैना की ओर देखा। वह अपने दोनों हाथों से धोती खींच कर अपने आपको सम्पूर्ण ढकने का प्रयास कर रही थी।

लेकिन एकदम झँड़ कर सब नैना तनसुखा से लिपट गई तो वह आश्चर्य चकित हो गया। ऐसा क्यों हुआ? यह सोचने के पहले ही उसने देखा कि कुछ दूरी पर एक मुजग अपनी

मन नहीं लगा। कुछ दिनों तक मैंने एक पुस्तकालय में नौकरी की थी। वहाँ मेरा मन गूँव लग गया था। इसका कारण यह था कि वहाँ के अध्यक्ष ने मुझे पढ़ना-लिखना सिखा दिया था। पढ़ने के बाद मैंने कई पोथियाँ बाँच डाली। अब मुझे ज्ञान हो गया है। मैं तो सच कहता हूँ। अनपढ़ और बैल बरानगर होते हैं। गाँव वाले अनपढ़ खुसटों से मने इसीलिए तो अधिक कहा सुनी नहीं की। क्योंकि मैं यह जानता था कि उन मूर्खों के दिमाग में कुछ भी नहीं पुसेगा, चाहे फोर्ट कितना ही सिर फोड़ कर मर जाय। लेकिन तुम्हारी बातें सुनकर तो मैं हैरान हूँ। पढ़े लिखों से भी ये अधिक तथ्यवान हैं। क्या पढ़ना लिखना सीखा है तुमने ?”

“हा मैंने पढ़ना सीखा है, लेकिन गाँव के बहुत कम लोगों को यह मालूम है। दीनू की दादी को मालूम है। हमारे यहाँ एक बूढ़े सन्यासी बाबा आया करते थे। वे महीनों हमारे ही यहाँ डेरा डालकर रहते थे। ग्वाली समय में जब मैं काम काज से निपटती तो बाबा के पास बैठ जाती थी। पढ़ना लिखना सिखाने के साथ-साथ वे और भी बहुत सी ज्ञान की बातें बताया करते थे। कुछ दिन तो मेरी समझ में कुछ भी नहीं आया। लेकिन धीरे-धीरे मुझे उनकी बातों में बड़ा रस आने लगा और बाद में तो मैं उनसे तरह तरह की बातें शका कर के पढ़ने लगी। कभी कभी मेरे प्रश्न को लेकर वे दिन दिन भर पोथी पतड़े उलटते पलटते रहते और साँझ को जब मैं उनके पास बैठती तो वे उनका समाधान भगत।

यही तो कारण है कि दीनू की दादी मुझ से इतना जलती है। उसकी बातों का मैं फटाफट उत्तर दे देकर उन्हें काट जो देती हूँ। इन अनाद वृद्धियों को एक आदत होती है। वह यह कि सब हो या झूठ वे अपनी बातों को मना कर ही टलने की ठानती हैं। इस वृद्धिया में भी यही बात है। मेरी मा भी मुझसे इसलिए चिढ़ने लगी कि मैंने उसे साफ कह दिया कि मैं किसी पढ़े लिखे आदमी के साथ ब्याह नहीं करूँगी। रसूला पढ़ा लिखा मिला था लेकिन बदचलन था। फिर माँ ने रमेश के साथ ब्याह करने की बात कही। लेकिन तुम ही कहो, वह कितना छोटा है।" कहने के लिए तो वह कह गई किन्तु ज्योंही उसे मालूम हुआ कि वह अपने ब्याह के बारे में बात कह रही है तो वह एकदम चुप हो गई। गरमा कर उसने अपना मिर नीचा कर लिया और चोरी की आँखों से यह देखन लगी कि तनसुखा उसकी तरफ दृष्टि तो नहीं रहा है। जब तनसुखा ने उसकी ओर देखा तो वह लाज के मारे गड़ी जाने लगी। उसने कहा "जाओ जी। मैं तुमसे नहीं बोलती, कयारी लड़कियों के मुँह से ब्याह की बातें सुनते हो।" तनसुखा ने नैना की ओर देखा। वह अपने दोनों हाथों से धोती ग्रीच कर अपने आपको सम्पूर्ण ढकने का प्रयास कर रही थी।

लेकिन एकदम दौड़ कर जब नैना तनसुखा से लिपट गई तो वह आश्चर्य चकित हो गया। ऐसा क्यों हुआ? यह सोचने में पहले ही उसने देखा कि कुछ दूरी पर एक मुजग अपनी

ठोड़ी ऊपर कर के जमीन से बहुत ऊँचा उठने की कोशिश कर रहा था। वह समझ गया। उसने हँस कर कहा—“अरे यह तो तुम्हारा तत्त्वज्ञान सुनने के लिए अपने कान गड्डे किए हुए है नैना। कुछ सनाओ न बेचारे को।” इस पर नैना कुछ भी नहीं बोली। वह रुप रुपा कर और भी तनसुखा से सट गई। इस पर तनसुखा ने कहा—“जानवर है, इसे छेड़ना अच्छा नहीं। पानी रुक गया है। चलो, चल वें। सूर्यास्त के पहले ही स्टेशन पहुँच जाना है। ग्यारह बजे रात को गाडी मिलेगी। स्टेशन पर जाकर कुछ खाना-पीना भी करना होगा। कहीं और वारिस आ गई तो बस। आओ चलें। बूढ़ा-बोढ़ी तो होती ही रहेगी। वारिस के दिन जो है।” फिर तनसुखा ने पेड़ से एक पतला डाल तोड़कर उसका लट्टू बना लिया। और उसे कंधे पर रख कर वह चलने लगा।

८

नैना के डिब्बे में बहुत-सी जवान बूढ़ी स्त्रियाँ पहले से ही घठी हुई थीं। किसी ने उसे बैठने की जगह नहीं दी। कुछ देर इधर-उधर जगह के लिये वह देखती रही। फिर चुपचाप अपनी गठरी को समझाले नीचे ही बैठ गई। सोने की लगभग चार पाँच सीटों पर दो बूढ़ी स्त्रियाँ अपना अन्तःशब्द सामान फैलाए बैठी घठी आपस में बातें कर रही थीं। उनमें से प्रत्येक ने नैना पर

गहरी दृष्टि डाली। उसे सिर से पैर तक वे देखती ही रहीं— देखती ही रहीं। फिर एक ने दूसरे के कन में अपना मुँह लेजा कर कहा—“बुद्ध दाल में जरूर काला है। किसी के साथ भागकर जा रही है। जो बिठाने आया था शायद वही इसको लिए जा रहा है।” दूसरी ने नैना को फिर सिर से पैर तक तौल कर देगा और कहा—“मालूम होता है क्यारी ही है। राम राम, कैसा जमाना आगया है, दुनिया में धर्म तो रहा हा नहीं। इन आज कल की छोरियों ने तो आग बरसा रखी है। जरा-सी ब्याह शादी में देर हुई, पस भाग निकलीं घर से किसी के साथ। यह लड़की जरूर अपने माँ-बाप का मुँह काला करके जा रही है, तुम ठीक कहती हो वहिन।” तब पहली ने कहा—“जरा पता लेना चाहिए। डिब्बे को कुछ स्त्रियाँ अभी जाग रही हैं, जब सो जाएँगी तो इसे अपने पास बुला कर पता लेंगी।” इसके बाद वे पुन किन्हीं गम्भीर बातों में डूब गईं। साथ ही-साथ अपना कुछ सामान सिमेट पर नैना को बिठाने के लिए स्थान भी बनाने लगीं। नैना के सामने ही एक युवती अर्ध-निद्रित अवस्था में सो रही थी। उसकी गोद में दो साल का एक बच्चा था। जिसके कुलबुलाने पर बार-बार आँखें खोल कर वह उसे देख लेती थी। जितनी बार उसने आँखें खोलीं, उतनी ही बार उसने नैना की ओर देखा। इस बार जब उसने आँखें खोलीं तो पूरे डिब्बे पर दृष्टि डाली। देखा कि दो बूढ़ियों को छोड़ कर सभी आराम से सो रहीं थीं। सोने में उन्होंने काफी-काफी स्थान घेर रखा था।

समझती हूँ। मैं यहीं पर अन्दी हूँ। बैठी रहने दें। आपके पास चन्चा है। कष्ट होगा।”

“तुम्हारी ज्ञान से मालूम होता है कि तुम पढी लिखी हो। मैं तो समझती थी कि तुम किसी गाँव की हो। क्या तुम गाँव से नहीं आ रही हो? अरे आओ न, यहाँ आकर बैठो। मुन्ना तो सो रहा है, इसे कोई कष्ट न होगा। न मुझे ही, बल्कि यहाँ बैठ कर बातें करेंगी तो दोनों को आनन्द आएगा। आओ।”

नैना ने अधिक जिद्द नहीं की। वह उठकर युवती के पास बैठ गई। फिर बोली—“आपका अनुमान ठीक है, मैं गाँव की हूँ और गाँव से ही आ रही हूँ। योही थोड़ा सा पढ़ लिया है। इसलिए उसी अन्दाज से बोल भी लेती हूँ। चर्ना हमारे यहाँ की स्त्रियों का विशेष शृङ्गार तो निरक्षरता ही है। आप कहाँ से आ रही हैं? कहाँ जायेंगी? अकेली ही हूँ क्या?”

“नहीं तो, अकेली नहीं हूँ। वे साथ हैं। पास के ढिबरे में बैठे हैं। मर्दों के साथ बैठने में मुझे अपनी स्वतन्त्रता में बाधा मालूम होती है। इसलिये मैंने जनाना ढिबरा ही पसन्द किया। लम्बी सफर, गाड़ी में तरह तरह के आदमी होते हैं। तरह-तर्ह की बातें करते हैं। लुच्चे लफ्गों की कमी नहीं। मैं इन बातों से चिढ़ती हूँ। आज कल के आदमी तो औरतों की तरफ इस तरह से घूरते हैं, मानों हम कोई इस दुनिया के आदमी ही नहीं। मैंने उन्हें कह दिया कि मुझे तो जनाने ढिबरे में ही बिठा दो। आखिर ये ढिबरे हैं किस लिये? इनका उपयोग अवश्य होना

चाहिए। वे बम्बई की एक मिल के आफिस में काम करते हैं।
 मुझे लगाने आए थे। अपनी माँ के यहाँ थी मैं। दो महीने से
 ज्यादा हो गया। क्या बताऊँ वहन, मर्दों को कभी छुट्टी नहीं
 देनी चाहिए। इसमें घर की बरबादी है। जब मैं उनके पास
 होती हूँ तो अस्सी रुपये महीने में सब काम चला लेती हूँ।
 गाना, पीना, मुन्ना का दूध, उनके दोस्तों की चाय, आना-जाना,
 बार-त्योहार-आदि के लिए भी उसी में से बचा लेती हूँ। यह
 देखती हो मेरे गले की माला—इसके लिए रुपये मैंने उनसे नहीं
 लिए। यह खर्च मैंने तीन साल की बचत के रूपों का फल
 है। दो सौ रूपों में बनी है। हम जैसे लोगों को बड़ा ही
 चौकन्ना होकर चलना पड़ता है। देखो न तीन महीने के लग-
 भग मैं अपनी माँ के यहाँ रही। तम सोचती होगी कि हमारे
 श्रीमान जी ने काफी रुपया बचा लिया होगा। क्योंकि खर्च इत-
 नरा ही रह गया था। एक आदमी के खर्च से दो आदमी का
 खर्च अधिक होता है। मैं अपनी माँ के यहाँ रही, इस लिए उबर
 का खर्च भी बच गया होगा। लेकिन तुम सनोगी तो आश्चर्य
 करोगी। हमारे श्रीमान जी ने डढ़ सौ रुपया महीना तो अपनी
 पूरी तनख्वाह का साफ कर लिया। ऊपर से मित्रों से कर्ज
 लेकर खर्च किया सो अलग। तुम कहोगी कि-बड़े खर्चीले होंगे।
 लेकिन मैं कहूँगी कि नहीं, बेचारे मुझ से भी कजूस हूँ। एक पैसा
 भी अधिक खर्च करते उनका मन हजार बार दुखता है।
 लेकिन जहाँ आदमी अकेला रह जाता है वहाँ खर्च तीन चार

गुना बढ़ जाता है। जितने खर्चे में चार आदमी मिल कर एक घर में आनन्द पूर्वक और अच्छा खाना खा लेते हैं—उतने ही खर्चे में केवल एक आदमी को होटल में गन्ना वासी और बेमनका सड़ा गला खाना मिलता है। इन्हें देखकर मुझे तो बड़ी चिन्ता हो आई। अन्ध-भले छोड़ कर आई थी। अब देखती हूँ कि आधा ही शरीर रह गया है। पेट में दर्द पाल लिया है। ग्याँसी हो गई है। बद्धजमी ने पेट में घर कर लिया है। होटल का खाना बड़ा खराब होता है। मेरे सामने बैठ कर चार फुलके खा लेते थे। अब दो फुलके रह रह कर खाते हैं। चार गुना खाने का खर्च और शरीर की यह दशा। फिर होटल का एक ढगा गाना—मर्द को हमेशा कुछ न कुछ बदल कर खाने को चाहिए—इसलिए अलावा चाट न खर्च। होटल की चाय। घर में स्त्री और बच्चे होने पर आफिस में आने के बाद आदमी उनमें मन लगा लेता है। किन्तु जब घर में कोई नहीं होता है तो बड़ी मुश्किल हो जाती है। मित्रों के यहाँ भी रोज रोज जाना अच्छा नहीं जान पड़ता। इसलिए मग्न मार कर सिनेमा में मन बहलाने जाना भी पड़ जाता है। एक सिनेमा का खर्च दूसरे वहाँ से आने जाने का खर्च। फिर मित्रों का साथ हुआ और लिहाज करना पड़ा तो डबल। इस प्रकार देखती हूँ कि घर में स्त्री के न रहने पर आदमी को तरह-तरह के नए-नए अनिवार्य खर्च करने पड़ जाते हैं। इन तीन महीनों काइन्होंने जो खर्च बताया—मैं तो दग रह गई। अब कान

पकड़ लिये। कभी रचपन नहीं करूँगी इन्हें छोड़ कर जाने का। और तो और धोनी का खर्च भी दूना हो गया। मैं छोटे मोटे रुपये हाथ से धो लिया करती हूँ और इन्हें रुमाल भी धोनी को देना पड़ा।

सच तो मैं यह जानती हूँ नैना, कि घर का खर्च बढ़ाना और कम करना जितना अन्ध्रा स्त्री जानती है, मर्द कभी नहीं समझ सकते। वे आदमी गलत ख्याल के हैं, जो यह सोचते हैं कि स्त्री को पास रखने में खर्चा अधिक बैठता है, वास्तव में उन्होंने स्त्री को अपने पास रख करके घर का खर्च देखा ही नहीं। घर में स्त्री ने रुपये खर्च कर दो आदमियों के लिये जितना सन्दर और सन्तोषदायक प्रयत्न कर सकती है उतना स्त्री से दूर रह कर आदमी आठ रुपये में भी नहीं कर सकता। और मैं तो कहूँगी कि आदमी इन झूठों में क्यों पड़े। घर की बातों की झगझग में वह अपनी शक्ति नष्ट कर देगा तो आफिस के काम में क्या मन और शक्ति लगावेगा? याक। घर की बात सोचेगा या आफिस की। घर की बात साचने में हानि है। आफिस की बात सोचने में लाभ है। क्योंकि आफिस के बारे में वह जितना अधिक सोचेगा—आफिस को उतना अधिक लाभ होगा। और लाभ ही आफिस की उन्नति है। आफिस की उन्नति सब की उन्नति है। क्योंकि आफिस को फायदा होने पर ही तो आफिस के कर्मचारियों की तरक्की होती है। इसलिये मैं सब स्त्रियों के लिये यही कहूँगी कि वे घर-बार के किसी भी

भगंड से अपने पति को परेशान न करें। घर का प्रबन्ध वे खुद करें। मैं स्वयं सब्जी लेने जाती हूँ। बाजार से आवश्यक सभी सामान खुद खरीद लाती हूँ। अरे जब वे बेचारे खर्च देते हैं तो व्यर्थ में सभी बातों में उन्हें धसीटने से क्या लाभ। एक तो आफिस की चिन्ता दूसरे घर की चिन्ता उन पर और। बेचारे आदमी ही नहीं हुए—बैल ही हुए। फिर हम हैं किस लिए ? गृहिणी कहलाती है तो उसके पूर्ण अर्थ को स्पष्ट करना चाहिए। गृहिणी का अर्थ यही है कि घरवाली वह—जो अपने घर की किसी भी बात से अपने पति को तंग न करे। मैं बहुत-सी अपनी पड़ोसिन स्त्रियों को जानती हूँ। जो पति के आफिस से आते ही उन्हें घर के काम में जोत देती हैं। बेचारा आदमी आफिस में आया नहीं कि फरमान हुआ—घर में सब्जी नहीं है, खाना नहीं बनेगा। चीनी नहीं है, चाय नहीं बनेगी। जलाने के लिये लकड़ी या कोयला नहीं है, खाना नहीं मिलेगा। बाजार जा रहे हो तो जरा मुन्ना को घुमाते लाना—और देगना, जरा एक दोती भी लेते खाना, आज फलों जगह गई थी तो मुझे बड़ी शर्म आई। यहाँ तो एक भी गहना नहीं है। अमुक की स्त्री के उसके पति के कम कमाने पर भी यह गहना है और वह गहना है। दोपहर को दोघो आया था, पैसे मोग रहा था। बनिया भी पैसे के लिए कह गया है। आदमी बेचारे काम से परेशान होकर घर में आराम की उम्मीद लेकर आता है—और देखा, उसे कैसा आराम मिलता है। अब क्या दफ्तर में काम करेगा

तबियत लगा कर वह आदमी जन कि सुबह और श्याम दोनों दायम उसे घर के भूमटों में ही सिर गपाना पडता है। वहिन, आदमी की उन्नति में उसकी स्त्री का बडा हाथ है। यदि स्त्री चतुर हुई तो उसका पति अवश्य ही एक दिन बहुत बडी तरकी कर सकता है। लो, मैं भी तुम्हारे सामने रामायण खोल कर बैठ गई। तुम भी मन में क्या कहती होगी कि अच्छी मिली जो अपनी ही कहे जा रही है, ये लो स्टेशन भी आगया।”

युवती के लेक्चर को लम्बा से लम्बा होता जाता देख कर वे दोनों वृद्धाएँ उस श्वसर की खोज में सो गई—जिसमें उन्होंने नैना को बुलाकर यह जानना तै किया था कि क्या वह दरअसल किसी के साथ भाग कर जा रही है। स्टेशन आजाने पर भी उनकी नींद नहीं गुली।

रात का धक्त था। गाडी भूसावल स्टेशन पर रुकी हुई थी। तनमुरा अपने डिब्बे में से दौड़कर उतरा और जनाने डिब्बे में नैना को देखने आया। नैना को अब तक जगती देख उसने बडे ही प्यार से पृछा—“तुम्हें अभी तक नींद नहीं आई, क्या सोने को जगह नहीं मिली ? यहाँ आराम न मिलता हो तो आगे के डिब्बे में चलो। मैं देख आया हूँ। वहाँ जगह है। तुम आगम में सो सकोगी। डर तो नहीं लगता ? पानी लाऊ। पिओगी।” पानी लाऊँ पिओगी, उसने कह तो दिया किन्तु वह तरन्त शरमा गया। क्योंकि पानी वह लाता जिसमें। उसके पास लोटा तो था ही नहीं। फिर उसने पृछा—“भूय लगी होगी तुम्हें, थोडी मिठाई ले

आऊँ ? क्या कहती हो चलती हो उस डिव्वे में ?”

नैना ने अपनी गठरी से लोटा निकाल कर कहा — “प्यास तो लगी है । तुम्हें तकलीफ क्यों दूँ । मैं ही जाकर ले आऊँ । भूख नहीं लगी है । इस डिव्वे में तकलीफ तो जरूर है, लेकिन वह— युवती की ओर सकेत करके—इनके साथ के सामने कुछ भी नहीं है । मैं तो यहीं बैठना पसन्द करूँगी । हाँ, अब डर नहीं लगता । तो मैं पानी ले आऊँ । तम अपने डिव्वे में चले जाओ— मैं वहीं पानी पहुँचा दूँगी ।” तनमुख्या ने नैना के हाथ से लोटा ले लिया, फिर बोला— “डिव्वे से उतरकर यह कहने नहीं आया हूँ कि तुम्हें प्यास लगी है - और उतर कर पानी पी लो और मुझे भी पिलाओ । मैं अभी लाए देता हूँ । गाड़ी से उतरना मत । नहीं चल देगी तो यहीं रह जाओगी । मैं पानी लेकर अभी आया ।” इतना कह कर तनमुख्या नल की ओर पानी लेने चला गया ।

नैना ने युवती की ओर मुड़कर कहा ‘जीजी, मुझे तुम्हारी बातें बहुत अच्छी लगती हैं । मैं तो सच कहती हूँ । भाग्य से ही इतने अच्छे लोगों का साथ होता है । यह अच्छा हुआ कि तम भी चम्बई ही जा रही हो, साथ रहेगा । कहीं बीच में ही उतर जाती, तो मन बड़ा दुःखी होता । आपके पतिदेव नहीं आए ?”

“आपके तो आ गए ।” रहकर युवती ने नैना को लुटकी भर-ली । “अब हमारे वे दिन गए कि जन नींद खुली, उठ बैठे । तुम्हारे पति देव बड़े अधीर हैं जी । झट से दौड़ पड़े । सोचा होगा कोई उठाकर न ले गया हो । यना इतनी मुन्दर बहू इस जन्म में नहीं

मिलने की क्यों ?” उसने आँगें नचाकर पृछा।

“हटो, जी जी। तुम तो ऐसी मसरारी भी करती हो। मैं नहीं पोलूँगी।” नैना के मन में हिलोरें उठने लगीं।

युवती बोली “मालूम होता है, ब्याह अभी ही हुआ है। बहुत खुले हुए मालूम पड़ते हो दोनों और बहुत कम खुले हुए भी। क्या तुम भी चम्बई जा रही हो।”

ब्याह के प्रश्न को टालने की गरज से नैना तुरन्त बोली—
“हाँ चम्बई ही जा रहे हैं। तुम अपना पता बता दोगी, तो मैं तुम्हारे यहाँ गेज आया करूँगी।”

“मालूम होता है, तुम पहली बार चम्बई जा रही हो। अरे पगली, वहाँ गेज कोई भी किसी से नहीं मिल सकता। चम्बई इतना भारी शहर है कि एक मोहल्ले में रहने वाले लोग भी महीनों तक नहीं मिल पाते। क्या तुम्हारे पतिदेव ने यह नहीं बताया। वह लो, पानी भी आगया। बड़ भोले मालूम होते हैं तुम्हारे देवता। देवो तो कितनी हड़मडी से चले आ रहे हैं। जैसे गाड़ी तुम्हें लिए जा रही है—और वे यहीं छूटे रहे जा रहे हैं।”

तनमुखाने पानी का लोटा नैना को दे दिया। फिर कुछ पूछने की भूमिका बाँधने के सिलसिले में कुछ देर गड़ा रहा। गाड़ी ने सीटी दे दी। नैना बोली—‘बस, पानी आगया, मुझे अब किसी चीज की जरूरत नहीं है। आप जाकर अपने डिब्बे में बैठ जायें ?’

पहली बार तनमुखाने अपने जीवन में किसी स्त्री के मुँह से ऐसा ‘आप’ सुना। इस ‘आप’ में क्या भरा था, वह रोजने का

प्रयत्न करने लगा । उसके मन में गुद-गुदी उठने लगी । नैना ने उसे 'आप' कहा । उसने मन में कहा—इस 'आप' को कहाँ रखूँ नैना । मैं तो बाबला हुआ जा रहा हूँ । इस 'आप' में तुमने क्या कहा है । क्या तुमने नहीं सुना कि मैंने तुम्हें बहिन कहा है । उसे लगा जैसे बहिन कह कर वह नैना से दूर हो गया । सदानुभूति गयी दी है । उसने अपने हृदय में गहरे बैठ कर देखा । चोर बैठा है । समय की तार में है । लेकिन चाहे कुछ हो जाय । नैना के सामने पह कभी गिरेगा नहीं । वस, वह जैसा कहेगी, वैसा ही करेगा । वह देख रहा है कि अपना सम्पूर्ण हार रहा है । आज उसे बार-बार पछतावा हो रहा है कि ज्यों नादानी की कि बहिन कह दिया नैना को । चाहे कुछ हो इस 'आप' में नैना की ओर से नैना का भाई कदापि नहीं है । गाड़ी बड़ाधड़ जा रही थी । तनसुरा के मन में नाना भावनाएँ दौड़ रही थीं । उसे याद आ रहा था बार-बार नैना का वह प्यार भरा चेहरा और वे बड़ी-बड़ी आँखें जिन्होंने 'आप' में न मालूम किस वस्तु को उठेल दिया था । उसकी इच्छा हुई पानी का लोटा देते समय उसकी उँगलियों काश नैना की उँगलियों का स्पर्श कर पातीं । लेकिन उसने यहाँ तुरन्त अपने आप को सावधान कर दिया—कहीं नैना का यह भाव न हुआ तो । कुछ भी हो उसकी ओर से नैना को कभी ऐसा आभास नहीं मिलेगा ।

युवती का बच्चा जाग उठा था । पानी के लिये हठ कर बैठा । उसके पास पानी नहीं था । नैना के लोटे में पानी अभी ज्यों का

त्यों भगा था। उसने युवती से प्रार्थना की कि वन्चे को पानी पिला देने में यदि वह मोटे हर्ज नहीं मानती तो पिला दे।

युवती ने कहा—‘तुम्हारा सकैत गायब जात पोंत की ओर है नैना। हमारे देश का यह दुर्भाग्य है कि यहा अनेकों जातियाँ-उपजातियाँ बनी हुई हैं। यहीं तरु ही होता तो काई बात नहीं थी। और देशों में भी ऐसा है। लेकिन जातियों की आँख में छूआछूत जो चुसी हुई है उसने समाज को रोग्यला कर दिया है। लेकिन प्रसन्नता की बात है कि अब लोग जागरूक हो गए हैं। छूआछूत को बुरा मानने लगे हैं। मैं भी उनमें से हूँ। लाओ इसे पानी पिला दो। लेकिन तुम प्यासी रह जाओगी।’

“मेरी बात भली कही तुमने। वन्चे से बढकर भला आरम्य हो सकता है।” नैना ने कहा।

युवती बोली—“यह बात अच्छी तरह तो उस समय समझ में आएगी। जब नन्हा गोद में होगा।”

नैना की आँखों में प्यार भर आया। गालों पर लाली ढीङ आई। अपने शरीर को धोती से ढकने का प्रयास करके ओठों में मुस्कुराकर उसने कहा—“हटो जीजी, मैं नहीं बोलूँगी। दबते हुए आदमी को बारबार दबाना अच्छा नहीं लगता।”

युवती ने कहा—“दबने वाली चीज को ही तो बार-बार दबाया जाता है। और दबने पर ही अच्छा लगता है। क्यों है न ? अच्छा लगता है न बत्ताओ ? दबने पर दबने वाले को अच्छा लगता है—या दबाने वाले को, कुछ तो बोलो ?”

“मे कुछ भी नहीं बोलूँगी। ऐसी बात कहोगी तो मैं सो जाऊँगी, मुँह फेरकर।” नैना बोली।

“अभी तक कितनी बार मुँह फेर कर सोई हो, जरा बताना। मुझे तो नहीं दीखता की एक बार भी सोई हो। देखूँ।” इतना कहकर युवती ने नैना की ठोड़ी पकड़ कर ऊँची की। नैना के रोम-रोम में गुदगुदी हो आई। उसने युवती की गोद में मुँह छिपाकर कहा—“जीजी, मे तुम्हारे हाथ जोड़ती हूँ।”

“देगो नैना, अब हम दोनों सग्नियों हो गई हैं। आपस में एक दूसरे की बात छिपाना पाप है। सग्नियों तो ऐसी बातें करती ही रहती है। इसमें लज्जा की क्या बात है।”

“तुम ठीक कहती हो जीजी, लेकिन मैं तुम्हें इससे पहले अपनी बड़ी बहिन मान चुकी हूँ। मैं तुम्हें श्रद्धा करने लगी हूँ।”

“अच्छा तो यह बात है, तुम हो बड़ी चालाक। गुरु जी बना कर मुझसे तो मध कुछ ले लेना चाहती हो और खुद के पास देने के नाम से गुरु जी को दक्षिणा तक नहीं।”

“शिष्या ने तो अपने आप को सम्पूर्ण समर्पित कर दिया है गुरुदेव।”

“ना, ना, ना, बाबा—यह समर्पण-इत्यादि का भगडा बडा बेढव है। मुझे सब समर्पित कर दोगी तो—तुम्हारे पतिदेव बेचारे क्या करेंगे। केवल चलती गाडी में पानी ही पिलाना उनके भाग में रहेगा क्या?”

कोंधे पर हल रखे जगू अपने बैलों के पीछे पीछे जंगल की ओर जा रहा था। सहसा उसे कुछ दूरी पर रोने की आवाज सुनाई दी। वह रुक गया। डधर उबर मान लगाकर मुनने लगा। जिधर से रोने की आवाज आरही थी, उबर मुड़ा। देखा कि एक झाड़ी की ओट में बैठा-बैठा रामू रो रहा था। उसने पूछा—
 “क्यों रोते हो रामू, क्या बात है, माँ की याद आ गई ? रोना नहीं चाहिए। क्योंकि अब रोने से फायदा नहीं है। मुस्मान ही अधिपति है। कोई और दुख हो तो मुझे बताओ भैया।”

अपनी माँ के मरने के बाद रामू को पहिली बार ऐसे सहा मुभूति पूर्ण शब्द सुनने को मिले। उसका हृदय और भी भर आया। अब वह जोर-जोर से ढोंढे मार-मार कर रोने लगा। जगू ने हल नीचे रग दिया। फिर रामू के पास जाकर उसे अपने हृदय से लगा कर बोला—“रोओ नहीं रामू। सपके माँ पाप बैठे नहीं रहते। एक न एक दिन मरते ही हैं। तुम तो पढ़े-लिखे हो, तुम्हें समझाना हम जैसे अतपढ लोग क्या जानें ? रोओ मत।”

रामू ने रोते-रोते कहा—“मुझे माँ के मरने का इतना दुःख नहीं है दादा—जितना कि मेरी पढाई छूटने का। मेरी परीक्षा के दिन बहुत ही पास पास आते जा रहे हैं और मामाजी मुझे

खाता है। लडका दिन भर काम करता है। पैसे लाता है मेहनत मजदूरी करने। और उन पैसे को वह घर बैठे बैठे आराम से खाता है। उस कुँए के पास के पेड़ के नीचे दिन भर बैठ बठा तम्बाकू फँका करता है। आने जाने वाले आवसियों को अपने पास बिठा लेता है और घण्टों गाँव की बहू बेटियों की बातें करता रहता है। अरे उस दिन मैं उधर से निकल गई, तुम्हें क्या कहूँ बेटा। गाँजे की बद्बू से मेरी तो नाक फट गई। बातें सुनी तो कान रगड़े हो गए। मैं तो कहती हूँ यह भूखन इस लडके की जिन्दगी को धूल में मिला देगा। अ ह ह ह क्या क्या दुख नहीं उठाए उस बेचारी कृष्णा ने इस बच्चे के पीछे।” फिर जग्गू के और पास जाकर बोली—“जग्गू, इस लडके की आत्मा दुआ देगी तुम्हें बेटा, किसी तरह गाँव वालों को तो राजी कर ले—कि इसकी मजदूरी के पैसे इसे ही मिला करें। इस बच्चे की सब की सब कमाई गाँजा-भँग में ही उड़ती है रे।” और अधिक पास सरक कर—“बेटा तुम्हसे क्या कहूँ। एक बार तनसुखा के चारे में मैंने झूठ बोला है। पर अब झूठ नहीं धोल्गी—फल भूखन ने रामी को आठ आने दिए और कहा—और जरूरत पड़े तो और ले लेना। लेकिन फल उस तालाब की पाल पर जरूर मिलना। बोल तो बेटा। अरे इस अनाथ बच्चे की कमाई इस प्रकार बरबाद क्यों हो। यह गाँव वालों को क्यों होने देना चाहिए। फल मैं जरूर उधर जाऊँगी। इनका ऐसा भाएटा फोड़ूँगी कि जन्म जन्म तक याद करेंगे—

जैसा सोच तो बेटा । अरे बेचारा राम् तो पौथी पतलों के लिए तगमे और यह मुआ उसकी कमाई से पाप कर । मे तो इसे कभी परत्पाप्त नहीं करूँगी । कुछ भी हो बेटा राम का पढ़ना फिर लग जाय ऐसा काम करदो । मैं भी आज दीनू से कहूँगी । अर वह लड़का तो पढ़ने के लिए रोता है रोता बेचारा । किस वच्चे मे हैं ऐसे गुण ? हमारे इन्हीं को देखो न पढ़ने का नाम लेते ही मों-चाप को मारने दौड़ते हैं । जय इसका पढ़ने मे मन लगता है तो इसका डोल जरूर होना चाहिए । अरे अपने ही गाँव का नाम ऊँचा होगा । पढ़-लिख कर पटवारी हो जायेगा तो हम लोगों को ही मुग्न मिलेगा । इतना दुग उठाएगा तो सच कहती हूँ—यह बच्चा मर जायेगा । तुम जरूर कुछ करो । अरे, दुनिया मे आकर बड़े-पड़े पाप किए है जगू । कुछ पुत्र भी करना चाहिए

अच्छा बेटा । जा रही हूँ । कृष्णा के उपकार तुम पर भी कुछ कम नहीं हैं । तुम्हारी घरवाली को वह नही समझाती तो आज तुम्हारा घर पर नहीं होता जगू । घन्चों का मुँह देराना भी नसीब नहीं होता । भूले तो नहीं हो न । मे जानती हूँ, पैसों लत्तों से तुम उसकी मदद नहीं कर सकते । न सही । ढोड धूप ही कर दो वच्चे के लिए । अच्छा तो म चली । ' इतना कह कर दीनू की दादी भद्र पट चल दी ।

जगू सोचने लगा । आदमी इतने नीच हो सकते हैं । क्यों मनसुगा ने इस गटे आदमी के हाथ इस वच्चे को सौंपा है ।

X

X

X

X

गाँव वालों ने जब देखा कि भूखन किसी भी तरह रामू को मदरसे भेजने पर राजी नहीं होता, तो वे एक एक करके उठ कर चलते बने। थोड़ी ही देर में जब सब चले गए तो भूखन ने बीड़ी सुलगाई और पीने लगा। एकाएक उधर से रामी निकली। भूखन तुरन्त उठ कर उसके पीछे पीछे हो लिया।

रामी सगटा बन्ड भागी जारहो थी। उतनी ही जल्दी में दूसरे रास्ते से भूखन भी उसकी दिशा में चल पड़ा। थोड़ी ही देर में दोनों अलग अलग रास्तों से तालाब के पास वाली उस घनी झाड़ी में अदृश्य हो गए।

तालाब की उस निर्जन पाल से बड़ी दूर जाकर रामी खड़ी हो गई। भूखन भी कटीले झाड़ों से कपड़े फड़वाता कूदता फाँदता, झर्र मारता उसके पास जा पहुँचा। बोला—“कहो जी। है न हम बात के पक्के, कैसे आगए।” इसका रामी ने कोई जवाब नहीं दिया। भूखन फिर बोला—“ओहो। नाराज हो गई। बोलती नहीं।” तब भी रामी कुछ नहीं बोली। भूखन बोला—“समझ गया तुम क्यों नहीं बोलती हो। यह देखो।” इतना कह कर उसने अपनी जेब के पैसों को खनखनाया। अब रामी हिली। भूखन उसके अत्यन्त पास सट कर खड़ा हो गया, बोला—“अब भी भरोसा नहीं होता। अच्छा चार आने पहले ले लो। अब तो हँसो।” इस पर रामी बोली—“हँसने से क्या मिल जायगा। भूखन। मेरे हँसने से क्या तुम्हारा पेट भर जायगा।” और हँस कर उसने अपने पीले-पीले मैले लम्बे लम्बे दात बाहर निकाल

दिय। हँसने से उसका चेहरा और भी विकृत हो गया। गालों पर अनेकों सल पड़ गए। लगता था जैसे अमचूर धूप में सूखकर सिकुड़ रहे हों। शरीर से बढबू छूट रही थी। फिर भी माननी की तरह भूखन में आकर्षण पैदा करने के लिहाज से मोली—“जाओ जी, तुम बड़े बों हो। जरा भी सबर नहीं होता। भट से पीछे-पीछे हो लिए।”

“इस परत जो मांगेगी सो मिल जायेगा रामी, मन कावू मे नहीं है।” भूखन अधीर भापा मे बोला। आँखें लाल हो रहीं थीं। मानो नजे मे किसी का खून करने पर तुला हुआ हो। रामी सखार भरे मुँह से बोली—“मन कावू मे नहीं है तो मे क्या करूँ ? क्या मैंने सब के मन कावू मे करने का ठेका ले लिया है। जिस मो देखो वही कहता है मन कावू मे नहीं है रामी।” भूखन बे मरु हो चुका था। उसने जैसे ही रामी को हाथ पकड़ कर खींचने की कोशिश की, पीछे से मुनाई दिया ‘गबरदार।’ दोनों ने जैसे किसी ने आसमान से जमीन पर पटक दिया। नीन् की दादी गड़ी थी। भूखन को मारो तो मन नहीं। शरीर से पसीना बहन लगा। रामी अपनी ओढ़नी ठीक करके उधर-उधर देगाने लगी कि फिर से भाग जाए। दीन् की दादी बोली—“गबरदार चुड़ैल जो भागने की कोशिश की, गाँव भर का तूने बिगाड़ दिया। अरे नीच अघबूदी हो गई। अब भी पाप की कमाई रगाना नहीं छोड़ती। कितनों ही के तो घर गगई। अब भी अपना मुँह लप लपाती है। नीच, तुम्हे अपने सिर मे आप सफेद गालों की जरा

भी चिन्ता नहीं। डायन। तूने गांव के किसी भी आदमी को नहीं छोड़ा, सब पर डोरे डाल चुकी है। बहुत दिनों से मैं तेरी फिकर में थी। आज अब तेरा चालान करवाती हूँ इस गाँव से। और तू पापी! पराई औरत को पैसे देकर फुसलाता है। उस अनाथ बच्चे की कमाई से व्यभिचार करता है। तेरे रोम-रोम में कीड़े पड़ें चाण्डाल। आज देख तो सही गाँव में तेरी क्या बशा करवाती हूँ। वो हड्डियाँ तुड़वाऊँगी कि जिम्दगी भर याद करेगा। गावों में कीड़े पड़ें और लोग देरा-देख कर हँसें। चलो तुम दोनों चलो। हो लो मेरे आगे। तुम में से एक को भी छोड़ना पाप है। बेचारे रामू की पढाई छुड़वा कर उसे तो भेजता है, खेतों में मजदूरी करने। और तू औरतों को पैसे चटा-चटा कर पाप-कर्म करता है। गाँव में भला आदमी बनता है। आज सब निकालूँगी तेरा पाखाण्डीपन, चल तो सही मुण।”

दोनों सिर नीचे किए सुनते रहे। एक भी उनमें से नहीं बोला। दीनू की दादी आगे बढ़ी। जमीन पर पड़ी हुई एक आड़ी टेढ़ी लकड़ी उठाई। दो तीन चार राम्मी के पुट्टों पर खींच कर वह मारी की राम्मी हाथ हाथ कर उठी। उसके पैरों में जा पड़ी। बौली—“दादी माँ! अब आज के पीछे, कभी ऐसा पाप करते। देरों तो मुझे जिन्दी जला देना, पर आज छोड़ दो अब कभी मैं ऐसा काम नहीं करूँगी। तुम्हारे चरणों की सीर्गध खाती हूँ। मुझे बचालो। मेरा, घरवाला सुनेगा तो चीर कर मेरे दो। दुकड़े कर डालेगा। मेरे दोनों बच्चे बिलख कर मर जाएँगे।”

“तो ऐसा पहले ही सोचना था। क्या मर गई थी यहाँ आने के पहले और इस पापात्मा से आठ आने के पैसे णँठ कर पल्ले में बाँधने के पहले। अब मैं तुम्हें किसी भी तरह नहीं छोड़ूँगी चुड़ैल। आज मैं तुम दोनों को ही इस गाँव से निकालना कर छोड़ूँगी। चल रे, मुए। आगे होकर लम्बा वनता चल।” इस पर रामी ने दीनू की दादी के दोनों पैर जोर से पकड़ लिए। बोली—“नहीं माँ, मैं यहीं मर जाऊँगी पर जाऊँगी नहीं। आज तो तुम्हें मुझे बचाना ही पड़ेगा।”

“अगर बचना ही है तो उठ, मेरी बात सुन।” दीनू की दादी बोली।

“एक नहीं एक हजार बात कहो माँ। मैं तुम्हारे पैरों में पड़ी पड़ी सुनूँगी।”

“तो सुन, तुम्हें पचों में यह कहना पड़ेगा कि भूतान ने तेरे साथ जबरदस्ती करने की कोशिश की—और मैंने तुम्हें बचाया। मैं नहीं होती तो तेरा न मालूम क्या हाल होता। बस। इतना कह देना, बाकी की बात मैं सम्हाल लूँगी। इस नीच को बदनाम करके गाँव से निकालना है। उस अनाथ बच्चे को इसने बहुत नग कर रखा है। आज मजा चखाती हूँ। यह भी जिन्दगी भर याद करेगा कि किसी से पाला पड़ा था।”

भूतान धुरी तरह फँसा था। वह थर थर काँपने लगा। मन में सोचा—यह चुड़िया आज मेरा सत्यानाश करके ही रहेगी। रामी तो हूट रही है। इसे यह बचा भी लेंगी। लेकिन मैं मर जाऊँगा।

जग खुशामद करके ही देखलूँ । कोई रास्ता निकाल कर बचाले । वह भी उसके पैरों में गिर पड़ा । बोला—“माँ, पाप जो हो गया है सो तो हो ही गया है । लेकिन आज तुम्हें वचन देता हूँ कि आगे अब जिन्दगी में यह बात कभी नहीं होगी । मैं तुम्हारे चरणों की सौगंध खाता हूँ ।” दीनू की दादी अपने पेर बचा पीछे हट कर बोली—“चुप रह चाण्डाल । गंदे मुँह से मेरा नाम न ले । गाँव को गदा करने वाले पापी । अब तेरा यहाँ कोई काम नहीं ।”

इस पर भूखन गिड़-गिड़ाया—“माँ । जब तुम इस पापिन को बचाने का रास्ता निकाल सकती हो तो—एक बार मुझे भी बचा सकती हो । मैं भगवान को साक्षी रखकर कहता हूँ कि अब ऐसे बुरे कर्म नहीं करूँगा—नहीं करूँगा—मुझे बदनामी से बचालो—इस बार सिर्फ इस बार । अब कभी ऐसा देखो तो मेरे मुँह में गरम करके लोहा घुसेड देना ।”

उस पर दीनू की दादी बोली—“मैं तुम्हें एक बात पर छोड़ सकती हूँ, बता, है मजूर ?”

“अगर तुम इस बदनामी से बचाती हो तो मैं आग में कूदने के लिए भी तैयार हूँ । बोलो माँ । बताओ मैं क्या करूँ ।”

“कल से रामू को काम छुड़ाकर मंदरसे मे पढ़ने भेज । और देख कि उसकी परीक्षा होने तक तू उससे कोई काम न ले । कल से तू काम पर जा और उसने लिये कपड़ा, गाना और पोथी लाकर दे । धोल क्या कहता है ।”

“तुम्हारी आजा सर माथे पर सा । कल से रास पढने जायगा । मैं उसे कोई तकलीफ नहीं होने दूँगा ।

१०

दो वर्ष पुरानी तेल में गदी टोपी को हटा कर गजी खोपड़ी को गुजलाते हुए हेडमास्टर मुगाचरण जी ने अपने सहयोगी जगजीवन राम को बुलाकर कहा—‘जगजीवन जी । इस चारतरकी की कोई उम्मीद नहीं रही । घुरा हो राम् की मा की मौत का जो हमारी तरकी को भी इस दुनिया से उठा ले गई ।’

यह एक अपर प्राइमरी स्कूल था जहा चार दर्जे तक पढाई होती थी । दो मास्टर थे जो तीन तीन दर्जे पढाते थे । हेड मास्टर की तनखाह बीस रुपये थी जो चार वर्ष में रामू के मात स्कूलों के बालकों में प्रति वर्ष अन्तल आने से बढ़ कर पच्चीस रुपये हो गई थी । जगजीवनराम सहायक अध्यापक थे जिन्हें तेरह रुपया महीना मिलता था और चार वर्षों में रामू के अच्छे फल के कारण प्रति वर्ष बढ़ कर अठारह रुपये हो गये थे । दोनों अध्यापक इस कारण रामू को बहुत ही प्यार करते थे । कभी-कभार तो नहीं और चंडे, प्रेम से पढाते थे । हर महीने बारी-बारी से दोनों अध्यापक अच्छी पढाई के उपलक्ष में रामू को ‘दो-दो अंगुल’ की पेन्सिल इनाम दिया करते थे । परीक्षा के दिनों में उसे अपने यहाँ ही रख लेते । घर-भर का काम-करवाते, बर्तन मँजवाते, पानी

भरवाते, कपड़े धुलवाते और घर साफ करवाते। बचे समय में अपने बच्चों को भी सौंप दिया करते। जिन्हें उसे खिलाना पड़ता। अ, व और एक से लगा कर चार क्लासों को मिला कर छ ज़ुमला दर्जों में कोई पचास विद्यार्थी पढ़ते थे। किन्तु इन्स्पेक्टर के दौरे के समय कुछ और छोटे-मोटे बालक-बालिकाओं को घेर-घार कर स्कूल में बिठा दिया जाता था, जिससे उपस्थिति बढ़ी हुई प्रतीत होती। क्योंकि इन्स्पेक्टर कई बार धमकी दे चुके थे कि बालकों की उपस्थिति कम होने की सुरत में स्कूल को किसी भी समय तोड़ दिया जा सकता है। लेकिन डधर रामू के बराबर अब्बल आने ने इन्स्पेक्टर को बहुत खुश कर दिया था। और दोनों अध्यापक उनके बड़े ही कृपा-पात्र होकर प्रति वर्ष तरक्की भी पाते रहते थे।

रामू के दो महीने गैरहाज़िर रहने से दोनों अध्यापक बड़े ही चिन्तित हो उठे। एक तो उसका चौथे क्लास में होना—दूसरे उसकी माता की मृत्यु—तीसरे स्कूल में नहीं आना—यह उसके ऐन मौके पर हाज़िर होने पर—अब्वल नम्बर न आ सकने में शका उत्पन्न कर रहे थे। और अब्वल न आने पर अध्यापक महोदयों को तरक्की न मिलने का भी सवाल था। अतः हेडमास्टर बड़े चिन्तित हो उठे और उन्होंने जगजीवनराम को बुला कर रामू के बारे में बात छेड़ी।

जगजीवनराम बोले—“सचमुच, बड़ी चिन्ता का विषय है। यदि आप आज्ञा दें तो मैं रमेश को उसके गाँव जाकर देखूँ कि आखिर

घात क्या है ? उसकी माँ को मेरे काफी समय हो गया । अब तो उसे स्कूल आना चाहिये । परीक्षा का समय भी निकटतम आता जा रहा है । चौथे दर्जे की पढ़ाई कम गतम करेगा ?

सिर पर टोपी को जमाते हुए मुखचरण जी बोले—“इसी लिए मैंने आपको बुलाया है । मेरा खयाल है कि आप उसके भाँव हो ही आँ तो अच्छा है । यदि ऐसे लड़के को घर से खर्च देकर पढ़ाया जाय तो भी लाभ ही समझिये । देखिए न, इन चार वर्षों में कितनी सरकारी मिल गई । अच्छे अच्छे अध्यापक इस स्कूल में अपना तनखिला कराने में इच्छुक हो रहे हैं । ऐसे लड़के का मिलना तो सोभाग्य की बात है । स्कूल की नाक है नाक । देखा न, सैकड़ों लड़कों में हर साल पहला नम्बर लाता है । छाती पालिस्त भर फूल जाती है—जब इन्स्पेक्टर साहेब खड़े होकर हमारे स्कूल का परीक्षा फल सुनाते हैं । मेरा खयाल है—इस वक्त घड़ी में साढ़े दस बज रहे हैं । आप यहाँ से चल दें । साढ़े ग्यारह को पहुँच जायेंगे । जाइए, तैयार हो जाइए—हाँ, फान पर से अपना जनेउ तो उतारिये ।”

जगजीवनराम शर्मा गए । उन्होंने तुरन्त फान पर से जनेउ उतार कर उसे कुर्ते के अन्दर कर लिया । फिर चोटी सहलाने लगे । इस पर मुखचरण जी बोले—“चलिए, छोड़िए, यह तो आपकी पुरानी आदत है । दिन दिन भर आप फान से जनेउ नहीं उतारते हैं, यह मैंने अक्सर देखा है । लड़के भी मजाक बनाते हैं । लेकिन स्मरण रहे, इन्स्पेक्टर साहेब जब स्कूल का

मुआयना करने आएँ, तो आप ग्वरदार रहें। उस वक्त कान पर जनेऊ टेंगा रहना—बड़ी भारी प्रसावधानी होगी। दूसरे आप कोट के बटन कभी नहीं लगाते। यह भी एटीक्वेट के बाहिर की बात है।” इतना कह कर प्रधान अध्यापक, स्वयं अपने कोट के टूटे हुए बटन वाले छेद को रसीच-रसीच कर उसे ठीक करने का प्रयत्न करने लगे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि जगजीवनराम उनकी उस क्रिया को बड़े ध्यान से देख रहे हैं, तो उन्होंने कहा—“देखिए आप यहीं देर लगा देंगे ता फिर गाँव पहुँचने में बड़ी देर हो जायगी। सब लोग खेतों में काम करने चले जाएंगे तो फिर वच्चे का पता लगाना कठिन हो जाएगा। आप तैयार होकर नुरन्त चल दीजिए।”

“बहुत अच्छा जी, मैं अभी चला।” कह कर जगजीवनराम तैयार होने चल दिए। पुराने कोट पर फटा डुपट्टा डाल हाथ में छड़ी ले वह एक कोठरी में घुस कर ठपाठप की आवाज करने लगे। बात यह थी कि पोस्ट आफिस भी इसी स्कूल में था। और जगजीवनराम के सुपुर्दे इसका काम किया गया था। जिसके लिए इन्हे पाँच रुपये अलाउन्स मिलता था। दो बार डाक तैयार करते थे। एक सुबह और दूसरे शाम को। इस समय वे सुबह की डाक तैयार करने में लग गए थे। जगजीवनराम बड़े सीधे आदमी थे। कभी-कभी वे चिट्ठियाँ भी स्वयं बाँट आया करते थे।

देर होती देर हँड मास्टर साहेब को मोध-आने लगा।

वे जगजीवनराम से उनका काम लेकर खुद करने का विचार करके पोस्ट आफिस के कमरे की ओर चले। लेकिन दो ही कदम चले थे कि दरवाजे में धगल में कितानि दगा उन्हे रामू म्पिआई दिया। वे उछल पड़े। उनके मुँह से जोर से निकल पड़ा—“आ गया, आ गया, जीनवराम जी रामू बेटा आ गया।” इतना कह कर उन्होंने रामू का हाथ पकड़ा और वे उसे पोस्ट आफिस के कमरे में जगजीवनराम को दिखाने ले गए। जगजीवनराम ने देखते ही कहा—“शाबाश बेटा रमेश। तुम आ गए बड़े बहादुर हो।” इसके बाद दोनों अध्यापकों ने बारी बारी से रामू को उसकी माँ के मरने पर दुःख न मनाने के लिए समझाया। माँ की याद में जब रामू के आँसू निकल आए तो दोनों मास्टर्स ने बारी-बारी से उसके आँसू अपनी अपनी दोतियों से पोंछे। उसे चुप किया।

+ + + +

जगजीवनराम ने कुर्ते की बाँटें ऊपर चढ़ा कर कहा—“रामू बेटा। जरा बह स्टूल तो यहाँ उठा लाओ। क्यों मास्टर साहेब—‘सादा जीवन बितानो’—यहाँ लगा दें? दरवाजे से घुसते ही दृष्टिगोचर होगा।”

जब मैं से चश्मा निकाल उसे नासिकासीन कर हेड मास्टर मुखचरण जी बोले—“नहीं जगजीवन जी, यहाँ तो—‘होर्ड है जो राम रुचि राखा, वो करि तर्क बढ़ावहिं शाखा’ लगाना चाहिए। क्योंकि इस नील से तुलसीदास जी की तरवीर टाँगी

जाएगी—केशव को मैंने भेजा है। लेकर आता ही होगा, उसके पिता से कह कर आया हूँ।”

“तो स्टूल फिर वहीं रखो वेदा राम् । क्यों साहेब । वहाँ सामने कैसी रहेगी यह तख्ती ? ‘सदा ऊँचे विचार रखो’—के पास।” हथौड़ा उठाते हुए जगजीवनराम सहायक अध्यापक ने पूछा।

“सुन्दर, अति सुन्दर, वाह। क्या कहने मास्टर साहेब। ‘सादा जीवन बिताओ’—‘सदा ऊँचे विचार रखो।’ कैसा मेल बैठा है। क्या कहने, कितने सुन्दर अक्षर बने हैं।”

“अक्षर तो एक या दो क्या सभी तरितियों के अति सुन्दर हैं। बहुत प्रसन्न होंगे इन्स्पेक्टर साहेब इन्हे देख कर। अच्छा साहेब, तो, यह तो यह हुआ।” तख्ती को टोंग कर जगजीवनराम स्टूल से नीचे उतर आए।

इसके बाद राम् की सहायता से जगजीवनराम और मुखचरण जी ने स्कूल की सभी दीवारों को—‘जा पर जाकेहु सत्य सनेहु, तेहि सो मिलहि न कछु सन्देह’—‘कृष्णात् परमं तत्त्व किमपि मह न जाने’—‘सर्व जीवों पर क्या करो—‘मुँह से कभी बुरे शब्द मत बोलो’—‘दया धर्म का मूल है’—‘लालच कभी मत करो’—‘सदा सच बोलो’—‘बिनम्रता ही महान मनुष्यत्व है’—‘सोंच बरोबर तप नहीं, भूठ बरोबर पाप’—आदि अनेकों सुन्दर अक्षरों में लिखी गई तक्तियों से—सजा दी। स्कूल के प्रधान-द्वार पर बहुत बड़े-बड़े अक्षरों में ‘सुखागतम्’

लगा दिया गया। स्कूल के धगीचे में जाने वाले मार्ग पर भी—
“आनन्द विलास वाटिका”—टोंग दिया गया।

दूसरे लड़कों ने स्कूल के अन्दर और बाहर तथा धगीचे में इधर से उधर तक रंग-विरंगी कागज की लगिगियों तान दीं। स्कूल में चारों ओर उत्साह छा गया। दूर-दूर के विद्यार्थी जो परीक्षा में सम्मिलित होने आए थे इस बढ़िया सजावट को देखकर प्रसन्नता प्रकट करने लगे।

डाक्टर गुप्ता रोज ही इस स्कूल के सामने से होकर अस्पताल जाते थे। उनको आते देख मुखचरण जी हेडमास्टर ने जगजीवन राम से कहा—“मास्टर साहेब, डाक्टर साहेब आ रहे हैं—जग उन्हें रोक कर सत्र दिया दें तो कैसा रहे।”

‘अति उत्तम। अति सुन्दर। अवश्य दिखाया जाय। आखिर हमने और लड़कों ने इतना परिश्रम किया है तो क्यों ? वे आ गए, रोक लीजिए।’

दोनों मास्टरों ने आगे बढ़कर डाक्टर साहेब को नमस्कार किया। डाक्टर साहेब ने उड़ी ही मृदुल हँसी के साथ अध्यापक महोदयों के नमस्कार को अभिवादन करके पृच्छा—“ओ हो। आज तो आपने स्कूल की काया पलट ही कर दी। यहाँ से वहाँ तक नवीनता ही नवीनता। कितना नयनाभिराम द्रश्य सजा कर दिया है आप लोगों ने। आज आने वाले हैं नया इन्स्पेक्टर साहेब ?”

“जी हाँ, आज तीन बजे की गाड़ी से आने वाले हैं। यदि

समय हो और कष्ट न हो तो जग स्कूल के भीतर चलेक देर लें तो बड़ा सन्तोष होगा। बच्चों ने परिश्रम किया है। उनका उत्साह बढ़ जायगा।” सुगचरण जी हेडमास्टर ने कहा। जगजीवन राम ने भी आग्रह के साथ हा में हाँ मिलायी।

“अवश्य, अवश्य, मुझे ऐसे दृश्य देखने का बड़ा चाव है। हम भी अपने स्कूल को ऐसा ही सजाया करते थे। चलिए।”

भीतर पहुँच कर डाक्टर साहेब ने देखा तो आश्चर्यचकित हो गए। बोले—“इतनी तरितियों को छपाने में तो बड़ा प्रयत्न पड़ा होगा। कितने सुन्दर-सुन्दर भावपूर्ण वाक्य चुने हैं आपने।”

“वाक्यों को आपने पसन्द किया, इसके लिए हम आपका अत्यन्त आभारी हैं। किन्तु ये तस्वितियाँ छपाई नहीं गई हैं। हाथ से लिखी गई हैं।” सुगचरण जी बोले।

“ये तस्वितियाँ हाथ से लिखी गई हैं ? आश्चर्य महान आश्चर्य। छापे के अक्षरों को भी मात कर दिया। किसने लिखी हैं ये। आप में से किसी ने ?”

“जी नहीं” जगजीवनराम अपने कुर्ते की बाहों को नीचे उतार कर और कानों को सम्हाल कर कि कहीं जनेऊ तो नहीं टँगा है—बोले—“रामू हमारे स्कूल के प्रिद्यार्थी, दर्जा न्वार ने लिखी है।”

“जी हाँ” अपने कोट के बटन को ठीक करते हुए प्रधान अध्यापक सुगचरण जी बोले—“रामू ने—वही रामू जो यहाँ से

नील गाँव से रोज पढ़न आता है—जिसके नमस्कार
ग को आपने बहुत पसन्द किया है। उस दिन बता रहे
आप।”

“रामू, वह रामू, उस रामू ने लिखी हैं ये तस्वियाँ ?
। कितने सुन्दर अक्षर लिखता है यह बच्चा। जरा उसे
ने का कण्ठ करेंगे आप ?”

“जी अभी लीजिए।” जगजीवन राम स्कूल के बाहर
कल कर चिल्लाए—“रामू, ओ रामू, रामू बेटा, कहाँ हो
? अरे केशव। जरा बगीचे में से रामू को तो भेजना।
दी से, दौड़ कर।”

रामू वहीं से चिल्लाया—“जी पंडित जी।”
“अरे बेटा दौड़कर जरा इतर दो आ।” जगजीवनराम
र चिल्लाए।

रामू दौड़कर जगजीवनराम के पास आ पहुँचा। उन्होंने
सके गले के बटन ठीक करके कहा—“डाक्टर साहेब तुला
हे हैं तुम्हें। हेडमास्टर साहेब भी भीतर हैं। जरा झुककर
नमस्कार करना, है।”

रामू ‘जी’ कहकर जगजीवनराम के पीछे पीछे डाक्टर
साहेब के सामने जा पहुँचा। उसने झुककर प्रणाम किया।
डाक्टर साहेब ने रामू को अपनी ओर गींच कर उसकी
पीठ थपथपाई, फिर बोले—“रामू, तुम रोज नमस्कार करते हो
मुझे अपने गाँव से आते हुए। मुझे बहुत अच्छे लगते हो तुम।

लेकिन यह देख कर तो बेटा में अत्यन्त ही प्रसन्न हो रहा हूँ कि तुम्हारे अक्षर इतने सुन्दर हैं ।” तद्वित्तियों की ओर डाक्टर साहेब ने सकेत किया ।

इतनी प्रसशा उसने अब तक अपने जीवन में कभी नहीं सुनी थी । गोब के लोगों के सामने उसकी इन अन्ध्याइयों का कोई भी मूल्य नहीं था । डाक्टर साहेब और मास्टर साहेब की इतनी बड़ी कृपा के बदले उसकी आँखों से आँसू निकल आए ।

डाक्टर साहेब ने उसका मुँह ऊपर उठाया तो वे ढग रह गए । बोले—“अरे ! तू तो रोता है बेटा—हसना चाहिये-प्रसन्न होना चाहिए तुम्हें तो, हम तेरी प्रसशा कर रहे हैं ।”

सुरचरण जी बड़े ही आदर होकर बोले—‘ डाक्टर साहेब, यह बच्चा अनाथ हो गया है । दो तीन महीने हुए—इसके परिवार में केवल इसकी माँ थी, सो भी चल बसी । जिन लोगों के आश्रित है—वे इसे रात दिन कष्ट देते हैं । बड़ा ही दुःखी है यह बच्चा । इसकी सम्हाल करने वाला कोई भी नहीं है । मुझे बड़ा दुःख होता है इसे देख कर । इसीलिए तो इसको सामने देखकर तुरन्त मैं अपना मुँह फेर लेता हूँ । इसका दुःखी चेहरा मुझ से देखा ही नहीं जाता ।”

डाक्टर साहेब ने देखा कि सुरचरण जी की आँखों से अश्रु बह रहे थे । जगजीवनराम भी दूसरी ओर मुँह फेर कर आँसू पोंछ रहे थे । बोले—“इतने प्यारे और होनहार बच्चे के, यह हाल है । डाक्टर साहेब क्या किया जाए ? ’

डाक्टर साहब ने रामू को अपने से और भी चिपका लिया :
 बोले—“हाय । हाय । क्या हो गया था रामू तेरी माँ को ।”

रामू का हृदय भर आया । वह बोल नहीं सका । मुश्किलों
 गिरने लगा ।

“गाँवों की बीमारियों का क्या पूछते हैं डाक्टर साहब—
 आप तो भली-भँति जानते हैं । उनकी बीमारियों की कौन चिन्ता
 करता है ।” सुगन्धर जी ने कहा ।

“सो सही है । कतई सही है । मैंने लिखा था कि मुझे गाँवों
 का दौरा करने का मौका दिया जाय तो जवाब मिला कि प्रान्त
 में डाक्टरों की कमी है । अतः आपकी माग पर अभी विचार
 नहीं किया जा सकता । क्या करें ? लाचारी है । नहीं तो मुझे तो
 इन घर-नी के देवताओं की सेवा करने का बड़ा चाव है । हाँ, तो
 रोता रामू । बोलो तुम्हे क्या चाहिए ।”

रामू शायद अवसर की ताक में था । उसने डाक्टर साहब
 के पैर पकड़ लिए । उनके पैरों पर टपाटप आसू गिरने लगे ।
 उसका भी हृदय भर आया । उन्होंने रामू को उठाया फिर उसके
 मुँह को दोनों हाथों से दबाकर बोले—“रोओ नहीं बेटा । सबके
 माता-पिता जिन्दे नहीं रहते । बोलो, बोलो तुम क्या चाहते हो ।
 हमें बताओ ?”

रामू ने झुककर फिर डाक्टर साहब के पैर पकड़ लिए । फिर
 रोता हुआ बोला—“मैं, मैं बस और चाहता हूँ । मैं
 आगे पढ़ना चाहता हूँ ।” और इसके बाद जोर

रोन लगा कि उसे चुप करना मुश्किल हो गया ।

डाक्टर साहेब ने कहा—“तुम आगे पढ़ना चाहते हो तो तुम्हें कौन रोक सकता है वोलो चेटा, हम तुम्हारी बात से बहुत प्रसन्न हुए । लो, सुश हो लो—हम तुम्हारी आगे की पढाई का प्रबन्ध करेंगे ।”

तीन वर्ष में रामू काफी समझदार हो गया । डाक्टर गुप्ता और अध्यापक वासुदेव जी के सरक्षण और सहयोग से उसने जो कुछ पाया वह अमूल्य अकथनीय और उसकी परिस्थिति के लड़के के भाग्य से परे की बात थी । आगे हार्ड-स्कूल की पढाई के लिये डाक्टर गुप्ता ने उसका प्रबन्ध शहर में कर दिया था ।

रमेश ने चलते वक्त अध्यापक वासुदेव जी के चरण छूकर उनसे आशीर्वाद माँगा । वासुदेव जी ने उसे अपने हृदय से लगाते हुए कहा—“रमेशचन्द्र, अब तू सैकड़ों विद्यार्थी मुझसे इस प्रकार विदा लेकर चले गए हैं । उनमें से बहुत से बड़े आदमी बने गए । तू भी बहुत बड़े आदमी बनो । यही मेरा आशीर्वाद है । वैसे आते-जाते और पत्र-द्वारा तू मुझे अवश्य अपनी बातों से अवगत कराते रहोगे । मैं भी तुम्हें समयानुसार आवश्यक बातें बताता रहूँगा । लेकिन इस समय मैं कई बार कही गई यही बात फिर दुहराऊँगा चेटा कि पढ-लिखकर अच्छी नौकरी पा लेना, व्याह कर लेना, बच्चे पैदा कर लेना, समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर लेना और सम्पत्ति प्राप्त कर लेना, मनवान्छित वस्तु प्राप्त कर लेना और आराम से जीवन बिताना

यही सब कुछ नहीं है। इसके अतिरिक्त तुम जैसे इस देश के
 लोगों नवजवानों के लिए एक और भी बहुत बड़ा काम है। वेटा,
 आज देश के लाग्वा श्रमिक और लोगों किमान नवजवानों और
 विदेशी सत्ता द्वारा दिन दिन, पल-पल सताए जा रहे हैं। उनका
 खून चूस-चूस कर पिया जा रहा है। जिस प्रकार रूई को मीनीले
 से अलग करने वाली मशीन बिना देखे और मीना जाने रूई को
 पीसती रहती है। उसी प्रकार ये पूँजीपति श्रमिकों को दीनता,
 भ्रष्टता, स्वाधपरता और उन्हें मटियामेट कर देने वाली चक्की
 से दिन-रात पीसते रहते हैं। उनकी सम्पूर्ण शक्ति का वे अपने
 लिए मनमाना उपयोग करते हैं बच्चों, नवयुवकों और प्रौढ़ आदमी
 और स्त्रियों के जीवन के उत्तमोत्तम भाग का वे अपने लिए सर्व-
 श्रेष्ठ उपयोग कर लेते हैं, किन्तु उसके बदले वे उन्हें भरपेट भोजन
 तक नहीं देते। दिन-भर और रात भर वे अपने कारखानों में उनसे
 ची तोड़ परिश्रम तो लेते हैं, लेकिन उनके आराम का कतई ख्याल
 नहीं रखते। मध्या समय चमचमाती कार में सुन्दर रमणी के
 साथ बैठे हुए पूँजीपति बलबों में मन बहलाने, सिनेमा में
 मनोरंजन करने और बारों में शराब पीने तो निकल जाता है
 लेकिन जिसकी कमाई पर वह पूँजीपति बना हुआ है उनको
 वह बेमौत मरने के लिए छोड़ देता है। न उनके आराम का
 ख्याल उसे है, न उनके बच्चों के स्वास्थ्य का। रहने के लिए
 उन्हें एक गदा सा कमरा सौंप दिया जाता है जिसमें घुट घुट
 कर वे अपने प्राण देते रहते हैं। न उनके बच्चों की पढ़ाई का

कोई प्रबन्ध है। न उनके खिलने-कूटने और उनके मानसिक विकास का कोई साधन ही उपलब्ध रहता है। तरह-तरह की बीमारियाँ उनको घेरे रहती हैं। उनके लिए वे न कोई अस्पताल बनाते हैं न किसी डाक्टर को ही उनकी देखभाल के लिए रगते हैं। लारों श्रमिक अनपढ़ हैं। उन्हें पढ़ाने लिखाने का कोई प्रबन्ध नहीं किया जाता। न वे करना ही चाहते हैं। क्योंकि इसमें वे अपना नुकसान समझते हैं। उनका खयाल है, पढ़ा-लिखा मजदूर अधिक वेतन माँगेगा और तरह-तरह की सुविधाओं की माँग करेगा। इस प्रकार के व्यक्तियों को आश्रय देना वे आस्तीन का साँप पालना समझते हैं। यदि कोई व्यक्ति मजदूरों के लिए बोलता है, उनके अधिकारों के लिए लड़ता है, उनके अधिकारों की माँग करता है, तो वे उसे पहले तो साम, दाम, दण्ड, भेद से काबू में करने की कोशिश करते हैं। और जब वे सब प्रकार से उसे अपने वश में नहीं कर पाते, तो उसे देशद्रोही, बागी और मजदूरों का दुश्मन आदि नाना नामों से बदनाम कर के श्रमिकों-द्वारा ही अपमानित करवा-करवा कर उसे दूध की मक्खी की तरह निकाल फेंकते हैं। यही नहीं, ये पूँजीपति उस व्यक्ति की जान तक के भूखे हो जाते हैं और उसे इस दुनिया से नेस्त नाबूद कर के ही रहते हैं। तुम शहर जा रहे हो वहाँ के कारखानों में काम करने वाले मजदूरों को जब तुम देखोगे तो तुम्हें पता चलेगा कि मैं जो कुछ कह रहा हूँ वह सौयाँ अश भी नहीं है। भैया, थे पूँजीपति बड़ी ही राक्षस

प्रवृत्ति के होते हैं। मनुष्य को जानवर बनाकर उससे काम लेने की तरकीबें खूब जानते हैं। अस्पताल, पुस्तकालय, स्कूल तथा खेल-कूद के साधनों को मजदूरों के लिए जुटाने में उनके पास विक्कतों के बड़े बड़े कारण मौजूद हैं किन्तु ताड़ी, गाँजा, भग और शराब तथा चरित्र-भ्रष्ट करने वाली चीजों को इन्होंने नहीं खूब जुटा रखा है। शराब और ताड़ी तथा अन्य घुरे व्यसनों में पड़ जाने वाला मजदूर अपने मनुष्यत्व को खो देता है। नशा कर के वह बेटियों की इज्जत पर हाथ डालता है। बेथ्याओं में जाने लगता है। मार पीट करता है। गन्दा रहता है। गाली गलौज करता है, और भी न करने के कर्म करता है। ऐसा मनुष्य ज्ञान शून्य हो जाता है। जानवर हो जाता है। दिन भर कारखाने में काम करने के बाद रात को बद-फैली करता है। चङ-कैली नशा और अन्य घुरे व्यसनों में फँसा आदमी किसी भी तरह पेसा पैदा करने की धुन में रहता है। और कारखानों से जब उसे पैसे मिलते हैं तो वह मशीन की तरह उनमें जुट जाना है। सब पूँजीपति श्रमिक के जीवन को ऐसा ही बनाए रखते हैं। क्योंकि वह अपना भला इसी में समझता है। देखा न, अपने लाभ के लिए मनुष्य को जानवर तक बनाने पर उत्तारु हो जाता है यह वर्ग। देश के अत्रगणित व्यक्तियों की जब ऐसी मनोवृत्ति है तो बेटा सोचो, तुम जैसे नवजवान जब श्रमिकों को सीधे रास्ते पर नलाओगे और उन्हें आत्मी बनाने पर काम नहीं रुकोगे तो हमारे देश का बेड़ा पार कैसे हो सकेगा ?

किसानों की बात । इससे तुम भली-भाँति परिचित हो ही। वहाँ भी न स्कूल है । न अस्पताल है । न पुस्तकालय है । न जीवन है । न जायति है । किसान अपनी सागी उम्र अपने ऊँच पर हल दाना रहता है । बैलों के साथ सिर फोड़ता रदता है । लेकिन उसे कभी सुख नसीब नहीं । कमा कर वह दुनिया को गिलाता है । अन्न पैदा कर के देश के लाखों आदमियों का पेट पालता है । लेकिन खुद भूखों मरता है । नगा रहता है । वह और उसकी स्त्री और उसके बाल-बच्चे अन्न को तरसते हैं । कपड़ों को रोते हैं । अराम की जिन्दगी की कामना करते हैं । लेकिन उन्हें इनमें से एक भी सुलभ नहीं । क्यों ? फसल आई नहीं कि सरकार उसकी छाती पर चढ़कर लगान वसूल कर लेती है । बनिया दस रुपए के हजार रुपए करके उसका घर, उसकी जमीन, उसके बैल और उसकी स्त्री क गहने तक यदि हुए तो नीलाम करवा लता है । इन लोगों को अपने पैसे से काम । सरकार को लगान मिल गई । बस । फिर चाह किसान के घर में बीज न हो, उसके लिए खाने को अन्न न हो, पहनने के लिए कपड़े न हों, उसे इससे कोई मतलब ही नहीं । और बनियों का तो कहना ही क्या ? जिनकी जिन्दगी ही दूसरों का हड़प कर अपना पेट भरना है—उनसे मनुष्यत्व की उम्मीद करना बेमार्ग है । पर चेटा, उनकी इन आदतों का भी सुधारना है । उन्हें भी मनुष्यता सिखाना है । मनुष्य की तरह रहना बताना है । उन्हें भी आदमी का मोल बताना है ।

हमारा देश भारतवर्ष एक गरीब देश है। यहाँ की गरीबी दुनिया के लिए उदाहरण है। यह देश के लिए कलक है। इस जड़ से खोद फेंकने का प्रत्येक नवयुवक को बीड़ा बठाना है। यहाँ तो देश की सच्ची सेवा है। यदि प्रत्येक नवयुवक प्रण कर ले कि वह अपने देश के दो आदमियों को आदमी बनाने में अपना जीवन लगा देगा तो बेड़ा, हमारे देश की आशा मुधरन में चन्द्र निन ही लगेगी। देश के लीनों पर निर्भर रहना व्यर्थ है। वे के ल मार्ग प्रदर्शन ही कर सकते हैं। उनके पास उन बातों पर अमल करने का समय नहीं। और फिर सभी नेता नो उँगलो पर भी गिने जाने लायक नहीं—फिर उनसे इनकी भारी आशा रखना तो उनके साथ अन्याय ही समझना चाहिए। चाहिए तो यह कि प्रत्येक युवक अपने आप का नेता समझे। नेता का अर्थ कहा गलत मत लगाना। नेता में उसी को कहेंगा जो सत्य सत्य पर चलता हो। जिसने अपने लिए जनता की सेवा ही एक मार्ग चुन लिया हो। सच्चे भावने में नेता एक सच्चा सेवक है। उसे अपने आपको जनता का अगुआ नहीं मानना चाहिए। उसे यह समझना चाहिए कि वह जनता का एक अनन्य सेवक है, उसका शिर-मौर नहीं। जो लोग अपने आपको नेता के अर्थ में जनता का शिर-मौर मानते हैं वे पशु-ध्रष्ट होते हैं। थोड़े ही दिनों में जनता उन पर से विश्वास खो बँटती है। यदि जनता को यह सिखाने की जरूरत पड़े कि उसे अपने आपकी बलि देना है तो जनता के सेवक को

अपने आपकी बलि देना चाहिए । आज हमारे देश के माने हुए नेता गण जेलों को ही अपना घर समझते हैं । इसका कारण यही है कि वे जनता को यह बताना चाहते हैं कि अन्याय से लड़ने के लिए जेल घुरी जगह नहीं है । वह मंदिर है । यदि प्रत्येक नवजवान यह सोच ले तो मैं फिर कहता हूँ वेटा कि आज जो विदेशी हमारे देश में अपना जाल फैलाये बैठे हैं, वे तुम दबाकर तुरन्त ही यहाँ से पलायन कर जाँय ।

एक बात और । आज तुम देश की दशा देख ही रहे हो । मैं क्लास में तुम लोगों को समाचार पत्रों की घटनाओं के बारे में सुनाया करता हूँ । कितने दुःख की बात है कि इस देश की मिट्टी में पैदा हुए और इसी मिट्टी में मिल जाने वाले हिन्दू और मुसलमान आपस में खून की होली खेलते रहते हैं । इन विदेशियों के आने के पहले, तुमने इतिहास पढ़ा है बताओ कब हुए थे मन्दिर और मस्जिद पर भगड़े । कब हुए थे पाकिस्तान और अरबण्ड हिन्दुस्तान पर भगड़े ? यह सब इन्हीं गोरी जातियों की करामात है । यह राजनीति है वेटा, राजनीति बड़ी ही रहस्यपूर्ण होती है । इन्होंने कभी हिन्दुओं को मुसलमानों के विरुद्ध भड़काया और कभी मुसलमानों को हिन्दुओं के विरुद्ध । कभी हिन्दुओं को मस्जिद के पास मन्दिर बाँधने के लिए उकसाया । कभी मुसलमानों को मन्दिर के पास मस्जिद बाँधने के लिए । मन्दिर और मस्जिद में यों भेद डाला । आपस में भाई-भाई को लड़ा दिया । हमारी उस कम

जोगी से फायदा उठा कर हम मसार में घटनाम कर दिया।

राजनीति एक दुहरी चाल है। इसी लिए तो कहता हूँ वेदा, जब तक देश का एक एक नवजवान साक मन से अपने-आपको मातृ भूमि के अपित न करेगा, तब तक यह सब होता ही रहेगा। और भविष्य में शायद इसका और भी भयकर रूप हो। यह विदेशी सत्ता का ही प्रताप है। जब तक यह रहेगी और जब तक इसे टुकड़योर मिलते रहेंगे, देश में यह अन्याय और उपद्रव होता ही रहेगा। और उस रूप से होता रहेगा। गाड़ी का समय होता आया। अब मैं तुम्हारा अधिक समय नहीं लूँगा। मैं तुमसे यही कहूँगा कि अन्याय के लिए लड़ो, जहाँ अन्याय होता हो, वहाँ जीना पाप समझो। या तो उसकी जड़ खोद कर फेंक दो, या गूद मिट जाओ। भारत माता का हृदय तभी शान्त होगा। और तभी देश में शान्तिकायम हो सकेगी। तभी देश धन वान्य से परिपूर्ण होगा। तभी यहाँ के भूर, तुलसी, मीरा, राम, कृष्ण, गीता, रामायण, करान और गाँधी का सम्मान हो सकेगा। तभी ससार इनको मानेगा। बर्ना इनकी तरफ देख कर प्रत्येक परराष्ट्र का व्यक्ति मुँह बना कर कहेगा— ऊँह, गुलाम देश के व्यक्ति, गुलाम देश के ग्रन्थ। इतने गुलामी ही भरी होगी। क्योंकि इनका देश गुलामी की जजीरों को अभी तक नहीं तोड़ सका। न छुओ इन्हें, न परओ इन्हें, बर्ना छत लग जायगी। कहीं गुलामी न चिपट जाय, छी-छी। मुनने में यह बात कैसी अपमानजनक है। लेकिन इसे इस रूप में देखने पर

ही हमारी नसों में ग्वन दौड़ेगा । तभी हमारा ग्वन खौलेगा । तो बेटा, तुम जाओ । ईश्वर तुम्हें सद्बुद्धि दे । ग्वन पढ़ो ग्वन लिखो और देश के काम आओ । हाँ, डाक्टर गु ता को कभी मत भूलना । यही तुम्हारे माता और यही तुम्हारे पिता हैं । इन्हीं के चरणों के प्रताप से तुम इस लायक हुए हो कि तुम्हें इतनी बातें सीगने समझने और सुनने का अवसर मिला । याद रखो चरित्र इस दुनिया में सब से बड़ी वस्तु है । इसे गोना अपने आपको गो देना है । शहरों में बड़े-बड़े प्रलोभन मिलते हैं । बाहरी तड़क-भड़क, सौन्दर्य और न जाने क्या-क्या मिलता है । तुम्हें भी मिलेगा । लेकिन उसमें भूलना मत । अपने ध्येय को सदा समक्ष रखना । अपना स्वार्थ निकालने के लिए लोग सदा चिकनी-नुपडी बातें किया करते हैं, हितैषी बनते हैं । उनसे बचना और सदा खुश रहना । अभ्यास में मन लगाना । जाओ । मेरा आशीर्वाद सदा ही तुम्हारे साथ है । और रहेगा । जब तक तुम अपने ध्येय पर सन्ने हो ।

रमेश ने पुनः अध्यापक वासुदेव जी को प्रणाम किया । फिर बोला—“गुरुदेव, गलती करना मनुष्य का स्वभाव है—इसका अर्थ यह नहीं कि वह जानबूझ कर गलती-पर-गलती करता रहे । यह आपने बताया है—लेकिन मनुष्य-स्वभावानुसार भविष्य में यदि गलती मुझसे भी हो जाय तो उसे आप सदा को तरह प्यार की नज़रों से देखेंगे यह मुझे पूर्ण आशा है । लेकिन आपके चरणों की सीगन्ध लेकर रहता हूँ कि यह जीवन दुनियाँ के प्रति अर्पित

है—अन्याय की जड़ खोदने के लिए है। आप आशीर्वाद दें कि समय इसका परिचय देने की मुझे सामर्थ्य दे।’ फिर डाक्टर गुणा ने चरणों में झुक कर उसने कहा “पिता जी। आप आशीर्वाद दें कि मुझे गुरुदेव-द्वारा बताए गए और मेरे द्वारा किए गए प्रण को निभाने की पूर्ण शक्ति मिले। मेरे रंग रंग में आपका अमृत-जल समाया हुआ है। मैं उसे सार्थक करने में अपने प्राणों को होम दूँगा।’

डाक्टर साहेब बोले—“गमेरा, मुझे तुमसे यही उम्मीद है। मैं और कुछ नहीं कहूँगा। शहर में भाई साहेब के यहां तुम्हें कोई रुकट न होगा। तुम उन्हें प्रसन्न कर लोगे। मुझे पूरी आशा है तुमसे। जाओ।”

११

धम्बई पहुँच कर तनसुग्गा ने उसी पुस्तकाल में नौकरी करली जहाँ वह पहले कभी नौकर होकर रहा था। प्रमादवश या अज्ञानता वश उस समय तनसुग्गा मंगलदास को नहीं पहचान सका था। इसका एक कारण यह भी था कि मंगलदास ने उस समय उसे अपनी देश सेवा की गुप्त हल-चलों से अवगत कराना ठीक नहीं समझा था। क्योंकि जब भी कभी उन्होंने उसके सामने देश भक्ति, राष्ट्र सेवा इत्यादि का जिक्र किया—तनसुग्गा ने उस ओर न रुचि दिखाई और न उसाह ही। उसमें समझ और

शिचा का अभाव समझकर मंगलदास ने कुछ समय के लिए उस के सामने ऐसी बातें करना छोड़ दीं। इसके बजाय उन्होंने उसे और भी जोर-शोर-से पढ़ाना लिखाना आरम्भ कर दिया। लेकिन ज्यों-ही तनसुखा का अध्ययन गभीर हुआ—और मंगलदास ने उसके सामने फिर अपने मन की बातें रखने की सोची—तनसुखा अपनी मनमौजी आदत के अनुसार वहां से भाग पड़ा हुआ। तनसुखा में एक घात बहुत अच्छी थी—जिसकी वजह से मंगलदास उसे जी से चाहते थे। वह यह कि उसे कितना ही कठिन-से-कठिन काम दिया जाता—वह चुटकियों में कर डालता। कैसा भी काम उससे लिया जाता—वह कभी नहीं धरता था। न होने का काम यदि उसे ठीक प्रकार से समझा दिया जाता तो फिर उसमें कभी चूक नहीं होने देता। जल्द ही उससे काम लेने वाले की। अपने मन से वह कुछ भी करना नहीं चाहता था। मंगलदास एक ही आदमी थे। बालू में से तेल निकाल लेना उनका काम था। वे उसे एक अच्छा देश-भक्त बनाने की ठान चुके थे। अब, जब वह उनके फिर से हाथ लग गया तो उन्होंने उस पर अपना पुराना मंत्र फिर चलाया। जब उन्होंने देखा कि उनका परिश्रम सफल हो रहा था तो वे उसके पीछे पड़ गये। और कुछ ही समय में तनसुखा मंगलदास का दाहिना हाथ बन गया।

एक दिन तनसुखा को इतने जोर का दुपार चढ़ा कि वह बेहोश हो गया। नैना बहुत ही धरग उठी। ओलों में ओंस वहने

लगे। क्या करें और क्या न करें इसी सोच में कभी श्वा और कभी उधर घूमने लगी। फिर तनसुग्गा के विस्तर के पास आकर उसके माथे पर हाथ रखा। गरम तबे की तरह जल रहा था। चिन्ता के मारे उसका दम घुटने लगा। माथे पर हाथ रखकर वह सोचने लगी—हाथ अब क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? किसे बुलाऊँ ? किसे सहायता के लिये पुकारूँ ? कौन मेरी आवाज पर दौड़ने के लिये बैठा हुआ है ? आखिर जी बड़ा करके उसने पुस्तकालय के नौकर को पुकारा। नौकर आकर सामने खड़ा हो गया तो वह बोली—“बन्धू भैया। जरा अपने धातू जी की तो बुलादो। ये तो मुँह से भी नहीं बोलते। बहुत ही जोर का बुलारा चढ़ा है। बहोश है। बुला तो दो भैया उन्हें।”

बन्धू चला गया, लेकिन लौट कर नहीं आया। देर होती देख नैना फूट-फूट कर रोने लगी। उसने मन में कहा—सच है—दुनिया में मेरी तरह सब फालन तो नहीं बैठे हुए हैं। सपने पीछे अपना-अपना गम लगा हुआ है। कौन किसकी परवाह करने लगा। इतने बड़े शहर में बिना जान पहचान के कौन किसे पूछता है। बिना जान पहचान के ही क्यों—शहर के जान पहचान वाले भी तो वेदर्द होने हैं। उन्हें किसी की चिन्ता क्यों होने लगी। हाथ राम। मैं अब क्या करूँ ? लेकिन मंगलदास तो ऐसे नहीं हैं।

इतने ही में मंगलदास डाक्टर राय के साथ आ धमके बोले—‘मुझे देर तो नहीं हुई नैना। बन्धू ने कहा कि तनसुग्गा

को बेहोशी है तो ऐसी हालत में मैंने व्यर्थ समय खोना ठीक नहीं समझा। तुरन्त डाक्टर साहेब को लिखाने दौड़ पड़ा। कागजात फैले हुए थे। बन्धु को वहीं चिठा आया है। उन्हें सिमेंट लूग तो उस यहीं रहने को भज दूँगा। हाँ, क्या हाल है डाक्टर साहेब तनसुर के, घताड़येगा जरा ? दो दिन हुए मैंने एक काम से इन्हें भेज दिया था। आज वर्षा में भीगते-भीगते आण है हजरत। मेरे ग्याल से सर्दी लग गई होगी।'

नाडी देख कर डाक्टर ने स्टेथोस्कोप से उसके फेफड़ों की जाँच की—फिर बोले—“आप ठीक कहते हैं, बड़े जोर की ठंड घैरी है। लगता है रुपड़े शरीर पर ही सखाण है। मालूम होता है चार पाँच रोज से सोण भी नहीं है। कमजोर बहुत हो गए हैं। लेम्बिन डर की कोई बात नहीं। मैं दवा दे रहा हूँ। थोड़ी हो देर में सब ठीक हो जायगा। बेहोशी तो यों जानो है। सध्या को मुझ इनकी हालत की रिपोर्ट भेज दीजियेगा। उस दवा के बाद तो मेरे आने की भी जरूरत नहीं पड़ेगी। इतना कह कर वेग में उन्होंने चार छोटी-छोटी कागज की पुड़िया निकाल कर मंगलदास के हाथ में थमा दी—फिर बोले—‘आध-आध घण्टे में गरम पानी के साथ दीजिएगा। हवा से बचाइये। भूस लगे तो दूध दें—चा माँगें तो चा, उसमें तुलसी के पत्त डालना न भूलें। अन्धा तो मैं चला।’

डाक्टर वेग उठा कर चलते बने। मंगलदास डाक्टर को दरवाजे तक पहुँचाने गए। लौट कर बोले—“अब डरने की कोई

बात नहीं है। जरा-जरा सी बात में तुम बहुत घबरा जाती हो मैना। अभी तो तुम्हें बड़े बड़े काम करने हैं। इतने ही में हार जाओगी तो, बस हो चुकी देश मेरा। अपने मन को स्वस्थ रखो। तनमुग्धा को अभी होरा आए जाता है। कुछ नहीं हुआ है— डाक्टर ने कहा न कि ठंड लग गई है बस। क्या बताएँ ? किसी काम को करने के लिए इन हजरत से कहना ऐसी आफत मोल लेना है। अपने शरीर की विन्यास करना तो इस भले आदमी ने जैसे धीखा ही नहीं। ग़ैर। तुम इन्हीं के पास बैठो। देखना बेहोशी में उगड़े न होने पावें। हवा लाने का डर है। तो अब तुम निश्चित हो जाओ। मैं चलता हूँ। कागजों को सम्हाल लेता हूँ तो नौकर का भेज दूँ। यहीं रहेगा। जम्हरत के वक्त काम लेना उससे।” इतना कहकर मंगलदास पुस्तकालय में पुस गए।

मंगलदास और डाक्टर के आने तथा तनमुग्धा को दवाई इत्यादि मिलने से मैना को बहुत बड़ा सन्तोष मिला। यह तनमुग्धा के होश में आने की तीव्र प्रतीक्षा करने लगी। कुछ देर इधर-उधर करने के बाद उसने तनमुग्धा का सिर अपनी गोद में बठा लिया। फिर उसे धीरे धीरे उठाने लगी। पछाएँ उसकी स्मृति तनमुग्धा के चेहरे पर जाकर रुक गई। उसने देख कर मन में कहा—कितना विशाल ललाट है। कितने सुन्दर घुँघराले गाल हैं। ओठों के ऊपर मूँछों की कतार कितनी सुहावनी है। भागवेश में अनजाने हो उसने तनमुग्धा के मूँछों पर अपनी पतली-पतली अँगुलियाँ फिरा दीं। अँगुलियों के मूँछों से लगते

ही नैना के सारे शरीर में जैसे विद्युत् लहर दौड़ गई । उसका सारा शरीर गुदगुदा उठा । वह झिझक कर उठ बैठी । तनमुखी का सिर पूर्ववत् तक्रिण के सहारे हो गया । नैना दूर जाकर गड़गड़ा हो गई । फिर सोचने लगी—कौन कहता है कि इनका जन्म किस गाँव में हुआ है । शहर के कितने ही लोगों से यह सुन्दर है । हृष्ट-पुष्ट हैं । बलवान हैं । एक ही लाठी से भैंस का दम निकल गया । कितने स्वच्छन्द थे ये तब वहाँ ? और आज, जैसे चारों ओर से जवाबदारियाँ इन्हीं पर हैं । कितनी चिन्ता करते हैं ये मेरी ? कभी ओती, कभी साड़ी, कभी ब्लाउज का कपड़ा, कभी चूड़िया, कभी बिन्दी, कभी क्या, कभी क्या, पैसे हाथ में आए कि कुछ-न-कुछ लाते ही रहते हैं । लगता है जैसे मेरे मुख के सिवा और कुछ सोचते ही नहीं । वह पुनः तनमुखी के सिरहाने के पास जाकर जमीन में धँस गई । फिर उसके सिर को अपने दोनों हाथों से दबाने लगी । इस बार उसने भगवान से प्रार्थना की—“हे दीन बन्धो । इन्हे जल्दी अच्छा करदो । मेरे कारण इनको इतना कष्ट न उठाने दो ।”

लगभग आधी रात का समय होने आया । इसी बीच कई बार भगलदास आकर तनमुखी की तबियत के बारे में पूछ कर और कुछ देर बैठकर चले गये । नैना की आँख नहीं लगी । जैसे उसकी नींद उड़ गई । एकाएक तनमुखी के शरीर में संचालन हुआ । नैना प्रसन्न हो गई । जैसे उसे न मालूम कौन-सा राजा मिल गया । उसके मुँह से निकल पड़ा—“हे ईश्वर । तुम्हें

प्रसन्नियों धन्यवाद । किन्तु अन्ध है मंगलदास । कितन अन्ध है
 डाक्टर । किन्तु अन्ध है दवा । अहा ! इन्हे होश आ गया ।”
 तनमुख्या के और भी पास गिसक आई । करवट उदल कर
 तनमुख्या कुछ दूर पड़ा रहा । फिर चित लोट गया । कुछ देर इस
 प्रकार पड़े रहने के बाद उसने आगे ग्योली । नैना की आंखों में
 प्रसन्नता के अश्रु झलक आए । उसने धीमी आवाज में मीठास
 भर कर उतावले पन से पूछा—“पानी पिँगे ? लाऊँ ? पिलाऊँ ?”
 तनमुख्या ने हाँ का भाव दर्शाया । नैना दौड़ कर एक गिलास में
 गरम पानी ल आई । उसने तनमुख्या की पीठ में हाथ लगा कर
 उसे बैठने का मा रूप देकर बोली—“मैं पानी लाई हूँ, मुँह
 भोलो, पीलो पानी ।” तनमुख्या ने मुँह खोल दिया । पानी पीते-
 पीते उसे अनुभव हुआ कि उसकी पीठ में नैना के कोमल-कोमल
 हाथों का सहारा है । उसका कन्धा नैना के वक्षस्थलों को छू रहा है ।
 उसके शरीर में एक मीठी लहर दौड़ पड़ी । नैना को जय खयाल
 हुआ कि उसका वक्षस्थल तनमुख्या के कन्धे से लग रहा है तो
 उसे जैसे एक झटका लगा । लजाकर तुरन्त दूर होने के लिए
 उसने तनमुख्या को पानी पिलाने के बाद पूर्ववत् लिटाना चाहा ।
 तनमुख्या ने शायद नैना के मन की बात ताडली । उसने डरते
 डरते कहा—‘कोई हर्ज न हो तो जरा मुझे ऐसे ही बिठाए रखो
 नैना, लेटे लेटे थक गया हूँ ।’ नैना भी शायद तनमुख्या के मन
 की बात ताड़ गई । उसने कहा—‘बैठने की शक्ति आप में तनिक
 भी नहीं है । लोट जाइए । बैठने से तो आप और एक जाएँगे ।

हवा लगने का डर है ।’ इतना कह कर वह उसे लिटाने लगी । लटते-लटते तनसुग्गा ने नैना का हाथ अपने हाथ में ले लिया । नैना ने हाथ नहीं छुड़ाया । दोनों के शरीर में कम्पन होने लगा । तनसुग्गा कुछ सावधान होकर बोला—“यह क्या हो रहा है नैना ? क्या ऐसा होना ठीक है ?” नैना चुप रही । वह लजा रही थी । तनसुग्गा फिर बोला - “जवाब नहीं देती नैना । कुछ अनचाहा हो रहा है ।”

नैना अब की बार बोली —“आप मेरे लिये इतना कष्ट उठा रहे हैं । क्या इस बीमारी में भी आप अपनी सेवा मुझे नहीं करने देंगे ?”

तनसुग्गा बोला —“तो तुम नाराज तो नहीं हो ?”

नैना ने अपनी आँखें उठाकर तनसुग्गा की ओर देखा । दोनों आँखों-ही-आँखों में कुछ देर देखते रहे । फिर नैना ने लजाकर अपनी आँखें नीची करली । तनसुग्गा ने फिर पूछा—‘मेरी बात का उत्तर नहीं दिया नैना ?’

नैना नीचा सिर किए हुए ही बोली—‘इसमें नागजी की क्या बात है ? मैं खुद जो आपकी सेवा करना चाहती हूँ ।’

तनसुग्गा ने फिर नैना के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए । नैना ने इन्कार नहीं किया । बल्कि उसने अपने आपको तनसुग्गा को समर्पित करते हुए कहा—“आपको दुःख है ।”

+ + + +

संध्या के आठ बजे का समय होगा । मंगलदास और तन

सुरा बन्धन शहर से दूर जंगल की ओर सपाटे से जा रहे थे।
 गणपक मंगलदास बोले—“तनमुग, आज मैं तुम्हें एक ऐसे
 स्थान पर लिये जा रहा हूँ—जहाँ तुम कल तक वहाँ जाने के
 योग्य नहीं समझे जाते थे। तुमने देखा होगा पिछले दिनों कि
 जब भी कभी मुझे इधर आना था—मैंने तुम्हें साथ नहीं लिया।
 अब मुझे तुम पर पूरा विश्वास हो गया है। अतः मैं तुम्हें उस
 स्थान पर लिए जा रहा हूँ—जहाँ का जरा भी किसी को पता
 लगने पर हमारी जिन्दगी खत्म हो सकती है। तुम जो कुछ भी
 देखो और सुनो उसे सपू समझो और अपने मन में रखो लेकिन
 उस विषय में कहने के नाम पर अपने आपसे कहना भी भूल
 जाओ। तुमने उस दिन वर्षा में अपनी जान को हथेली में रग
 कर ‘सप’ के लिए जो कुछ कर दिखाया उसने मेरे हृदय में तुम्हारे
 प्रति बहुत बड़ा आदर और विश्वास उत्पन्न कर दिया। उसका
 फल तुम्हें आज मिलेगा।”

तनमुग ने कहा—“दादा, आपने तो अभी तक कोई ऐसा
 मौका नहीं दिया—जहाँ मैं यह दिखाना पाता कि आपकी आज्ञा
 मेरे प्राणों से बढकर है। मैं हर वक्त यह इच्छा रखता हूँ कि
 आप मुझे किसी मौत के स्थान पर भेजें।”

“सो यह सदा खयाल रखो कि मेरे साथ तुम सदा मौत के
 मुँह में ही हो। तुम्हारी उस दिन परीक्षा हो गई। यदि सुधीर
 को उस दिन पडयंत्रकारियों के पजों से छुड़ाकर न ले आते तो
 उस दिन हमारा एक बहुत बड़ा कार्य कर्ता—मारा जाता। हालांकि

तुम्हारे सकल में पड़ने पर या असफल होने पर मैंने एक और प्रबन्ध भी कर रखा था।”

“तो सुग्रीव भैया अब कहाँ है ?”

“वहीं तो हम चल रहे हैं। वहाँ और लोगों को भी तुम देख लोगे। आज से तुम्हारा नाम हमारे ग्यास रजिस्टर में लिखा जायगा। लेकिन नलिन से बात करते वक्त खबरदार रहना। वह बड़ा टेढ़ा आदमी है।

समुद्र के किनारे-किनारे बड़ी दूर चलने पर एक पहाड़ी की नीची सतह में मगलदास और तनसुखा उतर पड़े। तरह तरह के पेड़ पत्तियों और भूँड़-भूँसाड़ों के बीच से निकलत हुए वे एक दूसरी छोटी पहाड़ी की कन्दरा के द्वार पर जाकर रुक गए। थोड़ी ही देर में एक पास वाले छोटे से वृक्ष के पत्ते हिले। काले-काले वस्त्रों में लिपटे एक आदमी ने आकर मगलदास को विचित्र ढंग से अभिवादन किया। मगलदास ने पूछा—“भीतर लाँय, आगए सब ?” वह आदमी कुछ बोला नहीं—लेकिन गुप्त इशारे से उसने मगलदास से न मालूम क्या कहा। मगलदास ने कहा “तो ठीक है चलो।” लेकिन वह आदमी ठिठका ही रहा। मगलदास आशय समझ गए। बोले—“तो बाँध दो आँखें।” तनसुखा की आँखें बांध दी गईं। फिर उसे घुमाकर कुछ ऐसे आड़े-टेढ़े रास्तों से ले जाया गया कि चलते-चलते उसे ऐसा अनुभव हो रहा था कि जैसे उसके पैर नीचे-से-नीचे टपाटप गिरते जा रहे थे। कोई बीस मीनट तक चलने के बाद वे रुके। तनसुखा की आँखें खोल दी गईं।

तनमुग्गा ने देखा—यह एक बड़ी भारी गुफा के बहुत नीचे एक बड़े ही सफ़ेद रंगान में खड़ा था। एक प्रकाश न मालूम कहा से आ रहा था जो केवल वहाँ पर एकत्रित व्यक्तियों को बहुत ही सुँघले सुँघले रूप में दिखा रहा था। लेकिन गौर से देखने पर कुछ देर बाद वहाँ के प्रत्येक व्यक्ति का हुलिया स्पष्ट रूप से दीख पड़ने लगा। तनमुग्गा देख कर दग रह गया। उसने देखा कि उसके सामने खड़े हुए व्यक्ति वही सज्जन थे जिन्हें उसने कई बार पल्टनों की सलामी लेते देखा है। दूसरे व्यक्ति जो दिग्गई दिए थे शहर के एक बहुत बड़े अस्पताल के डीन थे जो इंग्लैण्ड, अमेरिका, फ्रान्स, जर्मनी, चीन, रूस और जापान आदि देशों में रह कर हिन्दुस्तान आए थे। तीसरे सज्जन जो दिखे तो तनमुग्गा और भी दग रह गया। यह एक कान्टेबुल था, जो कभी दादर, कभी चौपाटी, कभी परेल, कभी फोर्ट और कभी फालनादेवी पर ड्यूटी देता हुआ तनमुग्गा द्वारा कई बार देखा गया था। चौथे को देखकर वह और भी आश्चर्य में पड़ गया। यह हजरत शहर में दिन भर “चने जोर गरम बावू” करने वाले महाशयों में से थे। पाँचवें व्यक्ति को देखकर तनमुग्गा को आँखें खुल गईं। वे उम्वई की कई बड़ी बड़ी औद्योगिक संस्थाओं के प्रधानों में से थे। छठे एक कालेज के बहुत बड़े प्रोफेसर थे। सातवें एक किसान था जिसे तनमुग्गा नहीं जानता था। आठवें थे काशी काका। जिनसे तनमुग्गा पहली बार मिला। नववाँ था सुधीर और दसवाँ था नलिन। ये सब मंगलदास को आते देख खड़े हो गए थे।

मगलदास ने तनसुखा की ओर सन्नत धरके कहा—‘यह तनसुख है नलिन। जिन्हे सुधीर को ले आने का काम सौंपा गया था।’

नलिन कुछ देर नुप रहा—फिर एकान्क वह बोल उठा—‘अजुमन। चीर दो इन महाशय की अँगुली। क्यों इन्होंने ऐसा काम किया?’

अजुमन ने तनसुखा का अँगुली को एक छोटा सा चीरा दिया। खून वहने लगा। अजुमन बोला—“भाईजान इस खून से इस रजिस्टर पर अपने हस्ताक्षर कर दें। इसके पहले ये नियम मन ही मन पढ़ डालें। तनसुखा ने नियम पढ़कर और शपथ लेकर अपने खून से उस रजिस्टर पर हस्ताक्षर कर दिये। इसके बाद—एक सन्नाटा छा गया। मगलदास के सकेत पर नलिन ने उठकर एक शिला थोड़ी-सी खिसकाई। फिर उसे कुछ ऊँची नीची की—जिससे वही किसी मशीन के होने का भास हुआ—कुछ ही देर में एक आवाज आई—“इन्किलाब जिन्दाबाद। मैं अण्डरसन बोल रहा हूँ। पाल ने पेरू में कमाल कर दिया। श्रमिकों की जीत हुई। सब कारखाने खुल गए हैं। जैसी कि आशा थी—उद्योग पतियों ने श्रमिकों की सलाह मान ली है। अब यहाँ पर श्रमिकों का प्रबन्ध, श्रमिकों के नियम और श्रमिकों की सलाह के अन्तर्गत ही सब काम हो रहे हैं। लाभ का पचास प्रतिशत श्रमिकों को मिलना निश्चय हुआ है।

जमिनी ने किसानों में बेहद जागृति उत्पन्न कर दी है। इसी

प्रकार कार्य चलता रहा तो कुछ ही दिनों में वहाँ भी विजय निश्चित है। यहाँ का 'किसान संघ' बहुत जामत हो गया है। सब किसानों ने मिल कर खेती करने के आपके सुझाव को बड़ा पसन्द किया। कुछ लोग उन्हें भड़काने में लगे हुए हैं। लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिलेगी क्योंकि किसानों ने अपनी मांगों को अधिकांशियों के सामने पेश कर दिया है—और उस पर पड़े हुए हैं।

डाक्टर जेक का प्रेस पकड़ा गया। उनके मंत्र में एक नया आदमी भरती हुआ था। जो रिपोर्टर का काम करता था। लेकिन वह गहवार निकला। उसने प्रेस को पकड़वा दिया। डाक्टर साहेब का पता नहीं है। न ही सेन का। वे भी गायब हैं। हमारे आदमियों ने उन्हें ढूँढने में कोई कसर नहीं रखी। सब स्थान देख लिए। पता नहीं लगा। शायद एक दो रोज में मंत्र प्रस्ट जो जाँव।

मनमुखा ने रंगू में फिर मूर्खता कर डाली। यह भला आदमी धात बात में मार-पीट पर उतर आता है। अब की बार उसने एक ब्लैक माफ़ेडियर पर हाथ चला दिया। पकड़ में नहीं आया। खबर है कि कलकत्ते के रास्ते से भारत जा रहे हैं। चम्पई के एक मेडिकल कालेज में उसका एक भानजा डाक्टरी पढ़ रहा है। उसका नाम रमेश है। शायद उसे मिलने के लिये ही यह जा रहा है। क्योंकि उस बात का वह कई बार जिक्र भी कर चुका है। रमेश के गांव के ठाकुर के आत्मियों ने किसानों पर

फिर अत्याचार आरम्भ कर दिये हैं। मनसुखा इस बार रमेश को लेकर उस गाँव में जाने का विचार प्रकट कर चुका है। यहाँ के समाचार बस हुए। आपके आशीर्वाद मुनने में लालायित हैं। इन्किलाब जिन्दाबाद।”

नलिन ने उठकर उस यन्त्र को एक ओर पत्थरों की दीवार में गिसका कर उसके स्थान पर उस शिला को पुन गिसका दिया। फिर उसने दूसरी ओर के एक भारी पत्थर को हटाया। कुछ वटन इत्यादि दबाकर एक दूसरा यन्त्र खुला छोड़ दिया।

मगलदास उस दिशा के विपरीत मुँह करके बैठ गए उन्होंने कहा—“कान्ति अमर हो। आपके यहाँ के समाचार बड़े ही उत्साह वर्धक हैं। पाल को बधाई। पेगू के श्रमिकों की यह विजय दुनिया भर के श्रमिकों की विजय है। हम उस दिन के स्वप्न देख रहे हैं। जब सारी दुनिया के कारखाने मजदूरों की हुकुमत में चलेंगे।

जमीनी की विजय में विश्वास करना चाहिए। मजदूरों और किसानों की समस्याएँ अलग-अलग हैं। जितनी जल्दी मजदूर पूँजीपतियों को हिला सकते हैं, उससे अधिक शीघ्रता किसान सरकार को हिलाने में कर सकते हैं—लेकिन देश काल अवस्था का विचार रखते हुए—चात उल्टी समझना चाहिए। किसानों के कामों में देर लगाना अनिवार्य है। मजदूर जितनी जल्दी विश्वव्यापी हलचल मचा सकते हैं, उतनी जल्दी किसान नहीं। उनमें इतनी अधिक एकता इतने कम समय में नहीं हो सकती।

शहर-से-शहर वात जल्दी पहुँचती है किन्तु गाँव से-गाँव वात देर में पहुँचती है। गाँव और शहर की सफलता में दतना ही अन्तर है जितना एक शहर से दूसरे शहर को तार पहुँचाना और एक गाँव से दूसरे गाँव को बैल गाड़ी। तार के बीच में फट जाने पर शहर के मामलात में तुरन्त गड़बड़ी हो सकती है और मामला उल्टा पड़ सकता है। लेकिन बैलगाड़ी जितनी बीसी रफ्तार से चल कर दूसरे गाँव पहुँचती है—और उसके निशान देर तक बने रहते हैं उसी प्रकार वही नी जागृति भी एक बार हो जाने पर लम्बी देर तक स्थायी रह सकती है। इसलिए शहरों की अपेक्षा गाँवों में काम करने वाले को अधिक सफलता की गुआहश है। जेमिनी को सन्देश है कि वे डटे रहें, अडे रहें। उनकी सफलता निश्चित है। सफलता में विश्वास क्यों न रहे जब कि हमारी लड़ाई अहिंसा की लड़ाई है।

डॉक्टर जेक चित्तगाँव पहुँच गए हैं। उन्होंने फिर जमीन में प्रेस लगा लिया है। अपना प्रचार आरम्भ कर दिया है। बड़े ही जीवट के आदमी हैं। विजली की तरह काम करते हैं। हमे उनकी लगन से रश्क है। पहले पर्व से ही चित्तगाँव में सनमनी फैल गई है। अधिकारी जाग्रत हो गए हैं। मजदूरों में उत्साह छा गया है। किसानों तक खबर पहुँच गई है।

सेन मलाया पहुँच गए हैं। एक बड़े अगमार के दर्पतर में नीकरी करली है। समय की ताक में हैं। ये काम देर से करने हैं लेकिन करते हैं तो बस, समझो इनसे रश्क होने लगता है।

कहते हैं मलाया स्त्री से व्याह करने वाले हैं । भई आदमी हैं विचित्र ।

मनसुखा की सुवारी कलकत्ता आ पहुँची । इस बार इन महाशय को समझाना पड़ेगा । इस प्रकार की मारपीट से हमारे कार्यक्रम में बड़ी गड़बड़ी होती है । मारपीट हमारा उद्देश्य नहीं । आदमी को आदमीयत सिखाना हमारा लक्ष्य है । और आमदी को आदमीयत सिखाने वाला तो प्रथम श्रेणी का आत्मी होना चाहिए । इस बात को आप भी भली प्रकार जानते हैं । मारपीट से सघ की बदनामी भी तो होती ही है । सेवा में फरक आता है । हाँ रामपुर के ठाकुर ने वाकई अत्याचार आरम्भ कर दिए हैं । किसानों की फसलें खेतों में ही कटवाली जा रही है । इसका प्रबन्ध मैं शीघ्र ही करने जा रहा हूँ । मनसुखा के आजाने पर निश्चय करूँगा । एक प्रसन्नता की खबर है । तनसुख ने सुधीर को बचा लिया । आज से वह हमारे सघ के पक्के सदस्य बन गए हैं ।

हिन्दुस्तान की हालत बड़ी विचित्र होती जा रही है । श्रमिकों में आपस में विश्वास नहीं रहा । प्रति दिन हिन्दू-मुस्लिम फसाद होने लगे हैं । इसी मगड़े में श्रमिक भी फस गए हैं । रोज बेकाम लड़ते और मरते हैं ! अपने ध्येय को भूलकर भटक रहे हैं । हमारी कोशिश जारी है । हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई प्रचार हमने शुरू कर दिया है । जब तक देश के श्रमिकों और किसानों में एकता नहीं होगी—सुधार के काम में प्रति दिन नए-नए रोड़ें

प्रटकते रहेंगे। अतः हमारा पहला काम अब यही हो गया है।
 जन-तक देश में अमन कायम न हो जायगा। हमारा हिन्दू-
 मुस्लिम 'गेथ्र' सब अपनी कोर्ट भी कोशिश उठाकर न रखेगा।
 अन्न वस्त्र जुगम्रो सब अपना कार्य तेजी के साथ कर रहा है।
 ऊँट चरखे रोज चल रहे हैं। पास की रान्ध सामग्री तैयार की
 जा रही है। उनका बाँटा जाना भी आरम्भ हो गया है। समस्त-
 देश में आज चारों ओर अन्न और वस्त्र की हाय, हाय, मची हुई
 है। ब्लेकमार्केटियरों के पीछे नलिन और सुधीर बुरी तरह पड़े
 हुए हैं। हालाँकि उनका दल दिन-रात हमारी टोह में नींद हराम
 किए हुए है। सुधीर की उन दुष्टों ने बहुत बुरी दशा की थी और
 उसका सात्मा ही भरने जा रहे थे यह आपको मालूम ही है।
 प्रसन्नता की बात है कि इतना सब कष्ट सहते हुए भी जनता
 विचारों में प्रगतिशील हो रही है। देखें हमारे स्वप्न कम प्रेरित होते
 हैं। कब भारत ससार के अन्य राष्ट्रों से ऊँचा से ऊँचा मिला
 कर चलने योग्य होता है ? बस आज इतना ही ! अब हम २१
 दिन बाद चोलेंगे। इन्किलान जिन्दाबाद !”

नलिन ने इस यन्त्र को भी यथा स्थान छिपा दिया।

१२

“मैं कुछ नहीं सुनना चाहता, मुझे पैसे दें। आज ताँटी
 नहीं पिऊँगा तो मर जाऊँगा। पिछले दिनों बीमार रहा तो चानू

ने मुझे एक भी पंसा नशा दिया। लाव, पैसे लाव, नहीं तो मैं मर जाऊँगा तू विधवा हो जाणगी, तेरे बच्चे मॉगते फिरंगे, ताड़ी के पैसे देकर तू मुझे बचा ले।”

“तुम्हारी अकल को हो क्या गया है। मैं पैसे कहा से लाऊँ। राधे पन्द्रह दिन से बीमार है। एक दिन भी वह इस लायक नहीं हुआ कि मैं इसे छोड़कर काम पर जाती। दिन-दिन भर ताड़ी खाने में पड़ रहे हैं—काम नहीं होगा तो बाप स्या तुम्हें अपने घर से देगा।”

“अरे देगा, उसका बाप देगा। अगली पन्द्रह तारीख को हडताल कर रहे हैं, हडताल। उसका बाप पैसे देगा। ताड़ी नहीं पीऊँगा तो मर जाऊँगा। आज तू पैसे दे दे ताड़ी के लिए मुझे। लाव, नहीं तो फिर मागता हूँ चुड़ैल मो मैं जानता हूँ तू मुझे मार डालना चाहती है, इसीलिए पैसे नहीं देती। तू तो ननकू के घर में चली जायगी और मैं मर जाऊँगा।”

“तुम्हें लाज नहीं लगती मेरे लिए पराए मर्द का नाम लेते। ननकू भाई के बराबर है मेरे। तुम्हें ताड़ी की आदत को छोड़ने के लिए कहता है, इसलिए उसके लिए ऐसी बात बोलते हो। कितना भला आदमी है। हम लोगों के लिए कार-ग्वानों के मालिक से केसा लड़ता है। घर-बार को छोड़कर, स्त्री बच्चों का छोड़कर, जो हम लोगों की भलाई में लगा हुआ है उसके बारे में ऐसी बातें नहीं कहना चाहिए।”

“नहीं कहना चाहिए, हाँ नहीं कहना चाहिए नयनतारा

देवी भी तो यही कहती है। नहीं कहना चाहिए। लेकिन मुझे ताड़ी के पैसे दे दे। मैं किसी को कुछ नहीं कहूँगा। तुम्हें भी कुछ नहीं कहूँगा। अभी जो मारा है। इसकी माफ़ी माँगता हूँ। लेकिन तू मुझे पैसे दे दे, चुडैल। पैसे दे दे, नहीं तो तुम्हें आज यहीं मार डालूँगा।’

“अगर मुझे मार डालने से तुम्हें पैसे मिल जाय और तुम्हारी जान बच जाय तो तुम मुझे मार डालो। लेकिन मुझे जिन्दी के पास पैसे कतई नहीं। राखे को बड़ा जोर से बुझा चढ़ा है। उसकी दवाई तक के लिए तो हैं नहीं पैसे।’

“है, तेरे पास उसकी दवाई के पैसे हैं। मेरी दवाई के पैसे नहीं हैं। तू मुझे जान से मारना चाहती है। ले, मैं तुम्हें मारता हूँ।” इतना कह कर उसने लात और घूँसों से स्त्री को फिर मारना आरम्भ कर दिया। उसकी स्त्री हाथ, हाथ, चीख उठी। नयनतारा ने अब दरवाजा थप थपाया। ‘भींगन, ओ भींगन, अरे ले, तू अपनी ताड़ी का उर्तन ताड़ीखाने में ही मूल आया। ले इसमें ताड़ी है पीले।’

इतना सुनत ही स्त्री को पीटना छोड़कर भींगन ने दरवाजा खोल दिया। देखा तो नयनतारा—उसने कहा “लाओ कहाँ है ताड़ी।” नयनतारा ने अपना मुँह दूसरी ओर को घुमा लिया। भींगन के मुँह से ताड़ी की बहुत बुरी बदबू आ रही थी। उसने तुरन्त ताड़ लिया। नगे में यह अपनी स्त्री को पीट रहा था। नयनतारा को देखकर भींगन बोला—“अरे तू तो देवी हो।

ताड़ी पीने को मना करती हो। और कहती हो ताड़ी पीले।
लाओ कहाँ है ताड़ी। लाओ दो।”

नयनतारा ने कहा—“भींगन भाई, तुमने उस दिन
कचन को आग पीटने से कसम खाई थी। आज उसे फिर
पीट रहे हो। तुम्हारा बच्चा बीमार है। तुम्हें उसकी
चिन्ता नहीं।”

“उसकी चिन्ता तुम्हें है, उस चुड़ैल को है। पर मेरी चिन्ता
किसको है, बताओ ?”

“ननक को।”

“ननक ! ननक, जो हमें रोजी से छुड़ाना चाहता है। हमसे
हड़ताल करवाना चाहता है, उसे हमारी चिन्ता है। वह तो
हमें भूखों मारने की बात कह रहा है। बाबू ने बताया है। ननक
घाण्डाल है। मजदूरों का दुश्मन है। हम उसकी बात नहीं
मानेंगे। उसकी बात मानेंगे तो ताड़ी पीने को नहीं मिलेगी।
मैं मर जाऊँगा। नयनतारा देवी, तुम मजदूरों का काद दूर करने
की बात कहती हो न। आज मुझे भारी कष्ट है। बहुत भारी।
पैसे दे दो, ताड़ी पिऊँगा। बचा लो मुझे देवी।”

नयनतारा ने कहा—“भींगन, मैं घर से पैसे लेकर नहीं चली हूँ।
यदि मेरे साथ दो घण्टे बाद घर तक चलेगा तो पैसे दूँगी।”

“नहीं तुम्हारे पास पैसे हैं। तुम पैसे दे दो मैं तुम्हारे पैरो
पड़ता हूँ। मुझे पैसे दे दो। मैं मर जाऊँगा। ताड़ी नहीं पिऊँगा
तो।”

‘मैंने कहा न। पैसे मेरे पास हैं नहीं।’

“है, तुम्हारे पास पैसे हैं। मुझे देती नहो हो। लाओ, तुम्हारा धड़गा लाओ। उसमें पैसे हैं।” इतना कहकर उसने नयनतारा के धड़गे की ओर हाथ बढ़ाया। वह पीछे हटी। भींगन बोला—‘पीछे क्यों हट रही हो। मैं सब पैसे नहीं लूँगा सिर्फ आज की ताड़ी के। तुम नहीं दोगी तो मैं छीन लूँगा।’ वह नयनतारा के हाथ पकड़ने के लिए बढ़ा। नयनतारा फिर पीछे हटती। इस बार वह रेलिंग से गिरती-गिरती बची।

नयनतारा ने कहा—“भींगन, तुम तो मेरे भाई हो। वहिन से पैसे नहीं छीनते, उसे देते हैं।” भींगन मदनमत्त था। उसने नयनतारा का हाथ पकड़कर कहा—“वहिन की प्रन्ची। तीन प्रण्टे से गुशामद कर रहा हूँ। पैसे नहीं देती।” नयनतारा की आँखें चमक उठी। आस पास के लोग अपने-अपने घर से निकलकर नयनतारा को बचाने दौड़ पड़े। इसी बीच एक नव-युवक ने आकर भींगन का हाथ पकड़ कर उसे जो मटका दिया तो वह चीख उठा। ‘अर दौड़ो मुझे मार डाला।’ युवक ने उसके गाल पर दो तमाचे खींचकर जड़ दिए। बोला—“जहालत। किससे छेड़ने हो मूर्ख। तुम्हारी भलाई करने वाले को नहीं पहचानते?”

“अपनी भलाई करने वाले को पहचानने की इनकी शक्ति होती तो आज यह दूसरों की भलाई करता होता नवयुवक। यह तो आज इस रीति में है कि अपनी भलाई क्या है, यही नहीं जानता।” नयनतारा ने कहा।

लेकिन यह क्या, नवयुवक को देख कर नैना चौक क्यों पड़ी ? एक क्षण वह उसे सिर से पैर तक बड़े ध्यान से देखती ही रही । नना को अपनी ओर इस प्रकार देखते हुए देख युवक को कुछ याद सा आने लगा । उसे लगा, जैसे इस महिला को बहुत पहले उसने कभी बहुत ही अच्छी तरह देखा है । उसने अपने सिर को सहलाया तो एकदम ग्याल आया । नयनतारा ने सोचते-सोचते मुस्मगा दिया । मन में बोली वही हाव, वही भाव, हो न-हो यह वही है । उसने कहा—“आपका नाम रामू तो नहीं ।”
 ‘और आपका नाम नैना तो नहीं ।’ युवक ने कहा । दोनों एक क्षण भर के लिये अपने गांव में पहुँच गए । नैना बोली—‘तुम तो पहचाने भी नहीं जाते रामू । कितने बड़े हो गए हो ।’

“और न तुम पहचानी गई ।”

लेकिन तुम यहाँ कहाँ ?”

‘और तुम यहाँ कहाँ ?’

जोर का तमाचा लगने से भींगन का नशा उतर चुका था । जमिन्ग होकर वह नीचा सिर किए एक ओर खड़ा हो गया । नयनतारा की उस पर दृष्टि पड़ी । उसने रामू से कहा—“यह तो लम्बी बातें हैं । पहले इनसे निपट लें । आज तुम्हें मेरे साथ ही चलना होगा ।”

“और क्या ? तुम सोच रही हो कि मैं तुम्हें योंही छोड़ कर चला जाऊँगा ।”

नैना ने भींगन के कमरे में जाकर उसके बन्चे को देखा । उसे

बाईं थी। उसकी स्त्री का हाठस वैसाया। फिर भीगन से उसकी ललती पर पारचाताप करवाया और कचन से यह कह कर बिना कि आज उसके एक अतिथि अचानक आ गए हैं, इसलिए वह उसके पास कुछ देर बैठ नहीं सकेगी। फिर आणगी और ठ कर उससे बातें करेगी।

नैना और रामू दोनों कालवादेवी की ओर जाने वाली ट्राम डी में बैठ गए। भीड़ अधिक होने की वजह से रामू को ट्राम डी में खड़ा रहना पड़ा था और नैना को कुछ दूर जाकर सीट मिली। अतः रास्ते में उन दोनों में थोड़ी सी बातें भी नहीं हो सकीं। दोनों के मन में एक दूसरे के बारे में जानने की उत्कण्ठा ते पल बढ़ती ही रही। कालवादेवी रोड़ के एक स्टेशन पर म गाड़ी के रुकते ही नैना ने रामू से उतर जाने का संकेत किया। नैना उतर पड़े। थोड़ी ही दूर पर घर था। नैना ने पूछा—“मम्ई कैसे आ गए। और गांव का लिनास क्या हुआ।”

“यही प्रश्न मैं तुमसे पूछता हूँ।”

“हमारे इस प्रकार के कई प्रश्न यदि आपस में टकराएंगे हम कुछ भी कह-सुन नहीं सकेंगे।” नैना ने कहा। इस पर नैना ने बड़े जोर से हस पड़े। नैना का घर आ गया था। दरवाजा ल कर उसने रामू को एक कुर्सी पर बैठने को कहा। फिर नैना—“मैं पहले जाकर चाय का पानी गरम करने रख आऊँ, बातें होंगी जम कर।” और यों कह कर वह पास वाले रेल में चली गई। राम ने देखा। कमरा बहुत ही मामूली

तरीके से सजा हुआ था। एक ओर एक टूटी मेज रखी हुई थी। बीच में एक काला गुरदरा कमल बिछा हुआ था। दीवारों पर कोई तस्वीर नहीं थी। टेबुल पर जमी हुई छद्म पुष्पें रखी थीं। कमरा और दीवारें साफ थीं। एक ओर दो मन्दक रखे हुए थे। चारों ओर सिर घुमा कर वह कमरे का निरीक्षण कर ही रहा था कि नैना आ पहुँची। बोली—“देर हो गई।” और नीचे ही कमल पर बैठ गई। रामू ने कहा—“मैं भी नीचे ही बैठूँगा। ऐसे बैठ कर बात करने में आनन्द नहीं आएगा।” और वह भी उठ कर कमल पर बैठ गया। बोला—“मिडिल पास किया—इसका पता तो तुम्हें था ही। डाक्टर साहेब के सहयोग से मैंने एक-एक तक और पढ़ लिया। इसके बाद बी० ए० में समय नहीं गँवा कर जल्दी डाक्टर बनाने के लिए उन्होंने मुझे नागपुर भेजा। और गत वर्ष से एम० बी० डी० एस्० के लिए यहाँ आया हूँ। सीमाय कि तुम्हारी गुलाकात हो गई। अब तो समय-असमय तुम्हें कष्ट देता ही रहूँगा। अपना इतिहास बताओ, तुम्हारी तरफ़की रश्क करने लायक है।”

नैना ने अपना पिछला सब जीवन कह सुनाया। रामू ने हँसकर कहा—“ओह तब तो नयनतारा देवी हमारी मामी है। तो मामी श्री, अब तो हम खाना भी यहीं खायेंगे। चलो, अच्छा हुआ भाई, जिस वस्तु के लिए प्राण छटपटा रहे थे। वह तुम लोगों के आश्रय में मिल जायगी। हाँ, यह तो बताओ, मंगल; दासजी मुझे अपने सघ में ले लेंगे?”

“अवश्य ।” कह कर नैना चा लेने चली गई । उसका जाना ही था कि तनसुखा ने कमरे में प्रवेश करके कहा—“चा मेरे लिए भी लेती आना नयनतारा, मैं आ गया हूँ ।” और ओवर कोट उतार कर उसे कील से टाँग तनसुखा ने ज्योंही मुड कर देखा तो वह आनन्द में भर कर चिल्ला उठा—‘ओह राम् । मेरा राम् । तुम्हे, तो मैं आज खोजने ही जाने वाला था । बड़ा जरूरी काम आ पड़ा है । इतने दिनों से यहाँ हो और हमें खबर ही नहीं । कभी मिले ही नहीं ।’ फिर धीरे से वह बोला—“मनसुखराम आने वाले हैं ।”

रमेश ने पहले झुक कर तनसुखा के पैर छुए फिर आनन्द में भर कर बोला—“सच । ओहो, कितने आनन्द की बात है ।”

“हाँ, इस विषय में मुझे तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं ।” इतना कह कर तनसुखा ने बैठक वाले कमरे से अन्दर को मुलने वाले एक और कमरे का दरवाजा खोला । फिर रमेश का हाथ पकड़ उसे भीतर ले जाते हुए, नैना से कहा—“नयनतारा, जरा तुम भी आओ, तुम्हे भी एक विशेष समाचार देना है ।”

x

x

x

हडताल सुन्दर मिल से आरम्भ हुई । हजारों मजदूर ‘इन्कलाब जिन्दाबाद’, ‘मजदूरों की जय हो’ और ‘हमारे खून चूसने वालों का नाश हो’—आदि के नारे लगाते हुए शहर की प्रसिद्ध-प्रसिद्ध सड़कों से रोज गुजरने लगे । हडतालियों में स्त्री-पुरुष और छोटी उम्र के बच्चे भी शामिल थे । मिल मालिकों के समक्ष मजदूरों ने अपनी माँगें पेश कर दी थीं । हडताल के

पन्द्रहवें दिन भी मालिकों की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। सोलहवें दिन विदेश से लौटे हुए मिल के एक अधिकारी धनीराम ने श्रमिकों के अग्रणी नेताओं से मिल कर, उन्हें समझाने का प्रयत्न किया—“मटेरियल नहीं मिल रहा है। प्राइवरान जार। रखन तक मुश्किल हो रहा है। आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा ड० पी० टी० में चला जाता है। वचत तो कुछ है ही नहीं। बैतन रुह से बढ़ाया जाय।” इस पर नेताओं ने कहा “थदि मिल मालिक मजदूरों की माँगों को पूरा नहीं कर सकतें तो मिलें बन्द कर दी जाय। हमारे श्रमिकगण गांवों में रंगती करने चले जायेंगे।” इस पर धनीराम क्रुद्ध होकर बोले—“तुम लोग काम नहीं करोगे तो क्या हमारी मिलें बन्द हो जायेंगी। तुम लोगों के पास खाने को तो है नहीं। तुम्हारे बच्चे भूख के मारे रो रहे हैं, औरतों के पास कपड़े नहीं हैं, वे लाज से मर रही हैं और कुछ जयचन्दों के भड़काने से तुम लोग अपने आपको सतरे में डाल रहे हो। टालो। हमें तुम्हारी परवाह नहीं। देखते हैं, कैसे काम पर नहीं आते हो। मैं कहता हूँ और वाजी लगाता हूँ कि तुम में से ही हजारों मजदूर आज से पाँच दिन के अन्दर-अन्दर काम पर आ जायेंगे और न आए तो मुझे दुनिया—अपने कामों का चाणक्य कहना छोड़ दे। लो, यह मेरी गुले आम लुनौती है। अब तक यहाँ के मिल मालिक छुपे-छुपे मजदूरों में फूट डालते थे, अब मैं गुले आम तुम में से हजारों मजदूरों को काम पर ले आऊँगा। तुम में फूट डालूँगा। देखें कौन रोकता है मुझे। छ वर्ष पिलायत

मे पिता है, कुछ सीखा है, कोई चास नहीं गोदी है। यह मेरा खुला चेलेंज है। नहीं मानते हो तो तैयार हो जाओ।” नेताओं ने रुका—“यह खुला चेलेंज नहीं—खुले आम दिन-दहाड़े अन्याय की गला-फाड़ घोषणा है। मजदूरों की छातियों पर छुरियों के करारें चार है। लेकिन जब यही आपको अभीष्ट है तो यह याद रहे—अन्याय के उल पर इस दुनिया में कोई भी नहीं जीत पाया है।”

“जीत का पता तो सघर्ष के बाद चलेगा। पहले सघर्ष की शक्ति तो बढ़ोगे।”

“ठीक है, फिर सघर्ष का झूठा आरोप इन गरीब मजदूरों पर न लगाया जाय। वे जो कुछ समय पर कर गुजरेंगे, उसका ज़िम्मा बनवालों पर होगा।”

“ओहो। मजदूर मेरी मिलों पर बाम्ब फेंक रहे हैं उनमें इतनी ताकत ?”

“यह तो बक ही बताएगा।”

“बक तो वह आने वाला है जब तुम सब जिसे आज गाली दे रहे हो—उसके दरवाजे पर अपने नाक रगड़ने आओगे।”

“यह बहुत बड़े घमण्ट की बात है।”

“मैं ऐसे आदमियों से बात करना अपना अपमान समझता हूँ।”

“आप अपने मान की रक्षा कीजिए हमारी तो यही मांग है। यही प्रार्थना है। हमारा यही सत्याग्रह है।”

के छिलके, सड़ी सज्जी और अण्डे फेंके। ननक के सिर में एक बहादुर ने लाठी भी मार दी। गरज कि आधे से अधिक मजदूर अपने निश्चय से डिग गए। काम पर जाने को तैयार हो गए। हड़तालियों का सारा उत्साह भग हो गया। दूसरे ही दिन उनकी सख्या एक चौथाई ही रह गई।

हड़ताल से विमुख मजदूर दल बाँधकर काम पर चले। ननक, मानकर, राण्डेकर, चमनभाई और जयकर हड़तालियों का जत्था लेकर 'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'अन्याय का नाश हो' 'जयचन्दों को बुद्धि मिले आदि के नारे लगाते हुए मिल के फाटन पर पहुँच गए। ज्योंही अविकारियों की कारें मिल के फटन पर आतीं—उपस्थित हड़तालीगण जोर-जोर से नारे लगाते—'इन्कलाब जिन्दाबाद' 'अन्याय से लड़ते रहो।' आखिरी कार वनीराम की थी। उसे देखकर हड़तालियों ने चीगुने उत्साह से नारे लगाए। वनीराम ने अपनी कार रुकवा ली—फिर हड़तालियों की ओर मुखातिब होकर बोले—“मैं तुम लोगों को बार्निंग देना चाहता हूँ कि मिल के गेट पर उपद्रव मचाना छोड़ दो। काम पर जाने वाले लोगों को मिल में जाने दो। वरना जो लड़ाई होगी, उसका जिम्मा मिल पर नहीं होगा। मैं यह बताए देता हूँ कि काम पर आने वाले मजदूर तुम लोगों से सख्त चिढ़े हुए हैं। और गेरुने पर वे मारपीट भी कर सकते हैं। इसलिए जिसने अपनी जान धीपी और बच्चे ध्यारे हों, वे एसी मूर्खता न करें।

अपने घर लौट जाँय। या मिल में काम करने आ जाँय। मैं पहले कह चुका हूँ कि उन्हें मिल नहीं निकालेगी।”

हडतालियों के नेताओं ने कहा—“हमें अपनी जान, धीवी और धन्नों से दुनिया में इन्साफ अधिक प्यारा है। न्याय होगा तो जान और धीवी-धन्ने भी सुरक्षित रह सकेंगे। ऐसी अन्याय भरी दुनिया में उन सबको रखकर हम कौनसा न्याय करेंगे?”

“इसका मतलब यह है कि तुम लोग लड़ने के लिए पूरी तरह तैयार होकर आओ। मुझे पुलिस में ग्यार करनी पड़ेगी।” धनीराम ने डपट दी।

नेताओं ने कहा—“अन्याय के साथ लड़ने के लिए हम हमेशा तैयार हैं। पर लडार्ड-भगड़े का तो बीज आपने ही बोया है। आप अब भी लडार्ड को उमसाने की बात कर रहे हैं। आप कुछ नहीं कर सकते तो हमें अपने भाग्य पर छोड़ दें। हम अपने भाइयों से आप निपट लेंगे। आपके बीच में न पड़ने से हमारे आपस के भगड़े अपने आप मिट जाएँगे।”

“मैं बीच में नहीं पड़ूँगा तो तुम सब आपस में कटकर भग जाओगे, समझे। जिलायत से मे ग्यासतीर से यही सीखकर आया हूँ।”

“बेहतर यही होगा कि हम आपस में लड़ें। वस आप हमारे मार्ग से हट जाँय। हम लड़ने नहीं, प्यार करने आए हैं।”

डवर इनकी यह बातें चल ही गयी थीं कि उधर से काम पर जाने वाले मजदूरों के जत्थे-के-जत्थे आकर गेट पर रुकने लगे। धनीराम ने यह देखा तो उन्होंने हड़तालियों को भिड़ककर कहा—“हटो सामने से, बरूबास बन्द करो।”

हड़तालियों को जोश चढ़ आया। गगनभेदी नारे लगाना शुरू किए। ‘इन्कलाव जिन्दावाद’ ‘मजदूरों एक हो जाओ’, ‘फूट से घर बरबाद है।’ धनीराम ने क्रोध में भरकर कहा—“तुम लोग बरूबास बन्द करके एक तरफ हट जाओ। मजदूरों को जाने दो काम करने।” इसके उत्तर में ननक, जयकर, मानकर और ग्याण्डेकर गेट के बीच में लेट गए। जोश में आकर और हड़ताली भी गेट पर लेट गए। पड़े-पड़े ही वे लोग नारे लगाने लगे। अब धनीराम क्रोध में आगबबूला हो गए। गरज कर कहा—“सामने से भाग जाओ। अपनी जान बचाओ। वर्ना कार चला दूंगा।” मजदूरों ने अपने नारे और बुलन्द कर दिए। हड़तालियों में इतना जोश देखकर काम पर जाने वाले बहुत से मजदूर फिर उधर मिलकर नारे लगाने लगे। धनीराम यह देखकर चिढ़ उठे। उचित अनुचित सोचना भूल गए। और जब उन्होंने देखा कि बहुत से मजदूर हड़तालियों में पुनः मिल रहे हैं। और उन द्वारा खर्च किए गए हजारों रुपयों पर पानी फिर गहा है तो वे क्रोध में एकदम पागल हो उठे। उन्होंने चीख मार कर कहा—“मैं कहता हूँ। तुम लोग हट जाओ वर्ना मैं कार चला दूंगा।” इस पर फिर गगनभेदी नारे लगे।

‘इन्फ्लाय जिन्दाबाद’ ‘मजदूरो एक हो जाओ।’ धनीराम ने अपने बाल नोच लिए। वे विवेक शून्य हो गए। उन्होंने मार स्टार्ट की। इजिन की घर-घर आवाज मजदूरों के नारों से दब गई। धनीराम अपने बग में नहीं रह सके। उन्होंने कार चला दी। बहुत से गेट पर लेंटे हुए मजदूर उठकर भाग गए। लेकिन ननक और मानकर के सीनों पर से कार गुजर गई। मजदूरों में हा-हा कार मच गया। मिल के फाटक बन्द हो गए। शसस्त्र पुलिस मजदूरों को दबाने आ गई।

‘श्रमिक सभ’ के नेता ननक और मानकर की हत्या के समाचार सारे शहर में बिजली की तरह फैल गए। शहर में अन्य सभी मिलें धड़ाधड़ बन्द हो गईं। और हड़तालियों की सरया हजारों से लाखों पर पहुँच गई।

शहर की गलियों, सड़कों और प्रत्येक सार्वजनिक स्थान पर श्रमिकों के जलथे-के-जलथे नारे लगाते हुए घूमने लगे। जब तक उनकी माँगों की पूर्ति नहीं की जाती—तब तक वे उन पर डट रहने की सौगन्ध खा चुके थे।

मिलों के बन्द रहने से हजारों रुपये रोज की हानि होने लगी। मिल मालिकों की आँखें खुल गईं। और इस मामले को ते करने की फिक्र में उनकी नींद तक हराम हो गई।

आगिर श्रमिकों की जीत हुई। पूँजीपतियों को हारना पड़ा। उन्हें श्रमिकों की माँगें शत-प्रति शत माननी पड़ीं। धनिकों का अहंकार मिट्टी में मिल गया। लम्बी-लम्बी मूर्खों पर तान देने

चाले धनिक गरीबों के सामने झुक गए। यह गरीबों की अमीरों पर जीत नहीं थी—बल्कि न्याय की जीत थी अन्याय पर। अन्यायी धनीराम को ननकू और मानकर की हत्या के अभियोग में फाँसी की सजा हुई।

१३

सारे गाँव में विजली की तरह खबर फैल गई। कुछ ही देर में गाँव के समस्त नर-नारी एकत्रित हो गए। वर्षों बाद रामू, नैना, तनसुग्गा और मनसुग्गा को अपने धीच पाकर वे आनन्द में विभोर हो गद्गद वाणी में तरह तरह की बातें करने लगे। एकत्रित जनसमूह में से प्रत्येक उन लोगों के अत्यधिक निकट पहुँच कर उन्हें सिर से पैर तक गूँव जीभर देग लेने की इच्छा में धक्का मुक्की करने लगे।

नैना भीड़ को इतनी उत्साहित देख कर उससे लाभ उठाने की गरज से बोली—“भाइयो और बहिनो! आप सब लोग मिल कर हमें जिस प्रकार उत्साहित कर रहे हैं उसके लिए यदि हम आपको धन्यवाद दें तो यह हमारी भारी भूल होगी। इसका अर्थ यह होगा कि हम आपसे बहुत दूर हो गए हैं। हम कुछ और बन गए हैं। हम किसी और दुनिया में रहना चाहते हैं। धन्यवाद देकर हम आपसे छुट्टी लेना चाहते हैं। और यह चाहते हैं कि वस मुलाकात हो गई। आप अपना काम देंगे और हम

अपना । हम आपको वन्यवाद दे यह छोटे मुँह बड़ी बात होगी । हम इस गाँव के वच्चे हैं—केवल वन्यवाद देकर हम इस मातृ-भूमि से उच्छृण्व नहीं हो सकते । इसके प्रति हमारे बड़े-बड़े कर्तव्य हैं । और वे कर्तव्य ही हमें आज यहाँ बड़ी दूर से मीच लाए हैं । मनसुख और तनसुख रामजी बड़ी ऊँची आत्माएँ हैं । इन लोगों ने बड़ी-बड़ी तपस्याएँ की हैं । उनकी प्रत्येक र्पास में मातृभूमि के दुःख को दूर करने की तीव्र लालसा लहरा रही है । और डाक्टर रमेशचन्द्र—आप लोगों को यह जानकर बहुत बड़ी प्रसन्नता होगी कि आपका वह गामू जो आपके खेतों में अभी पास गोदवा या याज—डाक्टर रमेशचन्द्र हो गए हैं । मातृभूमि के कष्टों को देखकर उनके दिल में जो भयंकर आग की भट्टी बधू करके जल रही है, उसको ये ही अनुभव कर सकते हैं । दूसरों की शक्ति के परे की बात है—इनकी लगन और सेवा की सीमा का पार पाना । मैं अधिक समय लेकर डाक्टर साहेब के समय को नष्ट नहीं करूँगी क्योंकि वे आप लोगों से अपने मा-री बात कहने के लिए उतावले हो रहे हैं । मैं तो केवल यही कहना चाहती हूँ कि जिस मातृभूमि के हमारे ऊपर इतने उप-कार हैं—उसके बदले उसे धन्यवाद देकर ही कैसे दुष्टमारा मिल सकता है । हाँ, एक बात मैं अनिवार्य कह देना चाहती हूँ यह कि स्त्री के हठ से प्रत्येक व्यक्ति भली भोति परिचित है । जब इस गाँव से मैं बेइज्जत होकर निकाली गई थी तब मैंने प्रण किया था कि मैंने

किन्तु कर्तव्य की प्रेरणा ने उस पर जीत पाई । और आज मैं उसी गाँव में जहाँ से अपमानित होकर निकली थी—अपने आपको मिटाने और जरूरत पड़ने पर अपना रक्त तक देने के लिए तैयार होकर आई हूँ । यदि जो कह रही हूँ— उसमें से कुछ भी फर पाई तो मैं आप लोगों को और अपनी मातृभूमि को फिर हृदय से धन्यवाद दे सकूँगी । इतना कह कर नैना अपने स्थान से हटकर एक ओर गड़ी हो गई ।

रमेश ने आगे बढ़ कर सब लोगों को अभिवादन किया, फिर बोला “मेरे आदरणीय वृद्ध जनो, बहिनो, भाइयों और कल के बहादुरो । जैसा कि नयनतारादेवी ने कहा कि मैं आप लोगों के खेतों में घास रोदने की मजदूरी करने वाला रामू—आज डाक्टर रमेशचन्द्र के रूप में गया हूँ—यह सही है । लेकिन यह भी आपको सही मानना पड़ेगा कि मैं वही रामू हूँ और आज भी आपके खेतों में घास रोदने मुझे वही प्रसन्नता होगी । फर्क इतना ही है कि डाक्टर रमेश - उस अयोग रामू की अपना आज, अपने कर्तव्य को भली प्रकार समझता है । यह विद्या का चमत्कार है । यदि उस समय के मेरे साथी जिनमें से बहुतों को यहाँ देख रहा हूँ अन्धरी तरह से पढ़ लिग गण होते तो आज मेरी तरह उनको अपने कर्तव्य स्पष्ट न सिखाते । आज हमारे गाँवों में वैयक्तिकता का जो अग्रगण्य - साम्राज्य थाया हुआ है, वह हमारे भाइयों की निरक्षरता का ही कारण है । यदि आप लोगों में से कुछ ही भाई पढ़े लिखे

और अपनी जवाबदारी को समझने वाला होते तो क्या मजाल था कि आज ठाकुर विजय शमशेर आप लोगों को अपने जूतों के तले रौंदते। क्या ताकत थी उनकी कि नारी काफ़ा को वह गिर-फ्तार करके अज्ञात स्थान को पहुँचा देते और आप लोग चुपचाप मजबूर होकर अपने काम में लग जाते। उन्हें भूल जाते। दुख है कि काफ़ा ने अपनी जिन्दगी आप लोगों के लिए मिटा दी। और आप मजे में अपने घर में सो रहे हैं। ठाकुर के आदमियों को बेगार दे रहे हैं। उनकी गालियाँ सह रहे हैं। उनके पीछे सह रहे हैं। उनके अत्याचार सह रहे हैं—और सह रहे हैं—अपनी वहिन प्रेयियों की बेइज्जती। ठाकुर साहेब आते हैं और आप लोगों की फसलों को खेतों-ही-खेतों में कटवा कर ले जाते हैं। फ़मात हैं आप, काटते हैं वे। खाते हैं वे, भूखों मरते हैं आप। और इस पर तुरा यह कि वे महलों में रहते हैं। आप भोपड़ियों में। वे चमचमाती कारों में चढ़ते हैं, आप नगे पैर घूमते हैं—फ़कड़ों में, पत्थरों में, कौटों में, भाड़ियों में, भग्याड़ों में। वे आपकी मेहनत पर मोटा होते हैं, मूर्खों पर ताव देते हैं। और आप अपने पेटों को सिकोड़ते हैं—उन पर पट्टियाँ बाँधते हैं—आँखों को खोते हैं—और जानवरों की मौत मरते हैं। उनकी पीढ़ी दर-पीढ़ी धनवान और शक्तिवान होती जाती है और आपकी कगाल और नमाल। इस पर वे आप पर राज्य करते ही जाते हैं—अन्याय करते ही जाते हैं और आप उन्हें खुशी से सहते ही जाते हैं। वे आप पर अत्याचार करते हैं और आप

उन्हे सहते है । आपकी आँखें नहीं खुलतीं । आप बेवस है । लाचारी से बंधे हुए है । क्यों ? इसके केवल दो उत्तर हैं । एक अशिक्षा और दूसरा फूट । किसान भाई वेपढे-लिखे है—इस बात को तो वे जानते है । लेकिन उनमे फूट बड़ा भारी घर बनाये बैठी है—इसका उन्हे पता नहीं है । यदि आप लोगों मे एकता होती तो आज हमारे देश के किसान अन्य देशों के किसानों की तुलना मे निरे बेवस न होते । मेरे शब्द कडवे होते जा रहे हैं । शायद आपने मेरे मुँह से बड़े ही मीठे शब्दों की आशा की होगी । और मेरे इस मुँहफटपने पर आप मे से बहुत से नाराज भी हो रहे होंगे । लेकिन लाचारी है - कोई भी भला विचारवान आदमी किसानों की ऐसी दुर्दशा को नहीं देख सकता । मुझ मे भी यही बात है । जब से मैंने सुना है कि ठाकुर विजय शमशेर ने काका की रिहाई माँगने वाली जनता पर घुड सवार छोड डिये है, तब से मेरा गून गौल रहा है । इस जननी-जन्म-भूमि की धूल को प्रणाम करने के पहले मैंने यह प्रण कर लिया है कि जब तक मे यहाँ से अत्याचार और अन्याय का जड को ग्योद कर नहीं फेंक दूँगा तब तक इस गाँव से नहीं हटूँगा । यहीं मर जाऊँगा । आज हम शपथ खाएँ कि हम एक है और सदा एक ही रहेंगे । हम कभी आपस मे फूट नहीं पड़ने देंगे । और हमारे अन्दर आज जो फूट बैठी हुई है । उसे सदा के लिए निकाल देते हैं । मेरे बन्धुओ । हममें एकता स्थापित होने के बाद एक ठाकुर तो क्या ससार के समस्त ठाकुरों के महाराजाधिराज भी हमारा बाल बाँका नहीं

सकेंगे। हमें थर-थर कंपा वनं वाले तब हमारे सामने थर-थर
 फौपने लगेंगे। हमें इस प्रान्त में ही नहीं, बल्कि सारे देश और
 सारे ससार के किसानों और श्रमिकों में एकता स्थापित करनी है।
 याद रहे—जनता के लिए एकता वह महा मंत्र है—जिसके सिद्ध हो
 जाने पर—जनता का राज होगा, जनता की अपनी सरकार होगी,
 जनता अपना निबटारा आप करेगी, जनता अपने लिए
 अपनी पसन्द के विधान आप बनावेगी। और सोचिए तब
 जनता कितनी मुखी होगी ? आज यदि हमारे देश के सात लाख
 गाँवों के किसान मिल कर एक हो जाँय—तो विदेशियों की सत्ता
 हमारे देश में आज जो मनमानी कर रही है—वह इसी क्षण
 समाप्त हो गया। फूट डालो और राज करो के कूटनीतिज्ञों
 का इस देश से आज ही जनाजा निकल जाय—कार्यको आरम्भ
 करने के पहले मैं अपने किसान भाइयों की एक बहुत बड़ी सभा
 करना चाहता हूँ—जिसमें आस पास के सैकड़ों गाँवों के हजारों
 किसानों की उपस्थिति हो। और जिसमें मैं अपने उद्देश्यों पर
 पूरा प्रकाश डालकर सब से पूर्ण सहयोग की प्रार्थना कर सकूँ।
 इस तरह यह काम जल्दी हो सकेगा। इस सभा के प्रचार में मुझे
 फल ही आप लोगों की सहायता की आवश्यकता पड़ेगी। क्या मैं
 इस समय यह पृच्छने की दृष्ट्या कर सकता हूँ कि—फल कौन
 कौन भाई इस काम के लिए मेरे साथ आने को तैयार है ?”

इस पर गाँव के उपस्थित सभी किसानों ने एक स्वर से
 कहा—“हम सभी इस काम में हाथ बटाने के लिए तैयार हैं।”

आप हमें रास्ता दिखाइये। जरूरत पड़ने पर हम अपनी जानों की भी परवाह नहीं करेंगे। रमेश भाई ? हमें रास्ता दिखाओ।”

+

+

+

“शरीर तबे की तरह गम हो रहा है डॉक्टर, आज न जाओ, रास्ते में वहीं घुस्सारा जोर पकड़ लेगा तो क्या होगा ?” नना ने चिन्तापूर्ण शब्दों में कहा।

गले में कुर्ता डालते हुये रमेश बोला—“जाना कैसे कर सकेगा मामी। मैं न जाऊंगा तो इन अनपढ़ लोगों में उत्साह कैसे जागेगा ? ठाकुर तो अपनी करनी पर पूरी तरह से उतर आया हैं। जहाँ देखा वहाँ उसके आदमी मौजूद। कार्य्य कर्ताओं को भडकाते हैं, लालच देते हैं—फुसलाते हैं, निरस्साहित करते हैं, और मारते भी हैं। देखा न, मनोहर को कैसा मारा। बेचारे का हाथ ही तोड़ दिया। उधर ही से जाऊंगा—उसकी मरहम-पट्टी भी तो करनी है। जरा वह दवाई का चाम्स तो उठा देना। मेरी अच्छी मामी।”

तनसुया सुबह-ही सुबह, नदी से नहाकर आया था। अपनी वोती को सूखने के लिए फैलाते-फैलाते बोला—“जा रहे हो डाक्टर ?” किशनपुरा में ठाकुर के आदमियों ने चार कार्य्य-कर्ताओं को मारा—एक की हालत बड़ी खराब है। लोग बड़े भयभीत हो गए हैं।”

“स्थिति इतनी बिगड़ी हुई है कि यह घटनाएँ तो कुछ भी नहीं हैं मामा। अभी तो ऐसी कितनी ही, घुरी घटनाएँ सुनने

को तैयार रहना होगा।" दवाई ये बक्स को बन्द करने रमेश बोला।

“सच तो है ही। लेकिन किसानों में जो इतना धैर्य आ-जाय। भोलें भाई, तरह-तरह की शकाजनक बातें करते हैं। खुद भयभीत होते हैं—दूसरों को भी करते हैं। चरित्र—बल नाम की कोई चीज नहीं। मुँह पर स्या कहेंगे, पीछे कुछ और कहेंगे। मनोहर की माँ हरिहर के बाप को कह रही थी इन लोगों को शहर में कोई काम नहीं मिला यहाँ आ गए हैं। खुद काम नहीं करते; दूसरों को भी मेहनत मजदूरी से रोकते हैं।”

“दुनिया में कई तरह के लोग हैं—तरह-तरह की बातें करते हैं। मनुष्य अपने कर्नव्य के प्रति सन्का है तो समय पर सब ठीक हो जाता है। हमें बड़ी मभा बुलानी ही पड़ेगी। मैं सोचता हूँ कि आज से हम भी चार-चार गाँव रोज चक्कर लगाना शुरू कर दें।” रमेश जाने को उद्यत हुआ।

“जैसा तुम कहो। अरे। तुम्हारी आँखें तो बड़ी लाल हो रही हैं। मालूम होता है बुखार है तुम्हें।” इतना कहकर तन-सुग्गा—दूसरी धोती और टाविल फैलाने लगा। फिर कहने लगा—“कैसे लोग हैं। डाक्टर होकर भी अपने शरीर की चिन्ता नहीं करते।”

“मे कह तो गही हूँ कि आज इन्हें बुखार है और यह मानते ही नहीं—मना कर रही हूँ फिर भी तैयार हो गए। ये लो चल भी दिए।” नैना चूल्हे पर पानी रगड़ रही थी।

“बिना चलें काम कैसे होगा मामी । जिन्दगी थोड़ी है, काम बहुत । मामा । आज आप चार गाँव जरूर निपट लें । वैसे मामा से कह दें वे भी चार-छ गाँव ले लें । टाइम बहुत ही कम रह गया है । अरे यह क्या चक्कर आरहे हैं ।” रमेश वे मुँह से इतना निकल ही नहीं पाया था कि वह धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा । तनसुया जो अभी तक बोती सुना रहा था—तुरन्त मुड़ा देखा—रमेश उठने का प्रयास कर रहा था । नैना ने दौड़ कर उसे उठाया । फिर तनसुया से बोली—“जरा सम्हालिए मैं कम्यल बिछा दूँ ।”

थोड़ी ही देर में नैना ने चा बना कर तैयार कर दी । रमेश पीकर उठ खड़ा हुआ, बोला—“यह अच्छे निशान हैं । जिस काम के पहले अनेकों टिक्कतें उठ गयी होती हैं, वह प्रायः सफल होता देखा गया है । कम-से-कम क्रान्तियों के आरम्भ में तो ऐसा ही हुआ है । क्रान्तिकारियों के जीवन में पहले पहल कभी सफलता नहीं आई ।” इतना कह कर वह ज्योंही चलने को हुआ कि मनसुया आता हुआ दिखाई दिया । वह ठहर गया ।

दीवार से लाठी खड़ी कर गले में से दुपट्टा निकाल अपनी आँखों को पोंछता हुआ मनसुया बोला—“आज रात भर चला हूँ । जरा नींद लूँगा । क्या डाक्टर चल दिए ? या कहीं से आ रहे हो ? बड़े थके हुए मालूम पड़ते हो ।”

नैना ने बीच ही में बात काट कर कहा—“देखिए न, इतना बुगार है । अभी चक्कर मारकर गिर पड़े थे । हम बड़ी

सभा का समय हो रहा था। बात की बात में हजारों किसान स्त्री पुरुष जो दूर-दूर से आए हुए थे—मैदान में आकर प्लेट-फार्म के चारों ओर जमीन पर बैठ गए। रमेश ने सभा को इतनी सादी रखी कि प्लेटफार्म पर बिछौना तक नहीं बिछाया गया था। ठीक समय पर नना, तनसुखा, मनसुखा, काशी काका और सुधीर तथा सभा के अन्य प्रबन्धक प्लेटफार्म पर आकर बैठ गए। सभा की अनुमति से रमेश ने सुधीर को सभापति बनाया।

नैना द्वारा 'वन्दे मातरम्' गीत गाए जाने के पश्चात् सभापति ने उठकर सभा को सम्बोधित किया—“मेरे प्यारे भाइयो, बाहनों और कल के बहादुरों। आज की सभा का मकसद आप लोगों को अच्छी तरह से मालूम ही है। इसके प्रथम कि मैं वक्ताओं को बोलने के लिए आमन्त्रित करूँ—दो शब्द आज के कार्यक्रम के बारे में भी बता दूँ”

डाक्टर रमेश ने अपना सम्पूर्ण जीवन आप लोगों की सेवा के अर्पित कर दिया है। ये आपकी सेवा किस प्रकार से करेंगे—इसकी पूरी योजना इन्होंने तैयार करली है। यदि आप लोगों की पूरी पूरी मदद मिली तो—मुझे पूर्ण विश्वास है कि डाक्टर एक दिन अपने उद्देश्य से सफल होकर ही रहेंगे। डाक्टर के साथ चार और बड़ी-बड़ी शक्तियाँ हैं—जो उनके काम में हाथ बढ़ायेंगी।

डाक्टर, गाँव-गाँव घूमकर किसानों में एकता स्थापित करके उनमें जागृति की भावना भरेंगे। नयनतारादेवी गाँव गाँव घूम

कर स्त्रियों में जित्ता का प्रचार करके जागृति उत्पन्न करेंगी। इसके लिए 'जन सेवा सघ' की ओर से रात्रि-पाठशालाएँ खोलने की तजवीज भी की जा रही है—जिनसे अपढ़ आदमी और युवक भी लाभ उठा सकेंगे। इस काम में मनसुखरामजी का भी हाथ रहेगा जो गाव-गाँव घूम कर चलते फिरते वाचनालय का प्रवन्ध करेंगे। तथा बड़ी उम्र के आदमियों और बच्चों के लिए अलग पाठशालाओं का प्रवन्ध भी करेंगे। मनसुखरामजी का जीवन सदा ही अन्याय से लड़ते बीता है। अतः ये अन्यायियों और अत्याचारियों को ठीक मार्ग पर लाने का काम करेंगे। हमारे काशी काका से कौन अपरिचित होगा? इनका जीवन सदा आप लोगों की सेवा में ही बीता है। मे, सब से पहले काशी काका से प्रार्थना करूंगा कि वे हमें अपनी अमृत्य चाणी से उत्साहित करें। काशी काका उ्योंही बोलने के लिये उठे—हजारों तालियों की गड़गड़ाहट ने उनका स्वागत किया।

काका ने कहना शुरू किया—“मेरे प्यार किसान भाइयो, और बहिनो मैं अपने क्रियात्मक कार्यक्रम के बारे में पूरी तौर से बताऊँ उसके पहले जो दो शब्द कहना चाहता हूँ, वह हैं—”

एक ओर से आवाज आई “हो न्हो बेटा ग्लूस्ट!” और साथ ही मुनाई भी सभा के दो चार कोनों से भही-सी सीटियों की आवाज। किसानों ने देखा उनके बीच में कुछ विचित्र ढंग के आदमी बैठे हुए थे। उनके पास तहर-तरह के घातक हथियार थे।

इसका विचार न करते हुए काका ने कहना जारी रखा — “हमारा देश किसानों का देश है—इसलिए इस देश पर किसानों का ही राज होना चाहिए। लेकिन बात उल्टी है—देश पर पूँजी पतियों की सत्ता राज्य कर रही है—यह हमारे लिए कलंक की बात है।” फिर एक आवाज आई—“तो इब क्यों नहीं मरते चुल्लू भर पानी में ?” और उसके बाद पुन पाँच दस कर्कश सीटियों की आवाज़ें सुनाई दीं।

काका ने कहना बन्द नहीं किया, बोले—“यही तो मैं कह रहा हूँ। यदि इस देश के किसान और श्रमिक मिल कर अपनी सत्ता कायम नहीं कर सकते तो उन्हें डूबकर मर ही जाना चाहिए।” इस पर गन्दी-गन्दी आवाज़ें और कान फोड़ देने वाली सीटियों की चित्कारें फिर सुनाई दीं। कुछ लोगों ने इस बार ही ही-ही और हो-हो हो करके सभा में गड़बड़ी पैदा करने का प्रयत्न भी किया। इस पर किसानों में से कुछ आदमियों ने कहा—“सुनने दो, हमें सुनने दो, जो लोग सुनना नहीं चाहते वे सभा से उठकर चले जायें।”

काका ने सभा से शान्त रहने की प्रार्थना करके कहा—‘भाइयो, यह परीक्षा का समय है। देखता हूँ कि कुछ बनाए हुए उपद्रवी लोग यहाँ मौजूद हैं—और इस सभा को असफल करने की चेष्टा में हुल्लड़ मचा रहे हैं—किसान भाइयो, सावधान, हम अहिंसा से काम लेना है। अहिंसा बहुत बड़ा शस्त्र है। इसके सामने शत्रु नाम की कोई वस्तु ठहर ही नहीं सकती।

जिस पर इस अहिंसा नाम के शस्त्र से प्रहार किया जाता है, वह शत्रु, से मित्र हो जाता है। जरूरत है - इस शस्त्र के सही उप-योग करने वाले की।" एक कोने से फिर आवाज आई—
 "अहिंसा का गीत तो गायेगा ही, इस जुड़ूँ में अब ताकत ही धर्ना, जो ईंट का जवाब पत्थर से देने की बात कहे।" इस पर काका ने जोर से कहा—“यही तो मैं कह रहा हूँ—मुझमें ही क्या ? हम में से जितने यहाँ पर बैठे हुए हैं, उनमें किसी में भी ईंट का जवाब पत्थर से देने की ताकत नहीं है। धर्ना यह देश आज तक गुलामी की जजीरों में जकड़ा हुआ क्यों होता ? ”
 इसके बाद काका ने बोलने के लिए ज्यों ही मुँह खोला कि एक फटा हुआ जूता आकर उनके सिर में लगा। इसके बाद कई धीरे फिर प्लेट फार्म पर आने लग पत्थर। किसानों का बैंगन छूट गया। ज़िर से ककड़-पत्थर आ रहे थे, उधर लाठियाँ चल गईं। बड़ा भारी हगामा मच गया। स्त्रियाँ और बच्चे भीड़ से निकल कर जिवर राह मिली, भागने लगे। चारों ओर से मारो-मारो की आवाज आने लगी। कुछ अत्यन्त बूढ़े और मयूर लोग सोंपने लगे। संकड़ी लाठियाँ बज उठीं। गडगड़ करने वाले चुगी तरह से पिटने लगे। इतने ही में भीड़ में एक बड़ी भारी भगदड़ मच गई। भीड़ पर ठाकुर के घुड़सवार अवाधुन्ध पोंडों को दौड़ाकर सडासड़ कोड़े बरसा रहे थे। तनसुरा और मनसुरा उप-द्रव को शांत करने के लिए भीड़ में घुस पड़े। एक घुड़सवार ने मौका पाकर मनसुरा पर अपना घोड़ा छोड़ दिया। असाधान मनसुरा

सम्भल नहीं सका—और उसकी छाती पर घोड़ा पैर देकर निकल गया। उधर निहत्थे तनमुखा पर बेशुमार चाबुक और लाठियों बरसने लगीं। रमेश से यह देखा नहीं गया। वह ज्यों ही प्लेट-फार्म से कूदने लगा कि नैना ने उसका हाथ कस कर पकड़ लिया। बीमारी और श्रम के कारण रमेश अत्यधिक अशक्त हो गया था। वह नैना से अपना हाथ नहीं छुड़वा सका। लाचार होकर वह नैना से बोला—“मामी। जाने दो, मुझे जाने दो। गेको मत मामी, इस अजनता को मिटाने वाले यज्ञ में मेरी भी आहुति हो लेने दो। देग्नो न, कितने ही बैकसूर यों ही मारे जा रहे हैं।” इतना कह कर उसने ज्यों ही नैना की ओर देखने के लिए पीछे मुड़ कर नृष्टि डाली तो देखा कि भीमकाय ठाकुर विजय शमशेर लम्बी-लम्बी मूँछों के भीतर से एक कुटिल हास्य बिखेर रहे थे। सुवीर और काका बुरी तरह से रस्तियों से कस कर बंधे हुए थे। रमेश नैना की रक्षा के लिए उसकी ओर बढ़ आया। उसने ठाकुर से कहा—“ठाकुर साहेब। क्या आप गरीब किसानों के दुखड़े नहीं सुनना चाहते?”

ठाकुर ने पहले मूँछों पर ताव दिया—फिर एक कुटिल हँसी हँसकर बोले—“नहीं दुखड़े-उखड़े कुछ नहीं। इस समय इस गोरे मुख से कुछ सुनना चाहता हूँ। तुम्हारी बातें सुनने की मुझे फुरसत नहीं।” इतना कहकर ठाकुर ने नैना का हाथ अपने हाथ में कसकर पकड़ लिया। फिर बोले—“तुम यहाँ, इन कैंगलों के बीच क्या करती हो? छोड़ो यह नादानी,

छी छी राजमहलों की शोभा बढ़ाने लायक तुम—यहाँ ? इन फूस की भोपड़ियों में । इतना गरूर अच्छा नहीं । राजमहलों के भोग विलास का इतना भयकर अपमान मैं कभी सहन नहीं कर सकता, समझी । मैं यह कभी नहीं होने दूँगा । तुम्हें मेरे साथ चलना होगा । एक मिनिट भी तुम्हें यहाँ नहीं ठहरना चाहिए । चलो—आओ । आओ मेरे राजमहल की शोभा, आओ ।” इतना कहकर ठाकुर ने ज्योंही नैना का फिर हाथ खींचना चाहा कि नैना के हाथ के जो तमाचे तडातड पड़े तो ठाकुर के होश ठिकाने आ गए ।

ठाकुर की आँखों से खून परसने लगा । एक स्त्री सत्ताधारी ठाकुर पर उसकी प्रजा के सामने हाथ उठाए । कैसे घोर अपमान की बात । बदला—सम्पूर्ण बदला—और ठाकुर ने नैना को खींचकर जो सड़ार से चातुक मारना चाहा कि उनका हाथ वहीं का वहीं रुक गया ।

ठाकुर की गर्दन पर पड़ती हुई एक भारी तलवार को भटके से रोकती हुई नैना बोली ‘सब्र से काम लो जग्गू । काशी काका ने क्या कहा था हमें अहिंसा की लड़ाई लड़नी है । किसी को जान से तो मारना ही नहीं चाहिए । फिर यह तो हमारे गाँव के मालिक ठाकुर साहेब हैं ।’

जग्गू ने कहा—“माँ । और चाहे जो कुछ हो, लेकिन मर्द-स्त्री पर हाथ उठाए, उसे बेइज्जत करे, यह मैं कभी नहीं देख सकता । माँ-जात की रक्षा करना हर आदमी का धर्म है—मैं उस

“वज्र-ग्रन्थावली”

(ले० श्री ऋषभचरण जैन)

- | | |
|---------------------|---------------|
| १ - दुराचार के अष्ट | ६ - नरुधाम |
| २ - दिल्ली का कलक | ७ - चौदनी रात |
| ३ - मयराणा | ८ - चम्पाकली |
| ४ - बुर्दाफरोश | ९ - तीन दूक |
| ५ - हर हाइनेस | १० - हत्यारा |

हिन्दी के ललित साहित्य में “वज्रग्रन्थावली” का स्थान बहुत ऊँचा है। इन पुस्तकों के कई-कई संस्करण हाथों हाथ निकल चुके हैं। जनता के भारी आग्रह पर अब फिर नये संस्करण तैयार हो रहे हैं। दुराचार के अष्ट छप कर तैयार है। मूल्य प्रत्येक का १) प्रति जो सज्जन इस माला की सब पुस्तकें लेना चाहें उनका नाम दर्ज कर लिया जाता है। छपने पर पुस्तक बी० पी० से भेज दी जाती है। प्रवेश फीस ८) ली जाती है, कमीशन एक चौथाई दिया जाता है।

हमारा नया प्रकाशन

- १ - मानव धर्म प्रचारक-राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अशोक, ईसा, मुहम्मद, कबीर, नानक, दयानन्द, रामकृष्ण, विवेकानन्द, गमतीर्थ और गांधी। (ले० जगतकुमार शास्त्री) सजिल्द ४) रु०
- २ - शिवावावनी (सटीक राज संस्करण) १) प्रति
- ३ - अग्वण्ड भारत (ले० चन्द्रगुप्त वेदालंकार) ॥) प्रति
- ४ - वैदिक युद्धवाद (ले० जगतकुमार शास्त्री) १) प्रति
- डाक व्यय पृथक।

साहित्य-मण्डल, दावानहाल, देहली।

आकर्षक

डिजाईन

और

बढ़िया

ब्लॉक

के लिए हमारी सेवाएँ

स्वीकृति कीजिए

दुरंगे और तिरंगे

ब्लॉक हमारी विशेषताएँ हैं ।

दिगम्बर आर्ट काटेज

धर्मपुरा, देहली ।

सुप्रीम फिल्मस चाँदनी-चौक, दिल्ली लाहौर

१-अरेवियन नाईट्स-एक रोमांचकारी चित्र
भूमिका में कानन देवी, नवाब, हीरालाल,
मोलिना, देवी, सुन्दर-आदि ।

२-रूपा-एक सामाजिक चित्र
पात्र-रतनमाला, उमिला, सुरेखा,
विमन वनर्जी, आगा जान ।

३-ब्राह्मण कन्या-एक सामाजिक चित्र
कलाकार-धनमाला, कुमार, नन्देकर
उर्मिला, शान्ता पटेल-आदि ।

४-मजदूर-श्रमिकों की कष्ट कहानी
पात्र-इन्दुमती, वीरा, नसोर खान ।

५-मेघदूत-महाकवि कालीदास के
नाटक पर आधारित
कलाकार-लीला देसाई, साहू मोदक,
आगाजान, वास्ती-आदि ।

६-पनिहारी-सामाजिक चित्र
पात्र-शान्ता आपटे, सुरेन्द्र, याकूब ।

७-देवकन्या-एक पौराणिक चित्र
पात्र-लीला देसाई, लीला चिटनीस
उल्हास, वास्ती-आदि ।

८-बहू-बेटियाँ-एक सामाजिक चित्र
पात्र-निर्मला, याकूब, करण दीवान-आदि ।

